यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं —

१ कळायण, ऋतु काव्य । ले. श्री नानूराम संस्कर्ता ।
२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले. श्री श्रीलाल जोशी ।
३ बरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह । ले. श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३-४ 'डा. लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८ पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा. दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५ लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत घूमर के लोकगीत बाल लोकगीत लोरियां और लगभग ७ लोक कथायें संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक बृहद् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जसवंत उद्योत मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२ जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४ रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १ शिलालेखों और भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५ इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा. लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध लेख कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा. वासुदेवशरण अग्रवाल, डा. कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा. जी. रामचन्द्रन्, डा. सत्यप्रकाश, डा. डब्लू. एलेन, डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा. तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम ए विशारद और पं श्रीलालजी मिश्र एम ए हूंडलोद, थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वानों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्य कराना संस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु १५) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु ३०) तीस हजार की सहायता राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ११ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१	राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२	राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा. शिवस्वरूप शर्मा अचल
३	अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४	हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५	*पदमिनी चरित्र चौपई*—	"
६	दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७	डिंगल गीत—	" "
८	पंवार वंश दर्पण—	डा. दशरथ शर्मा
९	पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०	हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११	पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२	महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३	सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४	जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५	सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो. मंजुलाल मजूमदार
१६	जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७	विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	" "
१८	कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९	राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०	वीर रस रा दूहा—	" "
२१	राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२	राजस्थानी व्रत कथाएं—	" "
२३	राजस्थानी प्रेम कथाएं—	"
२४	चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. मढुली— श्री अगरचंद नाहटा और म॰ विनय सागर

२६ जिनहर्ष ग्रंथावली — श्री अगरचंद नाहटा

२७ राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण ,, ,,

२८ दम्पति विनोद ,

२९ हीयाली—राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य

३० समयसुन्दर रासत्रय — श्री भंवरलाल नाहटा

३१ दुरसा आढा ग्रंथावली — श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा. डा. दशरथ शर्मा) ईसरदास ग्रंथावली (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (प्रो. गोवर्द्धन शर्मा) राजस्थानी जैन साहित्य (ले. श्री अगरचंद नाहटा) नागदमण (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस बृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

थनको राजिमती रहनेमि सज्झाय को सन् १९०६ता १३ जन में आगरा से प्रकाशित होनेवाले श्वेताम्बर जन वष ४ अंक २६ में प्रकाशित किया गया उसके बाद खरतर गच्छ के वृहद् ज्ञान भण्डार का अवलोकन करते हुए महिमाभक्ति भण्डार के बं० नं १७ में विनयचन्द्रजी की चौबीसी बीसी, सज्झायादि की ३१ पत्रों की संग्रहप्रति प्राप्त हुई और जैन गुर्जर कविओ दूसरा भाग सन् १९३१ में प्रकाशित हुआ उसमें आपके रचित उत्तम कुमार चरित्ररास ध्यानामृतरास मयणरेहा रास ११ अंग सज्झाय शत्रुंजय तीर्थयात्रा स्तवन का उल्लेख प्रकाशित हुआ था। हमने आपकी प्राप्त समस्त रचनाओं की सूची देते हुए कविवर विनयचन्द्र नामक लेख प्रकाशित किया जिसमें नेमिराजुल बारहमासा भी दिया था। कवि की रचनाओं की संग्रह प्रति से तभी हमने प्रेस कापी तैयार कर रख दी थी जिसे प्रकाशित करने का सुयोग अब प्राप्त हुआ है।

गुरु परम्परा—

खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में सुगल सम्राट अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध और प्रभावक आचार्य हुए हैं। उनके प्रथम शिष्य सकलचन्द्र गणि के शिष्य अष्टलक्षी कर्ता महोपाध्याय समयसुन्दरजी की विशद् परम्परा में कविवर विनयचन्द्र हुए हैं। कविवर स्वयं उत्तमकुमार चरित्र चौपई में अपनी गुरु परम्परा का परिचय देते हुए लिखते हैं कि महोपाध्याय समयसुन्दरजी भारी प्रकाण्ड विद्वान थे जैसे—

ज्ञानपयोधि प्रबोधवा रे, अभिनव ससिहर प्राय, सु०
कुमुदचन्द्र उपमा वहे रे समयसुन्दर कविराय, ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार, सु०
मति कर्णिकिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार; ६ सु०

इनके शिष्य विद्यानिधि वाचक मेघविजय हुए। जिनके शिष्य हर्षकुशल भी अच्छे विद्वान थे जिन्होंने विहरमान बीसी का रचना करने के अतिरिक्त महोपाध्याय समयसुन्दरजी को मन्थरचना में भी सहाय्य किया था। इनके शिष्य व० हर्षनिधान हुए जिनकी चरणपादुकाएं सं० १७३७ मिति आषाढ़ सुदि ८ के दिन शिष्य वा० हर्षसागर द्वारा प्रतिष्ठित बीकानेर रेल दादाजी में विराजमान हैं। हर्षनिधानजी के लिए कविवर ने लिखा है कि ये अध्यात्म-योगी थे, यत:—

"परम अध्यातम धारवा रे श्री यागेन्द्र समान।

इनके तीन शिष्य थे प्रथम वा० हर्षसागर द्वारा सं० १७२६ का क ६ को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लाइब्रेरी बीकानेर) प्राप्त है। इनकी चरणपादुकाएँ भी सं० १७ ४ बै सु० ८ सोम के दिन प्रतिष्ठित बीकानेर के रेल दादाजी में हैं। इनके नयणसी व प्रतापसी नामक दो शिष्य थे। हर्षनिधानजी के द्वितीय शिष्य ज्ञानतिलक व तीसरे पुण्यतिलक थे ये तीनों साहित्यादि ग्रंथों के विद्वान थे। ज्ञानतिलक रचित ३४ स्तोत्र व फुटकर संग्रह का गुटका विनयसागरजी के संग्रह में है। कविवर विनयचन्द्र इन्हीं ज्ञानतिलकजी के शिष्य थे। सं १७३६ मिती

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व. पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजांची ग्रन्थालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविन्द व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वापि भवत्येव प्रमादतः हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः माँ भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

लालचन्द कोठारी
प्रकाशन-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर १९६०

श्रीमान फतेलालजी श्रीचन्दजी गोलेछा
जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

कविवर विनयचन्द्र और उनका साहित्य

संसार में दो तरह के प्राणी जन्म लेते हैं। कुछ जन्मजात प्रतिभासम्पन्न होते हैं और कुछ परिश्रमपूर्वक प्रतिभा का विकास करते हैं। साहित्यकारों में भी हम उभय प्रकार के व्यक्ति पाते हैं। कई कवियों की कविता में स्वाभाविक प्रवाह होता है शब्दावली अपने आप उनकी कविता में रत्नों की भाँति आकर ग्रथित हो जाती है जो पाठकों को मुग्ध कर लेती है। कई कवियों की रचनाएं शब्दों को कठिनता से बटोर कर सजाई की हुई प्रतीत होती है। सुकवि विनयचन्द्र प्रथम श्रेणी के प्रतिभासम्पन्न कवि थे जिनकी उपलब्ध रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित किया जा रहा है।

पन्द्रह वर्ष पूर्व राजस्थान के महाकवि समयसुन्दर की रचनाओं का अनुसंधान करते हुए बीकानेर के श्री महावीर जैन मण्डल में सं० १८०४ का लिखा हुआ एक गुटका प्राप्त हुआ जिसमें समयसुन्दरजी की अनेक फुटकर रचनाओं के साथ साथ उनकी परम्परा के कुछ कवियों की भी रचनाएं मिली। सुकवि विनयचन्द्र महो० समयसुन्दरजी की परम्परा में ही थे और उस गुटके के लिखनेवाले भी उसी परम्परा के थे अतः विनयचन्द्र की भी ४ रचनाएं इस प्रति में प्राप्त हुई जिनमें से नमिराजुल बारहमासा और राजिमतीरहनेमि सम्बन्ध नामक उत्कृष्ट रचनाओं ने हमें इस कवि के प्रति विशेष आकृष्ट किया

उनकी राजिमती रहनेमि सज्झाय को सन् १६२६ता १३ जून में आगरा से प्रकाशित होनेवाले श्वेताम्बर जैन पत्र ४ अंक २८ में प्रकाशित किया गया उसके बाद खरतर गच्छ के वृहद् ज्ञान भण्डार का अवलोकन करते हुए महिमाभक्ति भण्डार के बं० नं ३७ में विनयचन्द्रजी की चौवीसी बीसी, सज्झायादि की ३१ पत्रों की संग्रहप्रति प्राप्त हुई और जैन गुर्जर कविओ दूसरा भाग सन् १६३१ में प्रकाशित हुआ उसमें आपके रचित उत्तम कुमार चरित्ररास ध्यानामृतरास मयणरेहा रास ११ अंग सज्झाय शत्रुंजय तीर्थयात्रा स्तवन का उल्लेख प्रकाशित हुआ था। हमने आपको प्राप्त समस्त रचनाओं की सूची देते हुए कविवर विनयचन्द्र नामक लेख प्रकाशित किया जिसमें नेमिराजुल बारहमासा भी दिया था। कवि की रचनाओं की संग्रह प्रति से तभी हमने प्रेस कापी तैयार कर रख दी थी जिसे प्रकाशित करने का सुयोग अब प्राप्त हुआ है।

गुरु परम्परा—

खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में मुगल सम्राट अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध और प्रभावक आचार्य हुए हैं। उनके प्रथम शिष्य सकलचन्द्र गणि के शिष्य अष्टलक्षी कर्त्ता महोपाध्याय समयसुन्दरजी की विशद् परम्परा में कविवर विनयचन्द्र हुए हैं। कविवर स्वयं उत्तमकुमार चरित्र चौपई में अपनी गुरु परम्परा का परिचय देते हुए लिखते हैं कि महोपाध्याय समयसुन्दरजी भारी प्रकाण्ड विद्वान थे जैसे—

ज्ञानपयोधि प्रबोधवा रे, अभिनव ससिहर प्राय , सु०
कुमुदचन्द्र उपमा वहै रे, समयसुन्दर कविराय , ८ सु
सत्पर शास्त्र समर्थिवा रे सार अनेक विचार , सु०
वकि कमिविका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ; ६ सु०

इनके शिष्य विद्यानिधि वाचक मेघविजय हुए। जिनके शिष्य हर्षकुशल भी अच्छे विद्वान थे जिन्होंने विहरमान बीसी का रचना करने के अतिरिक्त महोपाध्याय समयसुन्दरजी को ग्रन्थरचना में भी साहाय्य किया था। इनके शिष्य व हर्षनिधान हुए जिनकी चरणपादुकाएं सं० १७६७ मिति आषाढ़ सुदि ८ के दिन शिष्य वा० हर्षसागर द्वारा प्रतिष्ठित बीकानेर रेल दादाजी में विराजमान है। हर्षनिधानजी के लिए कविवर ने लिखा है कि ये अध्यात्म-योगी थे, यत —

'परम अध्यातम धारवा रे जो योगेन्द्र समाम।

इनके तीन शिष्य थे प्रथम वा० हर्षसागर द्वारा स० १७२६ का० कृ ६ को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लाइब्रेरी बीकानेर) प्राप्त है। इनकी चरणपादुकाएँ भी स० १७ ४ वै० सु ८ सोम के दिन प्रतिष्ठित बीकानेर के रेल दादाजी में है। इनके नयणसी व प्रतापसी नामक दो शिष्य थे। हर्षनिधानजी के द्वितीय शिष्य ज्ञानतिलक व तीसरे पुण्यतिलक थे ये तीनों साहित्यादि ग्रंथों के विद्वान थे। ज्ञानतिलक रचित ३ ४ स्तोत्र व पुष्कर संग्रह का गुटका विनयसागरजी के संग्रह में है। कविवर विनयचन्द्र इन्हीं ज्ञानतिलकजी के शिष्य थे। सं० १७११ मिती

वैशाख सुदी १४ को बीकानेर में साध्वी हर्षमाला के लिए प्रतिलिपि की हुई एकादशांग स्वाध्याय की प्रशस्ति इसी ग्रन्थ के पृ ६८ में प्रकाशित है।

हर्षनिधानजी के तृतीय शिष्य पुण्यतिलक थे जिनके शिष्य महोपाध्याय पुण्यचन्द्र हुए। इनके शिष्य पुण्यविलासजी ने अपने शिष्य पुण्यशील के आग्रह से सं० १७८० में मानतुंग मानवती रास (ढाल ५० गाथा १४४७) लूणकरणसर में निर्माण किया जिसकी दो प्रतियां ज्ञानभवन जयपुर में है। पुण्यविलासजी के दूसरे शिष्य मानचन्द्र थे। नन्दीपत्रानुसार इनकी दीक्षा सं० १७७४ को पत्तन में हुई थी इसमें पं० माना व पुण्यशील लिखा है अतः पुण्यशील और माना एक ही व्यक्ति प्रतीत होते है। सं १८०४ वाला उपर्युक्त गुटका इन्हीं मानचन्द्र द्वारा लिखा हुआ है जिसमें कविवर समयसुन्दरजी की कृतियाँ और जिनचन्द्रजी की चार कृतियाँ लिखी हुई है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—'सम्वत् १८ ४ वर्षे मिति माह वदि १ तिथौ मंगल युगप्रधान पूज्य भट्टारक श्रीमच्छ्री जिनचन्द्रसूरी श्वराणां शिष्य मुख्य पंडितोत्तम प्रवर सकलचन्द्रजी गणि शिष्य महोपाध्याय श्री ५। श्री समयसुन्दरजी गणि। शिष्य मेघ विजयजी गणि। वाचकोत्तम वर हर्षकुशलजी गणि। पाठकोत्तम हर्षनिधानजी शिष्य दक्ष पुण्यतिलकजी गणि। महोपाध्याय श्री

१—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक १ ८ ।
२—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक १ ५१।

५ श्री पुण्यचन्द्रजी गणि तच्छिष्य पंडितोत्तमप्रवर श्री पुण्य विलासजी गणि। तदंतेवासी पंडित मानचन्द्र लिखित॥ श्री मरोट मध्ये॥ सुश्रावक पुण्यप्रभावक मुहता दुलीचन्दजी तत्पुत्र जैतसीजी तत्पुत्र सुखानन्द पठन हेतवे। आचन्द्रार्कों यावत् चिरनन्दतु।

जन्म—

कविवर का जन्म कब और किस प्रान्त में हुआ यह जानने के लिए अभी तक कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है पर गुज रात में रह कर हिन्दी रचना व राजस्थानी शब्द प्रयोग देखते हुए प्रतीत होता है कि इनका जन्म राजस्थान में ही हुआ होगा। आपने अपनी रचनाओं में दिन राजस्थानी लोक गीतों को देसियां प्रयुक्त की हैं यह भी हमारी धारणा को पुष्ट करने वाली हैं। आपके हृदय के श्रृंगार भक्ति आदि देखते यह निश्चित है कि आपने जैन कुल में जन्म लिया था। आपकी प्रथम रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपाई सं० १७५२ में पाटण में हुई है उस समय आपका ज्ञान और योग्यता देखते कम से कम २५ वर्ष की अवस्था होनी चाहिए तो अनुमान किया जा सकता है कि आपका जन्म लगभग १७२५ से १७३० के बीच में हुआ होगा।

दीक्षा—

दीक्षाकाल जानने के लिए सब से सुगम साधन श्रीपूज्यों के दफ्तर और नन्दी अनुक्रम सूची है। उसके अभाव में हमें

अनुमान के आधार पर ही चलना होगा। अतः आपने लगभग १५ वर्ष की आयु में दीक्षा ली हो तो सं० १६४०-४५ के बीच में दीक्षाकाल होना चाहिए।

विद्याध्ययन—

दीक्षा लेने के अनन्तर आपने विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। आपकी गुरु परम्परा में साहित्य जैनागम और भाषाशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान होते आये हैं। त्याग वैराग्यपूर्ण श्रमण संस्कृति का मुख्य आधार आचारशास्त्र और अध्यात्म था। आपने अपने गीतार्थ गुरुओं की निश्रा में रह कर पूर्ण मनोयोग पूर्वक विद्याध्ययन किया था कि आपकी कृतियों से भली भाँति प्रमाणित है। इनकी भाषा कृतियों में संस्कृत शब्दों का प्राधान्य है इससे विदित होता है कि संस्कृत भाषा एवं काव्य ग्रन्थादि का आपने सुचारु रूप से अध्ययन किया था।

विहार और रचनाएँ—

आपका विहार कहाँ-कहाँ हुआ यह जानने के लिए हमारे पास आपकी कृतियों के सिवा कोई साधन नहीं है। आपकी संवतोल्लेख वाली प्रथम बड़ी रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपई है जो सं० १६५२ मिती फागुन सुदि ५ गुरुवार के दिन पाटण में विरचित है। इससे ज्ञात होता है कि आप अपने गुरुजनों के साथ राजस्थान से तत्कालीन आचार्य श्री जिनचंद्रसूरिजी के आदेश से गुजरात पधारे थे। इन श्री जिनचंद्रसूरि जी की

गहूँली इसी ग्रन्थ के पृ ८४ में प्रकाशित है जिसमें आपने आचार्य श्री जिनधर्मसूरि के पट्ट पर श्रीजिनचन्द्रसूरि के पाट बिराजने का उल्लेख किया है। यह पट्ट महोत्सव बीकानेर के लूणकरणसर में हुआ था अतः इसके बाद आचार्य श्री ने आपके गुरु महाराज को गुजरात में विचरने का आदेश दिया प्रतीत होता है। इस लघु रचना में अपने को कवि ने मुनि जिनचन्द्र लिखा है इसके बाद आपने लघु कृतियां अवश्य ही बनाई होंगी क्योंकि अतमकुमार चरित्र में आपने अपने को कई जगह कवि' विशेषण से सम्बोधित किया है। पाटण में रहते आपने वाड़ी पार्श्व स्त० व नारंगपुर पार्श्व स्तवनादि की रचना की। इसके बाद स १७५८ का चातुर्मास आपने राजनगर किया और विजयादशमी के दिन विहरमान बीसी रचकर पूर्ण की। दूसरा चातुर्मास भी आपने राजनगर में ही बिताया था स्थूलिभद्र बारहमासा गा ११ की रचना राजनगर में हुई। सं० १७५८ मा० व० १ को राजनगर (अहमदाबाद) में ११ अंग सज्झायों की रचना एव विजयादशमी के दिन चौबीसी की रचना पूर्ण की। इस चातुर्मास के पश्चात् आपने आचार्य श्री जिनचन्द्र सूरिजी एवं अपने दादा गुरु श्री हर्षनिधान पाठक व गुरु ज्ञान तिलकादि गुरुजनों के साथ सपरिवार मिती पोषवदी १० के दिन शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा की जिसका उल्लेख आपने इसी ग्रन्थ के पृ ८ में प्रकाशित शत्रुंजय यात्रा स्त० गा २१ में किया है एक और गा० १३ का स्तवन पृ ४५ में प्रकाशित है।

इसके अतिरिक्त संखेश्वर पार्श्वनाथ स्त० गा० ११ का पृ० ६४ में छपा है पर आपने यह यात्रा कब की इसका कोई उल्लेख नहीं। इसके पश्चात् आपने कब कहाँ चातुर्मास किये इसका कोई पता नहीं चलता अब तक जो रचनाएँ मिली हैं वे सं० १७५२ से १७५५ तक की हैं। इसके पश्चात की कोई संवतोल्लेख वाली रचना नहीं मिलने से ठीक ठीक पता नहीं लगता कि आप कब तक विद्यमान रहे पर दीक्षानंदि पत्र में आपके शिष्य विनय मंदिर की दीक्षा सं० १७६६ ज्येष्ठ वदि ५ को बीकानेर में हुई थी लिखा है उस समय तक आप अवश्य ही विद्यमान थे। इन वर्षों में आपने ग्रंथ रचना अवश्य ही की होगी। पर किसी ज्ञान भंडार या उनकी परम्परा के किसी विद्वान के पास रही कहीं मिल जाय तो आपकी रचनाओं व जीवनी पर विशेष प्रकाश पड़ सकता है। तीन वर्ष जैसे अल्पकाल की रचनाओं से विदित होता है कि आप उच्च कोटि के कवि थे। एवं और भी बहुतसी रचनाओं का निर्माण किया होगा। इस ग्रन्थ में प्रकाशित प्रधान रचनाएँ इस प्रकार हैं —

१—ध्वमकुमार चरित्र चौपई ढाल ४२ गाथा ८४८ स० १७५२
फा० सु ५ गु पाटण

२—विहरमान बीसी स्तवन स्त २ कलश २ स० १७५४
विजयादशमी राजनगर

३—११ अंग सज्झाय स० १२ सं० १७५५
मा० वदी १० राजनगर

४—चतुर्विंशतिका स्त० २४ कम्रा १ सं० १७८६ विजयादशमी रामनगर

५—शत्रुजय यात्रा स्त० गाथा २१ सं० १७८६ पौष वदी १० यात्रा

६—फुटकर स्तवन सज्झाय बारहमासा गीत आदि २५ कृतियाँ

इनके अतिरिक्त जैन गुर्जर कविओ भाग २ पृष्ठ ५२३ में :—

१—ध्यानामृत रास । २—मयणरेहा चौपाई ।

एवं जैन गुर्जर कविओ भाग ३ पृ. ११५८ में—

३—राहा कथा चौपई का उल्लेख किया है। श्री देसाई ने प्रथम दो रचनाओं का न तो रचनाकाल व आदि अन्त दिया है और न प्राप्तिस्थान ही दिया है। विनयचन्द्र नाम के कई कवि हो गए हैं अतः ये रचना इन्हीं कविवर की हैं या और किसी विनयचन्द्र की नहीं कहा जा सकता। फिर भी मयणरेहा चौपाई व राहा कथा चौ० की प्रतियाँ हमारे (श्री अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर) संग्रह में हैं उनमें से मयणरेहा चौपाई का रचना काल सं० १८७० एवं रचनास्थान जयपुर है उसके रचयिता विनयचन्द्र स्थानकवासी अनोपचन्द के शिष्य हैं। राहा कथा चौपाई में विनयचन्द्र के गुरु का नाम रचनाकाल नहीं पाया जाता पर यह कृति भी स्थानकवासी विनयचन्द्र की ही लगती है। अतः तीन में से दो तो हमारे कविवर विनयचन्द्र से सौ सवा सौ वर्ष पश्चात् होनेवाले स्थानकवासी विनयचन्द्र की रचनाएँ सिद्ध हो जाती हैं केवल ध्यानामृतरास ही अनिश्चित अवस्था में रहता है सम्भव है यह हमारे कवि विनयचन्द्र

की रचना हो पर उसकी प्रति कहाँ पर है इसका निर्देश नहीं होने से हम उसे प्राप्त नहीं कर सके। उत्तमकुमार रास की भी प्रतियां अधिक नहीं मिलती। दो-तीन प्रतियों की ही सूचना मिली जिनमें से १ तिलकविजय भंडार महुआ २ चुन्नीजी भंडार, काशी का उल्लेख जैन गूर्जर कवियों में किया गया था। चुन्नी जी भडार की कुछ प्रतियाँ आगरा व कुछ प्रतियाँ रामघाट जैन मन्दिर के भडार बनारस में भेंट गई। हमने बनारस हीराचन्द्र सूरिजी को पत्र लिखा पर वहाँ की सूची में महाराजकुमार चौ का नाम होने से वे पता नहीं लगा सके अन्त में हमें स्वयं वहाँ जाना पड़ा और कठिनता से पता लगाकर प्रति प्राप्त की। प्रति का उपयोग करने का सुयोग भी हीराचन्द्रसूरिजी महाराज की कृपा से ही प्राप्त हो सका इसलिए उनके हम विशेष आभारी है। इसकी एक प्रति देहला के उपाश्रय अहमदाबाद स्थित राजविजय भडार में होने का उल्लेख जैन गूर्जर कविओ के दूसरे भाग में है जिसे प्राप्त करने के लिए पत्र व्यवहार किया पर सफलता नहीं मिली। यह चौपाई एक ही प्रति के आधार से सम्पादन की गई अत कई जगह पाठ त्रुटित रह गया है।

चौबीसी बीसी ११ अग सज्झाय आदि रचनाओं की एक प्रति पत्र ३१ की महिमाभक्ति ज्ञानभडार में मिली थी तद नन्तर आचार्य शाखा भण्डार से २ संग्रह प्रतियाँ व दो फुटकर पत्र प्राप्त हुए जिनमें से प्रथम प्रति २० पत्रों की कवि के गुरु भी ज्ञानतिलक द्वारा लिखित है इसमें बीसी चौबीसी, ११ अंग

सज्झाय व अन्य फुटकर रचनाएँ हैं जिसकी प्रशस्ति इसी पुस्तक के पृ० ६८ में दी गई है। दूसरी प्रति ७ पत्रों की है, जिसमें ११ अंग सज्झाय, दुर्गति निवारण सज्झाय व पार्श्वनाथ स्तवन है जिसकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है —

"संवत् १७१७ रा फागुन सुदि १० शनिवारे श्री जैसलमेर दुर्गे लिखितमस्ति श्राविका मूली बाई पठनार्थ ॥श्रीरस्तु॥"

एक फुटकर पत्र में नयविमल रचित शत्रुंजय के २ स्तवनों के बाद विनयचन्द्र रचित संभवनाथ स्तवन है। यह पत्र पुण्यचन्द्र ने सुश्राविका पुण्यप्रभाविका तत्त्वार्थ गुण श्राविका अम्मा वाचनार्थ लिखा है। अन्य फुटकर पत्र में कुगुरु स्वाध्याय गा० ३१ की है वह कवि के स्वयं लिखित पत्र विदित होता है क्योंकि इसमें ऊपर व किनारे में पाठवृद्धि व पाठान्तर भी लिखे हुए हैं सम्भवतः यह रचना का मसौदा या प्रथमादर्श होगा। और एक फुटकर पत्र में गौड़ीपार्श्व स्तवन और सूरप्रभ स्तवन मुनि हरिचन्द्र के श्राविका आसो पठनार्थ लिखित प्राप्त है। कुगुरु सज्झाय हमारा अनुमान है कि यदि कवि के स्वयं लिखित है तो उनके हस्ताक्षर बहुत सुन्दर थे और उसकी प्रतिकृति इस ग्रन्थ में भी दी जा रही है।

शिष्य परिवार—

कवि विनयचन्द्र के कितने शिष्य थे और उनकी परम्परा कब तक चली? साधनाभाव में यह बतलाना असम्भव है पर ज्ञानसागर कृत चौबीसी पत्र ७ की प्रशस्ति से मालूम होता है कि आपके एक शिष्य विनयमन्दिर और उनके शिष्य सुखलालचन्द्र

थे। नंदि अनुक्रम पत्र के अनुसार इन जिनधर्ममंदिर का पूर्वनाम धर्मीचंद था और सं० १७१६ मिती ज्येष्ठ वदि ६ को बीकानेर में दीक्षा हुई थी। इस प्रशस्ति में से विदित होता है कि कविवर के गुरु वाचनाचार्य एवं कवि स्वयं सं० १७४२ से पूर्व गणि पद विभूषित हो चुके थे। यहाँ उपर्युक्त प्रशस्ति की नकल दी जा रही है :—

"संवत् १७४२ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी १ रविवारे श्री राजनगरे वा० ज्ञानतिलक गणि शिष्य विनयचन्द्रगणि शिष्य जिनधर्ममंदिर शिष्य चिर सुखालचंद लिखितं ॥ साध्वी कीर्तिमाला शिष्यणी रूपमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥"

भक्ति व काव्य प्रतिभा—

कविवर का हृदय जिनेश्वर भगवान के भक्ति रस से ओत प्रोत था। चौबीसी बीसी एवं स्तवनादि में आपने बड़े ही मार्मिक उद्गार प्रगट किये हैं। आपने अपनी कृतियों में कहीं सरल भक्ति, कहीं उत्प्रेक्षाएँ और वक्रोक्तिपूर्ण उपालम्भ देते हुए विभिन्न रसों की भाव धारा प्रवाहित की है। भाषा प्रौढ़ और सटीक शब्दयोजना फबती हुई उपमाएँ पाठकों के मन को सहज ही आकृष्ट करने में समर्थ हैं। यहाँ कुछ थोड़े से अवतरण पाठकों के रसास्वादनार्थ उद्धृत किये जाते हैं।

"नयण नयण मिलावने रे जिन मुख रहीयइ जोय
तउ ही तृप्ति नहीं पामियइ रे, मनसा विरणी होय"

[सुपार्श्व स्त०]

जिम गोपी मन गोविन्द रे लाल गौरी मन शंकर वसइ
वलि जेम कुमुदिनी चन्द रे लाल [शांतिनाथ स्त०]

नइ अकृत्रिम नेह कियउ रे, कदे न विहडइ तेह
दिन दिन अधिकउ उल्लटइ रे, जिम आषाढ़ी मेह
[कुंथुनाथ स्त०]

श्री मुनिसुव्रत स्वामी के स्तवन में प्रभु को उपालम्भ देते हुए कवि कहता है कि—

हुं रागी पिण तु अछइ जी, नीरागी निरधार।
मांडे नहीं इक ध्यान मइ जी खीजी दोइ दरबार॥
जाणपणउ मइ जाणियउ जी जिनवर साहरउ आज।
तक ऊपर आण्यउ हतोजी तैं नवि राखी लाज॥
ज स्वामी तुम्ह सरिखाजी वछिस नापइ र अन्त।
मुझ सरिखा से लालचाजी जीधा विण न रहस॥

× × × ×

नेमजी हो सुगति रमणि मोह्या तुम्हे हो राजि
पिण तिण मां नहिं स्वाद।
नमजी हो तेह अनते मागवी हो राजि छाडउ छोकरवाद।
[नमिनाथ गीत पृ० ६]

कविवर ने उपमाओं एवं लोकोक्तियों को अपनी कृतियों में रचित करके उन्हें हृदयग्राही बना दिया है। यहाँ थोड़े से उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

"साकर मां कांकर निकसइ ते साकर नो नहिं वाक"
[विमलनाथ स्तवन]

वाल्हा लागौ हो नहिं उवेश काट पड़ जिम चीगटइ
वाल्हा तेतउ हो न्याय अमेस कर्म अरि क्यों किम कटइ
[धर्मनाथ स्त०]

हा रे लाल निज फल सरवर नवि भखइ
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल
पर उपगारइ थाय ते तु पिण जिनजी तुइ तेम रे लाल
[शांतिनाथ स्त०]

"कोइल ओवा गुण करै रे, पिण सु जाणे काग
मूरख पशु जाणे नहीं रे सेलड़ी चड़ब मिठास"
[कुंथुनाथ स्त०]

'मे लख नइ गुल सरिखा जाणइ ते स्युं नवल्हो नेह पिछाणइ"
(मल्लिनाथ स्त०)

"देख अधर मीठा मुखे हृदय कुटिल असमान
जाणि पयोमुख समझा ते विषकुम्भ समान"
(नमिनाथ स्त०)

'तरु मावइ तउ सइ इकठाई पिण अब नींब अधिकाई र
पंगत्री वावइ एकज हुआ पिण काग कोइल ते जूआ रे'
(सूरप्रभ स्तवन)

महिर विना साहिब किसउ हो सहिर बिना स्यउ वाय रे सनेही
महिर बिना स्यउ राजवी हो इम कहि मांहि कहाव रे सनेही
(संतेश्वर पार्श्व स्त० पृ ४५)

'गऊ हाथइ रे ताली नवि पड़इ र' (स्वामाविक पार्श्व स्त पृ० ७४)

जिम सौ तिम पचास' 'सौ यातें इक बात' (मांडी पार्श्व स्तवन पृ ७१)

जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय (पृ० १००) में वायस दुग्ध प्रक्षालन मुद्गशालिक घनवपन ऊपरभूमि बीजवपन बधिर प्रमाण कथन श्वान-पुच्छ जिम कांजीयइ दूध नदी किनारेवृक्ष आदि उपमाएँ दी गई हैं। स्वयं जिनेश्वर भगवान की अविद्यमानता में मुमुक्षुओं के लिए जिन प्रतिमा एक पुष्ट साधन है। कविवर जिन प्रतिमा को जिन सदृश उपकारी मानते थे और उसे अमान्य करनेवालों का प्रखरता के साथ निराकरण करने के हेतु इस ३६ गाथा की स्वाध्याय का निर्माण हुआ है। ध्यान के लिए जिन प्रतिमा की उपयोगिता बताते हुए कविवर निम्नोक्त भाव व्यक्त करते हैं :—

> जिन प्रतिमा निश्चयपणइ, सरस सुधारस वेलि
> चिंतामणि सुरतरु समी अथवा मोहनवेलि ६
> नेह विना सी प्रीतड़ी? कंठ विना स्यउ गान
> सूत्र विना सो रमवती प्रतिमा विण स्यउ ध्यान ७
> तीर्थंकर पिण का नहीं नहिं को अतिशयधार
> जिन प्रतिमा नउ इण अरइ एक परम आधार ६

कविवर विनयचन्द्र जैन शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान थे। इन्होंने ग्यारह अंग सज्झायों में प्रत्येक अंग—आगम का रहस्य बड़ी ही आकर्षक वाणी में श्रद्धा भक्तिपूर्वक व्यक्त किया है। इन सज्झायों का ज्ञान से जिनवाणी के प्रति आस्था प्रगाढ़ हो जाती

है और वाचक आपकी भुत श्रद्धा के प्रति पद-पद पर श्रद्धावनत हो जाता है। ग्यारह अंगों का परिचय प्राप्त करने के लिए तो ये सज्झाय बड़ी ही उपयोगी हैं। अन्तिम सज्झाय में कवि लिखता है कि—

'पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मंडप वेलि कि।
साधु नइ रसइ करी सहेली हे अनुभव रस नी रेलि कि ॥२॥
हेजभरो जे सभिलइ सहेली हे कुण पूछा कुण वाल कि।
तद ते फल सवे फूटरां सहेली हे, स्वादइ अतिहि रसाल कि ॥३॥

कविवर ने प्रकृति-सौन्दर्य को भी जिस सरसता से वर्णन किया है वह अपने ढंग का अनूठा है—श्रीरहनेमि राजीमति स्वाध्याय तथा श्री स्थूलिभद्र बारहमासा में छः ऋतुओं का वर्णन प्रकृति की सौन्दर्य सुषमा तथा जन-मन में उठता हुआ उल्लास नव रसों के प्रवाह का कवि ने जिस सजीवता से वर्णन किया है उसका रसास्वादन कराने के लिए कुछ पद्य यहाँ उद्धृत करते हैं —

रहनेमि राजिमती स्वाध्याय

वर्षा—

सखि बुदसारी इमकारी भूमि मारी देव।
झरलाय निर्मर झरत झरमर सजल जलद अछेव ॥
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये अर्जित गेह।
टव टवकि टबकत झबकि झबकत विविविधि बीजकि रेह ॥ २॥
मग स्याम बाहर देखि दादुर रटत रस भरि रइन।
वन-मोर बोलइ पिच्छ डोलइ फिरइ कोकइ पुनि नइन ॥ ३ ॥

कोक परि बिहु बोक करतो विरह कम्पणइ हुँ कली।
काढियइ तिहाँ थी बांह झाली कल्पणा रसनइ थटकली॥

रौद्र

अकुलाय परणि तरणि तरणी, किरण थी शोपत धरै।
रूपपति परइ घन कन्त असमु करी मन वेदन करै॥
तिम तुम्हे पणि विरह तापइ तापवउ प्रउ अतिघणुं।
चाँद्रणी शीतल झाल पावक, परइ कहि केतउ भणु॥

वीररस-कार्तिक

काती कौतुक मोभरइ वीर करइ समामो जी।
विकट कटक चाला पणु तिम कामी निज धामाजी॥
निज धाम कामी कामिनी ने लइइ वेधक नयण सुं।
रणतूर नेउर लहग वेणी, धनुप-रूपी नयण सुं॥

भयानक मगसिर

भयानक रसइ मेढियउ मगिसिर मास सनूरो जी।
मंगि सिरहि गोरी धरइ, वर अहणि मां सिन्दूरो जी॥
सिन्दूर पूरइ दर्प कोरइ मदन झाल अनल जिसी।
तिहाँ पड़इ कामी भर पतगा धरी रँगा धसमसी॥

अद्भुत हेमन्त व माघ

माघ निदाघ परइ हरै ए अद्भुत रस देखुं जी।
शीतल पणि अइना धणुं प्रीतम परतिख पेखुं जी॥

फाल्गुन

महुअ माथ सुगन्ध लेवई पिपरकी मम जल रसइं।
गुण राग रँग गुनाल उडइ करत्र ससपोही वसइ॥

परभाग रंग मृदंग गंजइ सत्त ताल विशाल ए।
समकित तंत्री तंत मणकइ सुमति सुमनस माल ए॥

चैत्र (वसन्त)

चैत्रइ विचित्र थइ रही अंबतणी वनरायोजी।
शुद्ध शाखा अंकुरित थइ सोइ वसन्तइ पायो जी॥
पाई वसंतइ सोइ जिणपरि, प्रियागमनई पद्‌मिनी।
सिणगार बिन पिण मुदित होवइ प्रेम पुलकित अंगिनी॥

आगे चल कर कवि ने बैशाख और ज्येष्ठ महीमा का भी सुन्दर वर्णन किया है। इसी प्रकार इस ग्रन्थ के पृ ६१ में प्रकाशित नेमि राजिमती बारहमास में भी प्रकृति और बारहमास का सुन्दर वर्णन किया है पाठकों को स्वयं पढ़कर रचनाओं का रसास्वादन करना चाहिए।

स्नेह निवारण स्थूलिभद्र सज्झाय में कहा है कि :—

'नेह थी नरक निवास नेह प्रबल दुःख पास
नेह देह विनाश नेह प्रबल दुख रास
चाल्हानइ वउलावतां रे, पीछइ प्रेम नी झाल
दीयड़ो फाटइ अति घणु रे नांखइ विरह बझाल
वलतां मुँह मारगी दूबे रे हां, अंग तपइ अंगार
आँसड़ियें आसू झरइ रे हां जिमपावस जलधार
मत किणही सु लागज्यो र पापी एह सनेह
पगइ म पग्यौ नीसरइ रे हां चलइ सुरंगो नेह'

कविवर विनयचन्द्र की समस्त रचनाओं में विस्तृत रचना उत्तमकुमार चरित्र है जिसमें सदाचार को पोषण करने वाला उत्तमकुमार का उदात्त चरित्र है जिसका सार यहाँ दिया जा रहा है।

उत्तमकुमार रास सार

प्रारम्भ में एक संस्कृत श्लोक द्वारा विनायक को नमस्कार किया गया है जो प्रति लेखक द्वारा लिखा हुआ है। रास के प्रारम्भ में ११ दोहों में ॐकार, सरस्वती और दादा श्री जिन कुशलसूरिजी को नमस्कार कर सुपात्रदान के अधिकार में उत्तमकुमार चरित्र रचना प्रस्ताव रखते हुए कवि श्रोताओं से बातचीत और कुमति क्लेश त्याग करने का निर्देश कर चरित्र का प्रारम्भ करता है।

काशी देश स्थित वाराणसी नगरी का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि उस अलकापुरी के समकक्ष नगरी में ऊँची अट्टालिकाएँ चारों ओर दुर्ग चौरासी चौहटे और स्वर्ण-कलश युक्त जिनालय हैं जिन पर ध्वजाएँ फहराती हैं। इस नगरी के पुरुष देव और स्त्रियाँ अप्सरा तुल्य हैं। जल से लबालब भरे हुए सरोवरों में हंस आदि पक्षी कल्लोल करते हैं, फल फूलों से लदे हुए वृक्ष बारहों मास हरे भरे रहते हैं, टहूका करती हुई कोयल एवं अन्य पक्षी गण निर्भीक निवास करते हैं। इस नगरी का राजा मकरध्वज शूरवीर और दयालु था। राजा का वास्तविक गुण क्षमा ही है, यह बतलाने के लिए कवि ने निम्नोक्त दोहा उद्धृत किया है:—

> "कहे अटक्कै भूप नहीं पहिरण्यां नाही रूप।
> बूँद लगै सो राजवी, मिरल सहै सो रूप॥"

राजा की रानी लक्ष्मीवती पतिव्रता और चौसठ कलाओं में प्रवीण परिनिष्ठा सुन्दरी थी। सांसारिक सुख उपभोग करते हुए रानी के गर्भ में शुभ स्वप्न सूचित पुत्र आकर अवतीर्ण हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर रानी ने सुन्दर पुत्र को जन्म देकर इस दृष्टान्त को चरितार्थ कर दिया कि दीपक से दीपक प्रकट होता है। राजा ने बड़े उत्साह से पुत्र जन्मोत्सव किया घर घर में तोरण लगाये गए, दान दिया गया। दसोटन करने के बाद उत्तम लक्षण वाले पुत्र का नाम उत्तमकुमार रखा गया। उत्तमकुमार चन्द्रकला की भांति पांच माताओं द्वारा पालित पोषित होकर क्रमशः आठ वर्ष का हुआ। राजा ने उसे पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा। थोड़े दिनों में वह सारे छात्रों से आगे बढ़ कर समस्त कला कौशल में निष्णात हो गया।

कुमार बड़ा सदाचारी था वह सत्यवादी नीतिवान और दयालु था। वह चोरी परदारागमन आदि सभी दुर्व्यसनों से विरत धीर वीर गम्भीर दीन दुखियों का उपकारी होने के साथ-साथ अपने इष्ट मित्रों के साथ खेल कूद में मस्त रहता था।

एक दिन रात में सोये हुए कुमार के मन में विचार आया कि मैं अब तरुण हो गया। इस अवस्था में हाथ पर हाथ धर घर में बैठे रहना कायर का काम है। कहा भी है कि—

गुण समता गुणवत मे वैरी अवगुण जाय
वनिता मे फिरियो पुरो जो सुगन्धी होय।

अतः मुझे पिता द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का उपभोग न कर भ्रमण के हेतु निकल पड़ना चाहिये। वह देशाटन की उमंग में स्वजनों की चिन्ता छोड़कर हाथ में तलवार लेकर अपने भाग्य परीक्षा के हेतु प्रवास में निकल पड़ा। वह कितने ही जंगल, पहाड़ और नदियों को पार करता हुआ कौतुकवश धूप और लू की गर्मी में सुख-दुख सहन करता हुआ आगे बढ़ता ही गया। उसे कहीं तो भयानक अटवी मिलती तो कहीं हरे भरे वृक्ष और लहराते हुए सुन्दर सरोवर जहाँ कमलों की सौरभ मस्तिष्क को ताजा बना देती। अनुक्रम से अनेक ग्राम नगरों को उल्लंघन करता हुआ उत्तमकुमार मेवाड़ देश की राजधानी चित्तौड़ जा पहुँचा। यहाँ का राजा महासेन प्रबल प्रतापी और समृद्धिशाली होने के साथ साथ धर्मात्मा भी था। सब प्रकार से सुखी होने पर भी राजा सन्तान सुख से वंचित था। दैव की गति विचित्र है कवि कहता है कि—

> 'सुखिया देखि सके नहीं दोषी दैव अकाज
> संपति यों तो सुत नहीं इण परि करे निकाज
> इक अवनीपति सुतबिना बलि बैरयां में वास
> नदी किनारे रूखड़ा जब तब होइ विनास"

राजा ने सन्तानोत्पत्ति के लिए पर्याप्त उपाय किये पर वह असफल रहा। एक दिन वह वन में घूमने के लिए सपरिवार मन्त्री आदि को साथ लेकर निकला। राजा मीले घोड़ पर आरूढ़ था, उसने गुण लक्षण सम्पन्न घोड़े को बार-बार ने

अंग हाथे देख कर मंत्री से पूछा—इस पाट की किशोर वय में यह दशा क्यों ? राजा के बार बार पूछने पर भी मंत्री आदि कोई भी सब उसकी जिज्ञासा का समुचित उत्तर न दे सका तो राजा को कष्ट होते देख उत्तमकुमार ने आकर कहा—प्रभो। मैं परदेशी हूं पर अपनी मति के अनुसार बतलाता हूं कि इसने भैंस का दूध बहुत पिया है वह वायुकारक होता है इसी से इसकी गति में चपलता नहीं है। राजा ने कहा—वत्स! तुम बड़े ज्ञानी हो तुमने कैसे जाना ? वस्तुतः यह अश्व बाल्यकाल में मातृविहीन हो गया तब इसका ऊपरी दूध से ही पालन पोषण हुआ था। उत्तमकुमार के अश्वपरीक्षा ज्ञान से प्रभावित होकर राजा ने कहा—वत्स! इतने दिन मैं निःसन्तान था अब तुम भाग्यवश आ मिले तो यह सब राज पाट सम्भालो लक्षणों से तुम राजकुमार ही लगते हो। अतः निःसंकोच राज्य भार ग्रहण करो। मैं ज्ञानी गुरु के पास दीक्षित होकर आत्म-साधन करूँगा। उत्तमकुमार ने कहा—अभी तो मैं प्रवास में हूं लौटते समय आपके चरणों में उपस्थित होऊंगा।

उत्तमकुमार चित्तौड़ से अकेला चल पड़ा और कुछ दिनों में भरुच्छ (भरोंच) जा पहुंचा। दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करते हुए वह मुनिसुव्रत भगवान के मन्दिर में पहुँचा और पूजा स्तुति द्वारा अपना जन्म सफल किया। फिर सरोवर के तट पर जाकर बैठ तो पनिहारिन लोगों से सुना कि कुबेरदत्त व्यवहारी पांचसौ प्रवहण भर के आज ही समुद्र यात्रार्थ रवाने

अत: मुझे पिता द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का उपभोग न कर भ्रमण के हेतु निकल पड़ना चाहिये। वह देशाटन की उमंग में स्वजनों की चिन्ता छोड़कर हाथ में तलवार लेकर अपने भाग्य परीक्षा के हेतु प्रवास में निकल पड़ा। वह कितने ही जंगल पहाड़ और नदियों को पार करता हुआ कौतुकवश धूप और लू की गर्मी में सुख-दुख सहन करता हुआ आगे बढ़ता ही गया। उसे कहीं तो भयानक अटवी मिलती तो कहीं हरे भरे वृक्ष और लहराते हुए सुन्दर सरोवर जहाँ कमलों की सौरभ मस्तिष्क को ताजा बना देती। अनुक्रम से अनेक ग्राम नगरों को उल्लंघन करता हुआ उत्तमकुमार मेवाड़ देश की राजधानी चित्तौड़ जा पहुँचा। वहाँ का राजा महासेन प्रबल प्रतापी और समृद्धिशाली होने के साथ साथ धर्मात्मा भी था। सब प्रकार से सुखी होने पर भी राजा सन्तान सुख से वंचित था। दैव की गति विचित्र है कवि कहता है कि—

> 'सुखिया देखि सके नहीं दोषी दैव अकाज
> संपति यों तो सुत नहीं सुत पति करे निकाज
> इक अवनीपति सुतबिना बसि वेश्या में वास
> नदी किनारे रूखड़ा, जब तब होइ विनास"

राजा ने सन्तानोत्पत्ति के लिए पर्याप्त उपाय किये पर वह असफल रहा। एक दिन वह वन में घूमने के लिए सपरिवार मन्त्री आदि को साथ लेकर निकला। राजा नीले घोड़े पर आरूढ़ था उसमें शुभ लक्षण सम्पन्न घोड़े की बार-बार गति

नरक परिणामी अनुचित अध्यवसायों को त्याग दो! देवी ने आज्ञा न मानने पर उसे तलवार द्वारा मार डालने की धमकी दी। परन्तु कुमार को अपने निश्चय पर अटल देखकर सन्तुष्ट चित्त से देवी ने कुमार के शील गुण की स्तवना करते हुए वारह कोटि रत्न वृष्टि की। इसके बाद समुद्र में जाते हुए जहाज देखकर कुमार ने जहाज रोकने के लिए पुकारा। लहकती हुई ध्वजा के संकेत से समुद्रदत्त जहाजों को किनारे लगाकर कुमार से मिला और सारा वृत्तान्त ज्ञातकर उसे अपने जहाज में बैठा लिया। कुछ दिन में जल समाप्त हो जाने से व्याकुल होकर सभी यात्रियों ने शास्त्रज्ञ निर्यामक से जल प्राप्ति का उपाय पूछा। उसने कहा—थोड़ समय में बेल उतरने पर स्फटिक रत्नमय पर्वत प्रगट होगा जिस पर सुस्वादु जल का कुंआ है। पर वहाँ भ्रमर कतु नामक अति क्रूर और मांसभोजी राक्षस रहता है। समुद्र देवता के समक्ष उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि अवसर पर आरूढ़ यात्री को वह नहीं मारेगा। इस प्रकार बातें चल रही थी कि इतने में पर्वत प्रगट हो गया। सामने कुँआ दीखने पर भी भय के वशीभूत होकर कोई नीचे नहीं उतरा। कुमार ने सबको साहस बन्धाकर जल स्नान के लिए प्रेरित किया और सब की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने पर ले लिया। लोगों ने रस्सी बांध कर जल पात्रों को कुएं में डाला पर कुंआ जल से भरा हुआ होने पर भी किसी को एक बूंद पानी नहीं मिला। तब राक्षस के भय से कोई कुएं में उतरकर जलादानार्थ के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ

हो रहा है। कौतुकी उत्तमकुमार भी सांयात्रिक की अनुमति लेकर प्रवहण पर आरूढ़ हो गया। शुभ मुहूर्त में प्रवहण चल पड़े कुछ दिनों में पीने का पानी समाप्त हो जाने से जल-संग्रह करने के लिए शून्य द्वीप में जहाज रोके गए। सब लोग जब पानी की खोज में उतरे तो भ्रमरकेतु नामक राक्षस अपने साठ हजार साथियों के साथ आकर लोगों को पकड़ कर तंग करने लगा। साहसी उत्तमकुमार तुरन्त द्वीप में उतर आया और ललकार कर अकेला ही राक्षस सेना के साथ युद्ध करने लगा। उसने जिस वीरता के साथ युद्ध किया, भ्रमरकेतु कायरतापूर्वक भग गया और उसकी सेना तितिर-बितिर हो गई। राक्षस को जीतकर उसने समुद्र तट पर आकर देखा तो सारे जहाज रवाना हो चुके थे। कुमार ने सोचा—"लोग कितने स्वार्थी और कृतघ्न होते हैं ? दूसरे ही क्षण मन में विचार आया कि बिचारे भयाक्रान्त होकर भग गए इसमें उनका कोई दोष नहीं मेरे पूर्व जन्म के पापों का उदय है। इसके बाद उसने एक वृक्ष पर ध्वजा बांध दी जिससे किसी यात्री-जहाज को दूर से उसकी उपस्थिति मालूम हो जाय। वह भगवान के भजन करता हुआ फलाहार से अपना निर्वाह करने लगा।

एक दिन द्वीप की अधिष्ठातृ देवी ने कुमार के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उससे बहुत ही अनुनय पूर्वक प्रेम याचना की। कुमार ने कहा—माता तुम देवी हो। मैं परनारी सहोदर हूँ। मेरे से तुम्हारा किसी भी प्रकार कार्य सिद्ध नहीं होगा। अतः

यही प्रसन्नता व्यक्त की और सब लोग प्रसन्नतापूर्वक होकर रवाना हो गए।

कुछ दिन बाद फिर जहाजों का पानी समाप्त हो गया। जल के बिना लोगों को दुखी देखकर मदालसा ने लोगों का उपकार करने के लिए पतिसे प्रार्थना की। उत्तमकुमार ने कहा— जल बिना सबके ओष्ट सूख रहे हैं, क्या उपाय किया जाय? यदि तुम कुछ कर सको तो सबका दुःख दूर हो। मदालसा ने अपने आभूषणों का करण्डिया मंगाकर उसमें से पांच रत्न निकलवाये और उनके गुण बतलाते हुए कहा—प्रियतम! ये पांच रत्न देवाधिष्ठित हैं इनसे स्वर्णथाल प्याला बर्तन आदि भरे हुए भोजन मणि रत्नादि के आभूषण शयनासन मूंग गेहूँ आदि धान्य तथा अग्नि रत्न से मिष्टान्न सुस्वादु व्यंजन प्राप्त होते हैं। गगन-रत्न से वस्त्र वात-रत्न से अनुकूल वायु एवं नीर-रत्न को आकाश में रखकर पूजा करने से वांछित जल वृष्टि होती है। कुमार अपनी धर्मात्मा पत्नी के गुणों से प्रसन्न हो नीर-रत्न को स्तम्भपर बांध कर बड़े समारोहसे पूजा की जिससे मेघवृष्टि हुई और लोगों ने अपने समस्त जलपात्र भर लिए। फिर मार्ग में धनधान्य की आवश्यकता पड़ने पर कुमार ने दूसरे रत्नों के प्रभाव से विविध उपकार किए। सब लोग अपने उपकारी उत्तमकुमार का बड़ा आदर करने लगे। समुद्रदत्त ने जब से मदालसा को देखा, वह उस पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के घात सोचने लगा।

लगा। मदालसा भी जैन धर्मपरायण और सुशील थी। कवि ने मदालसा के अप्रतिम सौन्दर्य का वर्णन १२वीं ढाल में किया है (देखो पृ० १३५) धर्मिष्ठा नारी के वर्णन में कवि ने निम्न कवित्त कहा है :—

नारी मिरगानयन, रंगरेखा रस राती
बदे सुकोमल बयण महा भर यौवनमाती।
सारद वचन स्वरूप, सकल सिणगारे सोहै
अपछर जेम अनूप मुलकि मानव मन मोहै।
कल्लोल केलि बहु विध करै, भूरिगुणे पूरण भरी
चन्द्र कहै जिनधरम विण कामिणी ते किण कामरी।

कवि विनयचन्द्र ने यहां प्रथम प्रकाश को १४ ढालों में पूर्ण करते लिखा है कि अपने ज्ञानवृद्धि के हेतु मैंने यह प्रथम अभ्यास किया है।

सिद्ध पद का स्मरण और शारदा के विचारपूर्वक कवि द्वितीय प्रकाश प्रारम्भ करता है। उत्तमकुमार ने वैरी के स्थान में अधिक रहना अनुचित जान कर मदालसा से विदेश गमनार्थ सीख मांगी। उसने कहा—प्रियतम! मैं तो छाया की भांति तुम्हारे साथ रहूंगी और यहां मेरे रहने का कोई प्रयोजन भी तो नहीं है। कुमारी ने अपने पांच रत्न और कूदा को साथ लिये और एकमत से तीनों कूप में आ गए। समुद्रदत्त के आदमी उस समय जल निकाल रहे थे तो रस्सी के सहारे तीनों व्यक्ति बाहर निकल आये। लोगों ने कुमार के मुख से सारा वृत्तान्त ज्ञात कर

के प्रभाव से दान पुण्य करती हुई सती स्त्रियोचित नियमों का पालन करती हुई काल निगमन करने लगी। उसने स्नान शृंगारादि का त्याग कर दिया और प्रतिदिन नीरस आहार का एकाशना करके भूमि शयन स्वीकार कर लिया। वह पुरुष मात्र की ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती एवं निरन्तर नवकार मन्त्र का स्मरण किया करती थी।

एक दिन धीवर लोगों के साथ उत्तमकुमार भी मोटपली आया और नगरी का अवलोकन करता हुआ जहाँ राजा नरवर्मा अपनी पुत्री के लिए प्रासाद बनवा रहा था, वहाँ आकर देखने लगा। कुमार वास्तुशास्त्र में निष्णात था उसने स्थान-स्थान पर सूत्रधारों से वास्तु-दोष सुधारने के लिए निराभिमानता से उचित परामर्श दिये जिससे प्रसन्न होकर सूत्रधारों ने कुमार को अपने पास रख लिया। कुमार के सान्निध्य से थोड़े दिनों में यह सुन्दर प्रासाद बन कर तैयार हो गया।

एक बार राजा नरवर्मा प्रासाद निरीक्षणार्थ आये वे उत्तम कुमार को उच्चासन पर बैठे देखकर सोचने लगे कि यह रूप और गुण से राजकुमार मालूम होता है। उन्होंने कुमार से परिचय पूछा तो उसने कहा—राजन्! मैं परदेशी हूँ और आपके नगर में निवास करता हूँ। राजा महल देखकर चला गया। बसंत ऋतु में वन-वाटिका की शोभा अवर्णनीय थी कवि ने ढाल १३वीं में वसन्त ऋतु का अच्छा वर्णन किया है। राजकुमारी भी क्रीड़ा के हेतु बगीचे में आई, उसे साँप डस गया। सर्वत्र हाहाकार छा

सूंगी। सेठ भी मदालसा के इन वचनों से संतुष्ट हो गया। वृन्दा ने मदालसा के चातुर्य की प्रशंसा की। सेठ के जहाज जब उससे आगे चलने लगे तो मदालसा ने पवन-राज की पूजा की जिससे अनुकूल वायु द्वारा जहाज मोठपल्ली वेलाकूल के तट पर आ लगे। यहाँ का राजा नरवर्म बड़ा धर्मात्मा और न्यायप्रिय था। मदालसा को लेकर सेठ राजसभा में पहुँचा और राजा को भेंट पुरस्कार से प्रसन्न करके निवेदन करने लगा—राजन्! मुझे यह महिला चन्द्रद्वीप में मिली है, इसका पति समुद्र में गिर कर मर गया यह पवित्र है और आपकी आज्ञा से मेरी गृहिणी बनेगी। मदालसा ने कहा—मूर्ख! क्यों मिथ्या मद सा बकता है अगर राजा न्याय करे तो तुम्हारे दाँत तोड़ दे। उसने फिर राजा को सम्बोधन कर कहा—महाराज! इस पापी ने मेरे पति को समुद्र में गिरा दिया है, मन अपनी शील रक्षा के हेतु इसे भुला कर आपके सामने उपस्थित किया है अब आप जैसे महा पुरुष अन्याय नहीं करेंगे क्योंकि वैसा होने से मेरु पर्वत कम्पाय मान हो जाय एवं पृथ्वी पाताल को चली जाय। अतः दुष्ट को यथोचित शिक्षा दें। राजा ने क्रुद्ध होकर समुद्रदत्त के पाँचसौ जहाज जप्त कर लिये और मदालसा से कहा—बेटी! तुम मेरी पुत्री त्रिलोचना के पास उसकी बहिन की तरह आराम से रहो। चिन्ता छोड़कर दान पुण्य करती रहो। यदि किसी तट पर तुम्हारा पति पहुँचेगा तो उसका अनुसंधान करवाया जायगा।

मदालसा को राजा ने धमपुत्री करके माना। वह पंच रत्नों

मालूम देती है कि वह अवश्य तुम्हारा पति ही होगा। यदि आज्ञा दो तो जाकर प्रतीति कर आऊं ? वह मदालसा की आज्ञा लेकर त्रिलोचना के घर गई और त्रिलोचना के भाग्य की प्रशंसा करते हुए उसके प्रियतम को देखने की इच्छा प्रकट की। त्रिलोचना ने कहा मेरे प्राणाधार महल में सोये हुए हैं जाकर देख आओ। वृद्धा ने उत्तमकुमार को पलंग पर सोये हुए देखा और मदालसा से आकर कहा—मुझे तो तुम्हारे पति जैसा ही लगता है। यह सुनकर मदालसा के हृदय में प्रेम जगा और उससे मिलने को उत्सुक हुई। फिर दूसरे ही क्षण बिना प्रतीति किये परपुरुष के प्रति आकृष्ट होनेवाले पापी मन को धिक्कारा। इधर उत्तमकुमार ने वृद्धा को देख कर जाते हुए देखा तो त्रिलोचना से पूछा कि अभी महल में कौन आई थी, मुझे पता नहीं लगा। त्रिलोचना ने कहा—मेरे से भी सौन्दर्य व गुणों में उत्कृष्ट एक परदेशिन यहाँ आई है जिसे मैंने बहिन करके माना है वह एकान्त में रहकर धर्म ध्यान करती है परोपकारिणी तो वह अद्वितीय है उसके पास दिखता तो कुछ नहीं पर न जाने उसके पास क्या सिद्धि है दान पुण्य में अपार धनराशि व्यय कर रही है। पति के वियोग में उसने शरीर एकदम सुखाकर कृश कर लिया है। यह वृद्धा जो आपको देख गई उसी की नौकरी है।

कुमार ने जब यह वृत्तान्त सुना तो उसे अपनी प्रियतमा मदालसा का ख्याल आया और उससे मिलने को उत्सुक हुआ। फिर दूसरे ही क्षण सोचा—उसे न जाने पापी समुद्रदत्त ने कहाँ

गया। कुमारी के विष व्याप्त शरीर को राजमहल में लाकर विषापहार के हेतु गारुडिक लोगों को बुलाया गया। उनके लाख उपाय करने पर भी जब कुमारी निर्विष नहीं हुई तो राजा ने राजकुमारी का विष उतारने वाले को अर्द्धराज्य व कुमारी से पाणिग्रहण कर देने की उद्घोषणा करवा दी। उत्तमकुमार ने पन्द स्पर्श किया और उसने मन्त्र विद्या के बल से राजकुमारी त्रिलोचना को सचेत कर दिया। राजा ने अपने वचनानुसार शुभ मुहूर्त में उत्तमकुमार के साथ त्रिलोचना का पाणिग्रहण करा दिया। हस्तमिलाप सुदान के समय राजा ने उसे अर्द्ध राज्य दे दिया। उत्तमकुमार अपनी प्रिया के साथ नवनिर्मित प्रासाद में रहने लगा। यहीं दूसरा अधिकार समाप्त हो जाता है।

तीसरे अधिकार के प्रारम्भ में कवि भगवान महावीर को नमस्कार कर श्रोताओं को आगे का सम्बन्ध सुनने का निर्देश करता है। मदालसा ने दासी से कहा—प्रियतम का अबतक कोई पता नहीं लगा अतः वे समुद्र में डूब गए मालूम होते हैं। मैं अब किस आशा से जीवित रहूं? मैंने इतने दिन आंबिल तपश्चर्या की जिनालय एवं स्वर्ण रत्नमय प्रतिमाएं बनवाई त्रिकाल पूजा की। साधु व स्वधर्मियों को दान पुण्य आदि धर्माराधन करते हुए प्रतीक्षा की पर अब तो पाँचों रत्न त्रिलोचना वहिन को सम्भला कर संयम मार्ग स्वीकार कर लेना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है। वृद्धा न कहा—जिस परदेशी ने त्रिलोचना से ब्याह किया है सारे नगर में उसकी प्रशंसा सुनाई देती है मेरी आत्मा

माभी देती है कि यह अवश्य तुम्हारा पति ही होगा। यदि आज्ञा हो तो जाकर प्रतीति कर आऊं ? यह महात्मा की आज्ञा लेकर त्रिलोचना के घर गई और त्रिलोचना के भाग्य की प्रशंसा करते हुए उसके प्रियतम का देखन की इच्छा प्रकट की। त्रिलोचना ने कहा मेरे प्राणाधार महल में सोये हुए हैं जाकर देख आओ। वृद्धा ने उत्तमकुमार को पलंग पर सोये हुए देखा और महात्मा से आकर कहा—मुझे तो तुम्हारे पति जैसा ही लगता है। यह सुनकर महात्मा के हृदय में प्रेम जगा और उससे मिलने को उत्सुक हुई। फिर दूसरे ही क्षण बिना प्रतीति प्रिय परपुरुष के प्रति आकृष्ट होनेवाले पापी मन को धिक्कारा। इधर उत्तमकुमार ने वृद्धा को देख कर जाते हुए देखा तो त्रिलोचना से पूछा कि अभी महल में कौन आई थी, मुझे पता नहीं लगा। त्रिलोचना ने कहा—मेरे स्वामी सौन्दर्य व गुणों में उत्कृष्ट एक परदेशिन यहाँ आई है जिसे मैंने बहिन करके माना है वह एकान्त में रहकर धर्म ध्यान करती है परोपकारिणी तो वह अद्वितीय है उसके पास पैसा तो कुछ नहीं पर न जाने उसके पास क्या सिद्धि है दान पुण्य में अपार धनराशि व्यय कर रही है। पति के वियोग में उसने शरीर एकदम सुखाकर पूरा कर लिया है। यह वृद्धा तो आपको देख गई उसी की मासी है।

कुमार ने जब यह वृत्तान्त सुना तो उसे अपनी प्रियतमा महात्मा का ख्याल आया और उससे मिलने को उत्सुक हुआ। फिर दूसरे ही क्षण सोचा—उस में ज्ञान पापी समुद्रदत्त ने यहाँ

लेजाकर किस विपत्ति में डाला होगा। व्यर्थ ही परस्त्री पर मोह उत्पन्न होने का पश्चाताप करता हुआ मध्यान्हकाल में जिन-पूजा के हेतु कुसुम, चन्दन आदि लेकर जिनालय में गया। बहुत विलम्ब हो जाने पर भी जब कुमार वापस नहीं लौटा तो त्रिलोचना ने चिन्तित होकर दासी को भेजा। खबर मिली कि उसे न तो किसी ने जाते देखा और न आते ही। त्रिलोचना पति-वियोग से दुखी होकर विलाप करने लगी। सर्वत्र खोज कराई गई पर कुमार का कोई पता नहीं लगा।

इसी नगरी में महेश्वरदत्त नामक वणिक रहता था जिसके ६६ कोटि स्वर्ण मुद्राएं निधान में, ६६ कोटि उधार में एवं ६६ कोटि मुद्राएं व्यापार में थी। उसके ५० जहाज, ५०० गोकुल, ५०० हाथी ५०० घोड़े, ५०० पालकी ५०० कोठे ५०० सुभट व पांच लाख सेवक थे। उसके कोई उत्तराधिकारी पुत्र नहीं था, सहस्रकला नामक एक मात्र गुणवती कन्या थी जिसके लिए योग्य वर प्राप्त होने पर पाणिग्रहण करवा के स्वयं दीक्षित होने की सेठ महेश्वरदत्त की चिर-कामना थी। उसने अपनी ६४ कला निधान पुत्री को तरुण वय प्राप्त हो जाने पर भी जब योग्य वर न मिला तो एक नैमित्तिक से अपने भावी जामाता के विषय में प्रश्न किया। नैमित्तिक ने कहा—जो व्यक्ति राज सभा में त्रिलोचना के पति और मदालसा का पूरा वृत्तान्त कहेगा, वही तुम्हारी पुत्री का वर होगा और आज से एक महीने बाद वह मिलेगा। वही अखण्ड प्रतापी सारे राज्य

का अधिपति होगा। ज्योतिषी के विवाह लग्न देने पर सेठ ने स्वजन सम्बन्धियों को निमन्त्रित कर विवाहमण्डप की रचना की एवं नाना प्रकार की विवाह सामग्री का संचय बड़े जोर-शोर से करना प्रारम्भ कर दिया। नगर में वर के बिना ब्याह रचने की बड़ी भारी चर्चा चल रही थी। राजा ने जब यह बात सुनी तो उसने सेठ माहेश्वरदत्त की वैराग्य-भावना की बड़ी प्रशंसा की और वह भी त्रिलोचना के पति को खोजकर उसे राजपाट देकर दीक्षा लेने का प्रबल मनोरथ करने लगा। राजा ने सर्वत्र उद्घोषणा करवा दी कि जो त्रिलोचना के पति व मदालसा का वृत्तान्त प्रकाशित करेगा उसे राज्याधिपति बनाने के साथ-साथ माहेश्वरदत्त की पुत्री सहस्रकला के साथ विवाह करा दिया जायगा। एक मास बीतने पर एक शुक ने आकर पटह स्पर्श किया और मानव भाषा में बोलकर कहा मुझे राज सभा में ले जाओ मैं राजा के जमाता और मदालसा का सारा वृत्तान्त बताकर राजा का राज्य व सहस्रकला को प्राप्त करूँगा। सब लोग उसे कौतुकपूर्वक राजसभा में ले आए। शुक ने मनुष्य की भाषा में कहा—परदे के अन्दर त्रिलोचना और मदालसा को बुलाकर उपस्थित कीजिए ताकि मैं सारा आख्यान कह सुनाऊँ। राजा ने कहा—तुम ज्ञान के बिना तिर्यंच किस प्रकार सारी बातें जानते हो? शुक ने कहा—"मैं त्रिकालज्ञ हूं भूत भविष्य की सारी बातें वत्तमान में समथ हूं।" फिर शुक ने राजा और समस्त नागरिक लोगों के समक्ष अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया—

वाराणसी के राजा मकरध्वज का पुत्र उत्तमकुमार भाग्य परीक्षा के लिए घर से निकलकर देशाटन करता हुआ भरूअच आया और सुवर्णद्वीप देखने के लिए जहाज में बैठकर समुद्र के बीच पहुँचा। वहाँ जलकान्त पर्वत स्थित भ्रमरकेतु राक्षस कारित कूप में साहस पूर्वक उतर कर लंकापति की पुत्री मदालसा से उसने पाणिग्रहण किया। फिर अपनी स्त्री के साथ कूप-मार्ग से बाहर आकर समुद्रदत्त के वाहन में आरूढ़ हुआ। मार्ग में जल शेष हो जाने पर पत्थरत्न के प्रभाव से सबको अशन पान से सन्तुष्ट किया। कुमार की संपदा और स्त्री को देखकर पापी सेठ ने उसे समुद्र में गिरा दिया। उसे गिरते ही मकर ने निगल लिया जिसे धीवर ने जाल में पकड़कर उदर विदीर्ण कर कुमार को निकाला। वह एक दिन त्रिलोचना का प्रासाद देखने आया जिसका नव्य निर्माण हो रहा था। उसका राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण हुआ और सुखपूर्वक रहने लगा और एक दिन वह जिन पूजा के हेतु घर से निकलकर जिनालय आया पूजनान्तर पुष्प करण्डिका में अंशानलिका को खोल कर देखा तो उसमें रखे हुए जहरी साँप ने कुमार के हाथ में डक लगा दिया जिससे वह मूर्छित हो धराशायी हो गया। हे राजन्! मैंने मदालसा और त्रिलोचना के पति का सारा वृत्तान्त बतला दिया अब कृपाकर अपनी सत्य प्रतिज्ञानुसार मेरी आशा पूर्ण कर तथा सेठ से भी सहस्रकला कन्या दिलाव। ऐसा कहकर शुक के मौन धारण करने पर राजा ने उसे आगे पाछने को कहा

तो उसने कहा—आप अपना वचन पूर्ण नहीं करते तो मैं चला जाऊँगा और जंगल में फल-फूल वृत्ति से अपना उदरपूर्ण करूँगा। मैंने यह जान लिया कि मनुष्य मायावी होते हैं और स्वार्थ सिद्ध होने पर तत्क्षण बदल जाते हैं। यह कहकर जब शुक उड़ने लगा तो राजा ने रोक कर कहा—धैर्य धारण करो राज्य अवश्य दूँगा, पर यह तो बतलाओ उत्तमकुमार कहाँ है? जीवित है कि नहीं? मेरी यह शंका दूर करो। शुक ने कहा—इतनी बात बताने पर भी जब कुछ नहीं मिला तो आगे बालुका को पीलने से क्या तेल निकलेगा? जब राजा ने राज्य व कन्या देने की स्वीकृति दी तो शुक आगे का वृत्तान्त बतलाने लगा—

'उसी समय अनंगसेना नामक सुन्दर गणिका वहाँ पहुँची और उसे विषापहार मणि प्रक्षालित जल द्वारा निर्विष कर दिया और अपने घर ले जाकर चौथी मंजिल के महल में रखा। राजन्! मैंने दाक्षिण्यवश सारा वृत्तान्त बतला कर मूर्खता की अब यदि आप अपना वचन पूरा नहीं करते तो मैं जाता हूँ आपका कल्याण हो। राजा ने कहा—अर्द्ध चिकित्सा करके वैद्य नहीं जा सकता अतः अनंगसेना के घर में कुमार को शोध कर लूँ फिर तुम्हें राज दूँगा।

राजा ने अपने कर्मचारियों को अनंगसेना के घर भेजा। वेश्या से राज जामाता का अनुसन्धान पूछा तो वह चिन्तित और नीची नजर कर मौन हो गई। जब उत्तमकुमार वेश्या के

यहाँ न मिला तो राजा ने सचिन्त होकर शुकराज से ही प्रार्थना की कि तुम्ही सब स्पष्ट अनुसंधान कहो ! उसने कहा—

अनंगसेना ने देखा राज-जामाता को यों घर में रखना मुश्किल है अतः उसे सर्वदा अपने यहां रखने के लिये उसके पैर में मंत्रित डोरा बांधकर शुक बना दिया। उसने शुक को स्वर्ण पिंजड़े में रखा। वह रात में उसे पुरुष और दिन में शुक बना देती है एवं गीतगान आदि से उसका मनोरंजन करती है। कुमार ने मन में सोचा—कर्मगति बड़ी विचित्र है ! मैंने ऐसा क्या पाप किया जिससे मनुष्य भव में त्रियंच गति भोगनी पड़ती है। शायद मदालसा और पांचरत्न उसके पिता की आज्ञा बिना ग्रहण करने का तथा क्षुधा के आने पर त्रिलोचना से उसकी सखी पर रक्खी जानकर क्षणिक मानसिक पाप किया हो उसी के फलस्वरूप सांप न डस गया हो ? कवि कहता है कि उत्तम पुरुष अपने थोड़े से अपराध को भी विशेष मानते हैं।

अनंगसेना के यहाँ रहते उसे एक मास हो गया आज वह दैवयोग से पिंजड़ा खुला छोड़कर किसी काम में लग गई। शुक ने पटहोद्‌घोषणा सुनकर उसे स्पर्श किया और इस समय वह आपके समक्ष उपस्थित है। राजा ने हर्षित होकर उसके पैर का डोरा खोला तो वह तुरत उत्तमकुमार हो गया।

उत्तमकुमार को देखकर सर्वत्र आनन्द छा गया। मदालसा व त्रिलोचना के अपार हर्ष का तो कहना ही क्या ? सेठ माहेश्वरदत्त ने अपनी पुत्री सहस्त्रकला का कुमार के साथ पाणि

ग्रहण कर लिया सारे नगर में आनन्द उत्सव मनाये गये। सुन्दरी गणिका अनंगसेना भी पातिव्रत नियम लेकर कुमार की चौथी स्त्री हो गई। राजा ने मालिन को बुलाकर धमकाया तो उसने समुद्रदत्त व्यवहारी द्वारा पाँचसौ मुद्रा प्राप्त कर लोभवश कुमार को मारने के लिए पुष्प-करंडिका में साँप रखने का कुकृत्य स्वीकार कर लिया। राजा ने समुद्रदत्त व मालिन को मृत्युदण्ड दिया पर उदारचेता कुमार ने अपना भाग्य-दोष बताते हुए उन्हें क्षमा करवा दिया। राजा ने समुद्रदत्त का सर्वस्व लूटकर अन्त में देश निकाला दे दिया।

राजा नरवर्मा ने उत्तमकुमार को राजपाट सौंप कर सेठ महेश्वरदत्त के साथ सद्गुरु के चरणों में जाकर संयम-मार्ग स्वीकार कर लिया और शुद्ध चारित्र पालन कर कर्मों का क्षय किया। अन्त में केवलज्ञान पाकर मोक्षगामी हुए। जब राजसेन्द्र भ्रमरकेतु ने नैमित्तिक से अपने वैरी का पता पूछा तो उसने कहा वह तुम्हारी पुत्री को पंच रत्नों सहित ब्याह कर ले गया और इस समय मोटपल्ली में है। जब भ्रमरकेतु ने दुगम बाक कूप में पहुंचना असम्भव बतलाया तो उसने कहा कि जब वह अकेला था तब भी तुम उसका पराभव न कर सके तो अब तो वह प्रबल और जामाता भी हो गया। भ्रमरकेतु वैरभाव त्याग कर उत्तमकुमार से मिला और अपनी पुत्री तथा जामाता को आशीर्वाद देते हुए उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

एक दिन जब उत्तमकुमार राजसभा में बैठा था तो

यहाँ न मिला तो राजा ने सचिन्त होकर युवराज से ही प्रार्थना की कि तुम्ही सब स्पष्ट अनुसंधान करो। उसने कहा—

अनंगसेना ने इसा राज जामाता का घों पर में रखना मुश्किल है अतः उसे सर्वदा अपने यहां रखने के लिये उसके पैर में मन्त्रित डोरा बांधकर शुक बना दिया। उसने शुक को स्वर्ण पिंजड़े में रखा। वह रात में उसे पुरुष और दिन में शुक बना देती है एवं गीतगान आदि से उसका मनोरंजन करती है। कुमार ने मन में सोचा—कर्मगति बड़ी विचित्र है। मैंने ऐसा क्या पाप किया जिससे मनुष्य भव में तिर्यंच गति भोगनी पड़ती है। शायद मदालसा और पोपटरत्न उसके पिता की आज्ञा बिना ग्रहण करने का तथा मुद्रा के आने पर त्रिलोचना से उसकी सखी पर स्वस्त्री जानकर क्षणिक मानसिक पाप किया तो इसी के फलस्वरूप साँप न डस गया हो? कवि कहता है कि उत्तम पुरुष अपने थोड़े से अपराध को भी विशेष मानते हैं।

अनंगसेना के यहाँ रहते उसे एक मास हो गया आज वह दैवयोग से पिंजड़ा खुला छोड़कर किसी काम में लग गई। शुक ने पटहोद्घोषणा सुनकर उसे स्पर्श किया और इस समय वह आपके समक्ष उपस्थित है। राजा ने हर्षित होकर उसके पैर का डोरा खोला तो वह तुरत उत्तमकुमार हो गया।

उत्तमकुमार को देखकर सर्वत्र आनन्द छा गया। मदालसा व त्रिलोचना के अपार हर्ष का तो कहना ही क्या? सेठ माहेश्वरदत्त ने अपनी पुत्री सहस्रकला का कुमार के साथ पाणि

स्वागत में नगर को सजाकर बड़े भारी उत्सव समारोह किये गए। उत्तमकुमार अपने माता पिता की चरणवन्दना कर अत्यन्त प्रमुदित हुआ। अपने पुत्र को इतने बड़े राज्य विस्तार व चार रानियों सहित समागत देखकर माता पिता को अपार हर्ष हुआ। राजा मकरध्वज ने कुमार को शुभमुहूर्त में राज्या भिषिक्त कर स्वयं दीक्षा ले ली।

अब उत्तमकुमार चार राज्यों का अधीश्वर था। उसके ४० लाख हाथी ४० लाख घोड़े ४ लाख रथ व चार करोड़ पैदल सेना थी। वह ४० कोटि गामों का अधिपति था। उसने तीर्थ यात्रा जिनबिंब व प्रसादों के निर्माण तथा सप्त भण्डार व स्वधर्मी वात्सल्य में अगणित धनराशि व्यय की। इस प्रकार चार रानियों के साथ सुखपूर्वक राज्य करने लगा। एक दिन केवली मुनिराज के शुभागमन होने पर राजा चरणवन्दनार्थ उपस्थित हुआ। उपदेश सुनकर राजा उत्तमकुमार ने केवली भगवान से पूछा – प्रभो! मैंने ऐसे क्या पाप-पुण्य किये जिससे इतनी ऋद्धि सम्पत्ति पाने के साथ-साथ समुद्र में गिरा मच्छ के पट से निकलकर धीवर के यहाँ रहा एवं गणिका के यहाँ शुक पक्षी के रूप में रहना पड़ा। केवली भगवान ने फरमाया— पूर्वकृत कर्म का विपाक उदय में आने पर सुख-दुःख भोगना पड़ता है। कर्मों का प्रभाव जानने के लिए केवली भगवान ने राजा को पूर्व जन्म का सम्बन्ध कहा—हिमालय प्रदेश के सुदत्त ग्राम में धनदत्त नामक एक कौटुम्बिक रहता था जिसके चार

वाराणसी से मकरध्वज का पत्र लेकर एक दूत उपस्थित हुआ जिसमें अत्यन्त प्रेम पूर्वक लिखा था—'बेटा। तुम्हारे जाने के बाद हमने चारों ओर बहुत खोज की पर तुम्हारा कोई पता नहीं लगा। अब तुम शीघ्र आकर हमारा हृदय शीतल करो। मैं अब वृद्ध हो गया अत तुम राज-पाट सम्भालो ताकि मैं आत्मकल्याण करूँ।

पितृ आज्ञा पाकर अचलकुमार का हृदय शीघ्र उनके चरणों में उपस्थित होने को उत्सुक हो गया। उसने मन्त्री लोगों को राज्य भार सौंप कर अपनी चारों स्त्रियों को लेकर सैन्य सहित वाराणसी के प्रति प्रयाण कर दिया। मार्ग में चित्रकूट जाकर राजा महासेन से मिला जिसने पूर्व निश्चयानुसार अचलकुमार का राज्याभिषेक कर स्वयं संयममार्ग स्वीकार कर लिया। अचलकुमार कई देशों में अपनी आज्ञा प्रवर्तित कर सैन्य सहित नागाचलगिरि की ओर बढ़ा। वहाँ के राजा वीरसेन को खबर मिलते ही चार अक्षौहिणी सेना के साथ सीमा पर आ डटा। परस्पर घमासान युद्ध हुआ कवि ने १०वीं ढाल में युद्ध का अच्छा वर्णन किया है। अन्त में वीरसेन पराजित होकर जीवित पकड़ लिया गया। उसके आधीनता स्वीकार करने पर कुमार ने उसे छोड़ दिया। अपनी पराजय से वैराग्यवासित होकर उसने एक हजार पुरुषों के साथ सुविहित आचार्य युगन्धरसूरि के पास चारित्र ग्रहण कर लिया। चार दिन बाद मार्ग के अभिमानी राजाओं को वशवर्ती कर अचलकुमार वाराणसी पहुँचा। उसके

विनयचन्द्र भी इस रचना को अपना प्रथमाभ्यास सूचित करते हैं। जिनरत्नकोश के अनुसार इसके अतिरिक्त तपागच्छीय जिनकीर्त्ति सोमसण्डन और शुभशील के भी संस्कृत चरित्र उपलब्ध हैं तथा भाषा में महीचन्द्र ने सं० १५६१ जौनपुर में विजयशील ने सं० १६४२ में, ऋषिविजय ने स० १७०१ में, कवि जिनहर्ष ने सं० १७४५ पाटण में तथा रायरत्न ने स० १८५२ में खेड़ा में रास चौपाई बनाये जो सभी उपलब्ध हैं।

कविवर विनयचन्द्र के व्यक्तित्व और रचनाओं का थोड़ा विहगावलोकन पिछले पृष्ठों में कराया जा चुका है। इस ग्रन्थ में अब तक की उपलब्ध कविवर की समस्त रचनाएँ दी जा चुकी हैं। अन्त में कविवर की कृतियों में प्रयुक्त देसियों की सूची देकर इस ग्रन्थ में आये हुए राजस्थानी व गुजराती शब्दों का कोप प्रकाशित किया है। इसमें शब्दों के अर्थ की ओर नहीं, पर भावार्थ की ओर ही लक्ष्य रखा गया है एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं पर जहाँ जिस भाव में उसे प्रयुक्त किया है उसे समझने में पाठकों को सुगमता हो यही इसका उद्देश्य है।

कविवर की जीवनी के विषय में हम अधिक सामग्री उपलब्ध न कर सके पर जितना भी ज्ञात हुआ, दिया गया है। कविवर के हस्ताक्षर व उनकी रचनाओं की प्रति के अन्तिम पृष्ठ का ब्लाक बनवा कर इस ग्रन्थ में प्रकाशित कर रहे हैं ताकि उनकी व उनके गुरु की अक्षरदेह के दर्शन हो सकें।

यह पुस्तक जिस रूप में प्रकाशित हो रही है उसका

स्त्रियों की कमबख्ती उसका सारा धन नष्ट हो गया। एक बार चोरों द्वारा वस्त्र छूटे हुए चार मुनिराज उसके गाँव में आये जो ठण्ड के मारे कांप रहे थे। धनदत्त कृपालु था उसने उन्हें वस्त्र दान दिया चारों स्त्रियों ने भी इस दान की बड़ी अनुमोदना की उसी के प्रभाव से तुम्हें चार महाराज्य मिले। एक बार किसी भव में तुमने मुनियों के मलिन शरीर को देखकर मच्छ जैसी दुर्गन्ध बतलाई जिसके कारण तुम्हें मच्छ के पेट में तथा धीवर के घर रहना पड़ा। इस भव से हजारवें भव पूर्व तुमने शुक को पिंजड़े में बन्द किया था उसी कर्मों से तुम्हें शुक होना पड़ा। अनंगसेना ने पूर्वभव में अपनी सखी को शृंगार सजी हुई देख कर वेश्या शब्द से संबोधित किया जिसके कर्मोदय से वह वेश्या हुई।

राजा उत्तमकुमार अपना पूर्व भव सुनकर वैराग्यवासित हो गया। उसने अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर चारों स्त्रियों के साथ संयम ले लिया। फिर निर्मल चारित्र पालन कर अनशन आराधना पूर्वक चार पल्योपम की आयुवाला देव हुआ। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सिद्ध बुद्ध होंगे।

कवि विनयचन्द्र ने सं १७५२ में पाटण में चारुचन्द्र मुनि कृत संस्कृत उत्तमकुमार चरित्र के आधार से यह रास निर्माण किया है। हमारे अभय जैन ग्रन्थालय में इसकी चारुचन्द्र गणि द्वारा स्वयं लिखित प्रति विद्यमान है जिसके अनुसार यह चरित्र बीकानेर में ५०८ श्लोकों में प्रथमाभ्यास रूप में बनाया है कवि

अनुक्रमणिका

कृति नाम		आदि पद	पृष्ठाङ्क

चौबीसी

वास्तविक श्रेय राजस्थानी और जैन साहित्य के यशस्वी विद्वान सादूल राजस्थान रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर पूज्य श्री अगरचन्दजी नाहटा जैन इतिहासरत्न का है जिनकी सतत चेष्टा और प्रेरणा से शताब्दियों से ज्ञानभंडारों में पड़े हुए ग्रन्थ प्रकाश में आ रहे हैं। मेरी समस्त साहित्य प्रवृत्तियों के तो वे ही सर्वेसर्वा हैं अतः आत्मीयजनों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता। आशा है प्रमाद व उपयोगशून्यता वश रही हुई भूलों को परिमार्जन करके विद्वान पाठकगण अपने सौजन्य का परिचय देंगे।

—भंवरलाल नाहटा

अनुक्रमणिका

कृति नाम		आदि पद	पृष्ठाङ्क

चौबीसी

विनयचन्द्रकृति कुसुमाञ्जलि—

कविवर के गुरु उ० ज्ञानतिलक लिखित कवि विनयचन्द्रकृति संग्रह प्रति का अन्तिम पत्र

विनयचन्द्रकृति कुसुमाञ्जलि

चतुर्विंशतिका

॥ श्रीऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—महिंदी रंग लागौ

आज जनम सुकियारथउ रे, भेट्या श्रीजिनराय।
प्रभु सुं मन लागौ, खिण इक दूरि न थाय॥ प्र०॥
सुगुण सनेहा माणसां रे, जोरइ मिलियइ आय। प्र० ॥१॥
नयणे नयण मिलायनइ रे, जिम मुख रहीयइ जोय। प्र०।
तउ ही तृप्ति न पामियइ रे, मनसा विरुणी होय। प्र० ॥२॥
मानसरोवर हंसलउ रे, जेम करइ मनकल्लोल। प्र०।
तिम साहिब सुं मन मिल्यउ रे, करइ सदा कल्लोल। प्र० ॥३॥
हीयड़ा मांहि जे वसइ रे, वाल्हा लागइ तेह। प्र०।
जउ बीजा रूपई रूड़ा रे, न गमइ तौ सूं नेह। प्र० ॥४॥
रसरूपे गुण मकरंद मउ रे, चतुर भमर वसि तेह। प्र०।
जे जण जण सरिखा हुवइ रे, स्युं जाणइ रस भेय। प्र० ॥५॥
पाम्यउ मंइ निश्चय कियउ रे, पलक न मेल्हूं पास। प्र०।
आदर सेवा मां रह्यां रे, फलस्यइ मन नी आस। प्र० ॥६॥

मीठा अमृत नी परइ रे, अनुपम जिनेश्वर संग। प्र०।
'विनयचन्द्र' पामी करी रे, रातउ रस भरि रंग। प्र०॥७॥

॥ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥

ढाल—हमीरा नी

साहिब एहवउ सेविवइ सुगुण सरूप सनेह सजनजी।
मिलतां ही मन ऊल्हसै बीठां थाभइ देह सजनजी॥१॥ सा०।
सेवक थाउ किहां थकी जिण मांहे हुवे स्वाद। स।
स्वाद विहूणा छोडिवइ रालेवा मरजाद सजनजी॥२॥ सा०।
समय चतुर इण रीत नों तउ पिण अजित प्रमाण। स०।
मुक्ताइ प्रभु तेहवउ मिलीयो महज सुरंग सुजाण। स०॥३॥सा०।
कर्मा सें मन पहिली हुंतउ, ते तउ देव कुदेव। स०।
कंचन नइ वलि कामिनी ते जीत्या नितमेव। स०॥४॥सा०।
ए निर्जित इण वात मों रिद्धि तणी भरपूर सजनजी।
दर्प हतउ कंदर्प नउ, ते पणि टाल्यउ दूर सजनजी॥५॥ सा०।
सुगति वधू रस रागियउ, ज्योतिमय वसुधार सजनजी।
पंरा महारू महारू गुणे अजित विजित रिपुवार।स०॥६॥सा०।
'विनयचन्द्र' प्रभु आगलें, कर्म करी करी नीम सजनजी।
सेगि वस्या गर्भइ गस्या जिम पाइण गढ हीम स॥७॥ सा०।

॥ श्री संभव जिन स्तवनम् ॥

ढाल—नगरा मारूजी रे हो

स्वस्तिश्री गर्जित भयवर्जित त्रिभुवनतर्जित
सकल जीव हितकामी रे हो। म्हारा साहेसर जी रे हो॥

ते शिव बधिर अनुभव मन्दिर सद्गुण सुन्दर
सिहां वसइ संभव स्वामि रे छो ॥ मा० ॥ १ ॥
सिण दिसि लेख लिखइ प्रेमातुर चित नउ चातुर
चातुर प्रेम प्रयासइ रे छो । मा० ।
प्रभु नइ प्रीति प्रतीत दिखाली रीति रसाली,
पाली सेवक मासइ र छो ॥ मा० ॥ २ ॥
सुगुण सनेही अरज सुणीजइ सुनिजर कीजइ
कीजइ परम उमाही र छो । मा० ।
मुझ चित्त माहें प बइ चटकउ तुझ मुख मटको
लटको दीसइ मोही र छो । म० ॥ ३ ॥
तु तउ मोसुं रहइ निरालउ, माया गालउ,
इम टालउ किम कीजइ रे छो ॥ मा० ॥
पोतानउ सेवक जाणीनइ हित आणीनइ
चित ताणी नइ मीजइ रे छो । म० ॥ ४ ॥
निगुण थयो तउ नेह न थापइ मन थिर थापइ,
सउ आपइ नयि मोसुं रे छो । मा० ।
वात कहुं वैयाले वयणे विकसित नयणे
गुण रयणे जस मोसुं र छा । मा० ॥ ५ ॥
कहतां कहतां मोहन वाधइ मोह न बाधइ
साधइ कारिज तेही र छो । मा० ।
मौन करइ जे मननी छाँतइ चक दृष्टान्ते
भ्रान्तइ रहत सनेही रे छो । मा० ॥ ६ ॥

समाचार इण मांतइ सांची विरुमाइं राची,
माची कृपा करेज्यो रे को । मा० ।
'विनयचन्द्र' साहिब तुम्ह आगे मांगै रागैं
सुख भंडार भरेज्यो रे को ॥ मा० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन स्तवनम् ॥

ढाल—नथरी दिल्ली मन लागो

हरि मोरा लाल थिर कर रह्यो सालु मानक
थिर जोइनइ धम धंम मोरा लाल ।
अभिनन्दन चंदन थकी अधिक परइ सोरंभ मोरा लाल ॥१॥
तिण साहिब सुं मन मोह्यो
हरि सुगुणा साहिब सुं मन मोह्यो ॥ आंकणी ॥
हरि मोरा लाल चंदण नी तो वासना
रहइ एक वन अवगाह ॥ मो० ॥
प्रभुनी प्रगट उपासना सबदै त्रिभुवन मांह ॥ मोरा ॥ २ ॥ ति० ॥
हरि मोरा लाल ताप संताप करइ सदा पास्यौ चंदन घेर ॥मो०॥
मोरा साहिब आगलइ सुरनर हुआ जेर ॥ मो० ॥३॥ ति ॥
चंदन विरहण नारीयां तपति सुभावइ देह ॥ मो० ॥
पाप ताप दूरइ हरइ श्री जिनवर ससनेह ॥ मो० ॥४॥ ति ॥
चंदन तरुवर अवर नइ, करइ सरस सुभ गंध ॥ मो ॥
विषय अंध मानव मणी जिन तारइ भवि सिंधु ॥मो०॥५॥ति०॥
चंदन फल्ल हीणौ हुवइ मंदम वन जसु वास ॥ मो ॥
इक कारजि प्रभु मौ मिलइ, फल्लइ अपंता आश ॥ मो ॥६॥ति०॥

परतखि जाणि पर्दतरउ, मनथी प्रमु मत मेल्हि ॥ मो० ॥
'विनयचन्द्र' पामिस सही, निरमल जस रस रल्हि ॥मो०॥श्रावि०॥

॥ श्रीसुमतिजिन स्तवन ॥

ढाल—वात म काढो व्रत तणी

सुमति जिनेश्वर सांभळो, माहरा मननी वातां रे।
तुं सुपना मांहि मिलइ, खबर पड़इ नहीं जातां रे ॥१॥सु०॥
पिण हिव अवसर देखिनइ, धम जागरिका धरस्युं रे।
प्राण सनेही जाणिनइ, तुमस्युं मगड़ो करिस्युं र ॥२॥सु०॥
मे हित अहित न जाणिस्यइ, पर ना अवगुण लेस्यइ रे।
तिण सुं कुण मुंह मेलिस्यइ कुण अंतर गति देस्यइ रे ॥३॥सु०॥
लिख मर जे वाजे नहीं तेहनइ गुण कहीजे रे।
तुं तउ जाण प्रवीण छइ, माहरी बांह ग्रहीजइ रे ॥४॥सु०॥
मइ भव ममतां दुःख सह्यां ते तउ तुं हिव जाणइ रे।
जे छद्मस्थ नर हुवइ मुहडइ केम वखाणइ रे ॥५॥सु०॥
इम जाणीनइ हित धरउ मुझनइ दुत्तर तारउ रे।
स्युं जायइ छइ ताहरो वाल्हा हृदय विचारो रे ॥६॥सु०॥
बीजा किण्हही ऊपरा मोलइ ही मति रायइ रे।
मननी इच्छा पूरस्यइ, 'विनयचन्द्र' प्रभु साचइ रे ॥७॥सु०॥

॥ श्री पद्मप्रभु स्तवनम् ॥

ढाल पोअपुरीनी

पद्मप्रभु स्वामी हो माहरी अरज सुणो तुमे अतरजामी हो
जिनवर आइ मिळो ॥१॥

तुं तौ पदम तणी परइ हो परिमल प्रगट करइ
मुझ मन मधुकर धरि हो ।।जि०।।२।।
बलि तुं इम जाणिसि हो, पदम दुवइ जिहां
आवइ मधुकर अहिनिशि हो ।।जि०।।३।।
पिण पदम सवायउ हो, सरवर माहिं रह्यौ
वेधइ कीटायउ हो ।।जि०।।४।।
तिहां चित्त न लीमइ हो जस अति ऊजलउ
समरउ इम लोचइ हो ।।जि०।।५।।
तिम तइ कमलाकरि हो सिद्ध पद पामयौ
शिव वेलि सुहंकर हो ।।जि०।।६।।
विधि नवजल चोलइ हो 'विनयचन्द्र' किम आवइ,
हिव किणि इक बोलइ हो ।।जि ।।७।।

।। श्रीसुपार्श्वनाथ स्तवनम् ।।

ढाल—चाल्नइ विराजइ हो हवा माइ लोयकी

सहज सुरंगा हो चंगा जिनजी साभलौ
विनय तणा जे वयण।
हुं तुम्ह चरणे हो आयौ ध्यायौ हेज सुं,
माचौ वाणी सयण ।।१।।
मूरति गोरी हो चित्त चोरी नइ रही
वसियकरण कियौ कोइ।
रंग दिखाडइ हो टाढइ ते हुस आपणौ
ते गुण रसिया जोइ ।।२।।मूरति।।

अंतरजामी हो सामि ते मन वेधियउ,
प्रगट्यउ प्रेम प्रमाण।
मैं इकतारी हो कीधी थारी चाकरी,
तुं हिव जीवन प्राण॥३॥मू॥

पिण मोसुं मायइ हो प्राणे ही तु नेहलउ
एक पखी थइ प्रीत।
नीर अमावइ हो जिम दुःख पावइ माछली
नीर लहइ नहीं चीत॥४॥मू०॥

चलि इम वाण्यौ हो ताण्यौ तूटइ साहिबा
हृदय विचारी दीठ।
आप निरागी हो प्रभुसुं हासी मे करउ,
ते तू फल प्रापति छइ मीठ।५॥मू॥

मोक्षग चाहइ हो छोरी जाइइ कारणइ
अन्य उपरि रहै लीण।
वाचा न काचा हो मे तुम्हनइ कहइ,
ते मूरख मतिहीन॥६॥मू०॥

हूं गुणरागी हो रागी सेवक ताहरउ,
साहिब सुगुण सुपास।
भेद न राखइ हो भाखइ कवियण भावसु
'विनयचंद' सुविलास॥७॥मू०॥

॥ श्रीचन्द्रप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—आधा आम पधारो पूज अमघरि विहरण वेला

चन्द्रप्रभु नइ चन्द्र सरीखी कान्ति शरीरइ सोहइ।
मोहनउ रूप अनूप निहाळी, सुरनर सगळा मोहइ ॥१॥
तिणसुं मो मन मिळियउ राज साकर दूध तणी परइ ॥आंकणी॥
पिण सकलंकित चन्द्र कहावइ, अकलंकित मुझ स्वामी।
ते तउ अमृत रस नइ धारइ प्रभु अनुभव रस धामी ॥२॥ति०॥
तेहना सन्मुख चपळ चकोरा प्रसरत नयणे जोवइ।
प्रभु दरसण देखण जग तरसै प्रापति विण नवि होवइ ॥३॥ति०॥
चन्द्रकळा ते विकळा जाणो घटत वधत मइ देखइ।
साहिब मइ तउ सदा सुरंगी वाधइ कळा विशेषइ ॥४॥ति०॥
निशिपति नारी मोहनगारी रोहणि मइ रंग* रातौ।
प्रभु करणी परणी तजि तरुणि अद्भुत गुण करि मातौ ॥५॥ति०॥
राहु निसत्त करै ग्रसि तेहनइ जाणो ए नो फूंमो।
तेहज राहु जिनेसर सेवा करइ सदाइ झूमो ॥६॥ति०
सीस नामता देवाधिपती शशिहर पदवी जाणी।
'विनयचन्द्र' प्रभु चरणे लागो लंछन नइ मिश आणी ॥७॥ति०॥

॥ श्री सुविधिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—बिंदलीनी

सुविधि जिणंद तुम्हारी मोनइ सूरति लागै प्यारी हो ॥
जिनवर अरज सुणौ ॥

---

* रत।

अरज सुणो गुण मेला,
कोकिला यइ फिर फिर मेला हो ॥१॥ जि० ॥
अवसर विन कुण किणि पासइ,
आवे मनइ उल्लासइ हो ॥ जि० ॥
जिम कोइल पवनइ प्रेरी
आवइ तजि ठौड़ अनेरी हो ॥२॥ जि०॥
वलि ठोक कूकइ कण सूकइ,
अवसर वो अवसर चूकइ हो ॥ जि० ॥
पछै घोर घटा करि आवे
तेह केहना मन मां भावइ हो ॥जि०॥३॥
तिम अवसर साधउ स्वामी,
तमे मोहन मूरति पामी हो ॥ जि० ॥
तेहनउ फल मुझनइ दीजै
करि मंदिर सुतारथ कीजै हो ॥ जि० ॥४॥
आम आप स्वारथ मीठौ
मइं माच वचन प दीठउ हो ॥जि०॥
जिम तरुवर छोड़इ पंखि
फल फूल न देखइ अखि हो ॥ जि० ॥५॥
निजल सर सारस मूकइ
दृष्टान्त इत्यादिक सूझइ हो ॥ जि० ॥
जिम ते मुझ मनमां भावइ
इक गुंदिज सदा सुहावइ हो ॥ जि० ॥६॥

तुम्हची कृपा मुमनइ मान्दुं,
　　हुं तउ तुमहिज ऊपरि मास्‍दुं हो ॥ जि० ॥
सामइउ जोबउ बहु लोबह
　　कहइ विनयचन्द इण मांतइ हो ॥जि ॥७॥

॥ श्रीशीतलजिनस्तवन ॥

राग—येमवती रे बांमणी पहनी

अरज सफल करि माहरी, शीतलनाथ सनेही रे।
थोड़ा मां समजै घणुं साचा साजन तेही रे ॥ १ ॥ अ० ॥
तुम बिन मननी वातड़ी, केहनइ आगल कहियइ रे।
पासइ रहि सीखावियइ तउ प्रभु सोइ न लहीयइ रे ॥ २ ॥अ०॥
तिण मेल्ह्यो छे तुम भणी जिम मन मां सुख थायइ रे।
जउ चिन्ता चित्त राखीयइ, दिवस दुहेलउ जायइ रे ॥ ३ ॥अ०॥
तें मम जीवत हेरिनइ, जिम भावै तिम कीजइ रे।
कहतां लागइ कारिमउ, अनुमानइ जाणीजइ रे ॥ ४ ॥ अ० ॥
जनम लगइ हिव माहरउ, तुं छइ अन्तरजामी रे।
निज सेवक जाणी करी कमिमे बाल्हा स्वामी रे ॥ ५ ॥ अ० ॥
बीजउ सहु दूरइ रहउ, जउ फरइं तुम छाया रे ॥
तउ अगणित सुख ऊपजइ, उल्हसइ माहरी काया रे ॥ ६ ॥ अ० ॥
मार्गे ही नवि पहुंचियइ तेहनइ दुरख समीजै रे।
'विनयचंद्र' कहै तेहनउ, तउ कांइक मन भीजै रे ॥ ७ ॥ अ० ॥

॥ श्रीश्रेयांस जिन स्तवनम् ॥

ढाल—राजमती हैं मारा मनड़ी मोहियो हो लाल, एहनी

जिनजी हो मानि वचन मुझ ऊपरइ हो लाल,
महिर करी श्रेयांस वालेसर।
लेख चतुगति मां फिर्यौ हो लाल,
चाकी जिण परि पांस। वा० ॥१॥
पिण तुमनइ नवि मोभर्यो हो लाल
मइ तउ किण ही वार ॥ वा० ॥
हिव अनुक्रमि तुमनइ मिल्यउ हो लाल,
इहां नहीं भूठ लिगार ॥ वा० ॥२॥
देखि स्वरूप समाय नउ हो लाल,
मय आप निलमेष ॥ वा० ॥
पिण जाणुं छुं ताहरी हो लाल
माटी आवै सेव ॥ वा० ॥३॥
सेव करइ त स्वारथइ हो लाल,
लछमी ताहरउ चित्त ॥ वा० ॥
माट दिया थी मल्हिनइ हो लाल
तुं देज्यो नित नित ॥ वा० ॥४॥
कर जोड़ी मुझ आगन्य हो लाल
कहियइ वारंवार ॥ वा० ॥
तउ ही तुं न करइ मया हो लाल
ग्यानइ मान आपार ॥ वा० ॥५॥

कठिन हृदय थइ ताहरउ हो लाल
वज्र थकी पिण जोर ॥ वा० ॥
मन हटकी नइ राखिस्यइ हो लाल
करस्यइ कवण निहोर ॥ वा० ॥६॥
आप शरम जउ चाहस्यइ हो लाल,
नवि देस्यइ मुझ छेह ॥ वा० ॥
भवसायर थी तारस्यौ हो लाल,
'विनयचन्द्र' ससनेह ॥ वा० ॥७॥

॥ श्रीवासुपूज्य स्तवनम् ॥

ढाल—बधावानी

श्री वासुपूज्य जिनेसर ताहरी
ओलग हो २ मंइ कीधी सही जी।
हिव आशा पूरउ प्रभु माहरी
नहिं तरि हो २ तुझ मइ मेल्हिस्यइ नाही जी ॥ १ ॥
तुझ सारखउ कोई और न चाकउ,
तउ पिण हो २ आडौ मांडिस्युं जी।
इम करतां जउ तुं वछित मानइ,
तउ त्यारे हो २ तुझनइ छांडस्युं जी ॥ २ ॥
हिवणां तउ हुं छुं वाल्हा तारै जी सारै,
कहिस्यौ हो २ काजौ नहीं पढे जी।
मोह मयानी जे लाज वधारै,
प्यारा हो २ नर थोड़ा आवै जी ॥ ३ ॥

जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी
जेहवी हो २ बादल केरी छांहडी जी।
जेहवी मित्राई भेषधारी नी,
तेहवी हो २ कापुरषां री बांहडी जी ॥ ४ ॥
पिण तुम्हे सगुण सापुरिस सवाई,
पाई हो २ बांहडली मइ तुम तणी जी ॥
सफल करउ जिनवर चित लाइ
मीनति हो २ सी करियइ घणी जी ॥ ५ ॥
शिव सुख फल तुम्ह पासइ चाहूं
तुं हीज हो २ सुरतरु मोरियउ जी।
आस वधावउ वाणी मन में समाहु
दु दुजा हो २ प्रेम अंकूरियउ जी ॥ ६ ॥
अधिकउ तउ बोलउ सेवक मापइ नइ भाखइ,
साहिब हो २ तेह सदा गमइ जी।
विनयचन्द्र कवि कहइ तुम्ह पाखइ,
किमसु हो २ माहरउ मन रमइ जी ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—चतुर सुजाणा रे मीता मारी

विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप।
मनड़ो विलूधौ र ताहरे रूप जेम विलूधौ रे कमल मधूप ॥आं०॥
ताहरा रूप मांह कांई माहनो मिलवानी धइ धूप ॥ १ ॥ म ॥

वसीकरण छइ स्यु तुम पासइ, अथवा मोहनबेलि ॥म०॥
साच कहो ते अवर रमाली जिम थायइ रंग रेलि ॥ म० ॥ २ ॥
कहिस्यउ नहीं तउ मइ पिण सुणीयउ लोक तणइ मुख वाम ॥
मोहन रूप समो नहीं कोई वसीकरण नउ ठाम ॥३ म० ॥
एहिज कारण साचउ आणी, लागौ तुम सुं नेह ।
ताहरी मूरति चित्त मां चहुटी, छिण न छिसइ नयणेह ॥४ म०॥
पिण फल तुम मइ न मयउ कांइ अमरप आवै तेह ।
फलदायक तौ तेहिज थायइ जे गिरुआ गुण गेह ॥ ५ म० ॥
वलि विस्मय मन मांहें आणी मंइ मक्षियउ सन्तोष ।
साकर मां कांकर निकसइ ते साकर नौ नहीं दोष ॥ ६ म० ॥
कुसुम साहिब तूं कुसनउ दाता निर्मल बुद्धि निधान ।
विनयचन्द्र' कहइ तुम्हनइ आपौ, मुगतिपुरी नउ दान ॥ ७ म ॥

॥ श्री अनन्तनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—पंथीड़ा नी

एक सबल मन मैं चिन्ता रहै रे,
न मिल्यउ साहिब जीवनप्राण रे ।
श्वास तणी परि तुम्हनइं सांमरे रे,
जिम चकवी केरइ मन माण रे ॥१ ए० ॥
पिण ते शिवमन्दिर मांहे वसै रे,
कागल मात्र न पोंचै कोइ रे ।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराजनी रे
संदेसे ओल्मा किम होइ रे ॥ २ ए० ॥

देव अवर सूं कीजइ प्रीतड़ी रे
जिण इक आवइ मन मां द्वेष रे।
गुण जाणइ तउ स्वाद नहीं किसउ रे,
चुप करि रहियइ तिण सुविशेष रे ॥३ प०॥
मोह आपणनइ जाइइ दूरथी रे,
धरियइ दिन प्रति तेहनउ ध्यान रे।
आडंबर देखी मवि राचियइ रे,
ए इइ चतुर पुरुष नइ ज्ञान रे ॥४ प०॥
मुँह मीठा पीठा हीयइ घणा रे,
निगुण न पाळै किण सुं नेह रे।
अवगुण महिमा थायइ आगला रे,
काम पड्यां दाखो छेह रे ॥ ५ प०॥
ते टाळी मिळियइ सुगुणा भणी रे,
जे जाणइ सुख दुखनी बात रे।
सुपनइ ही नवि करियइ वेगळा रे,
ज्यांहनइ दीठां उल्हसै गात रे ॥ ६ प०॥
नाथ अनंत भवे नवि वीसरइ रे,
जे ससनेही सगुण सुरंग रे।
प्रभु सुं जिनचन्द्र करे माहरौ रे,
लागो चोल तणी परं रंग र ॥ ७ प०॥

॥ श्री धर्मनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—धान् काठा दे गोहूँ पीवाय मायन भास्यु मासरइ, सोनार मणइ

वाल्हा सुणि हो मुझ अरदास, मइ अभिलाष इसउ धर्यो,
मोसुं महिर करउ।
वाल्हा कहुँ हो मननी भास,
जे तुझ आगइ पवगयौ ॥ मो० ॥१॥
वाल्हा तुं तउ हो परम प्रवीण
पर उपगारी परगडउ ॥ मो० ॥
वाल्हा तुम्हनइ हो देखी दीण
सेवक करिसइ सेवकउ ॥ मो० ॥२॥
वाल्हा स्युं कहुं माहरउ हो मुक्ख
मंइ पगि २ लही आपदा ॥ मो० ॥
वाल्हा टालउ हो ते सहु दुक्ख
सुख आपौ अविचल सदा ॥ मो० ॥३॥
वाल्हा पूरवइ हो परषद मांहि,
परम देशना तूं दियइ ॥ मो ॥
वाल्हा सगले हो सुणि रे उमाहि
मई न सुणी इक पापियइ ॥ मो० ॥४॥
वाल्हा लागौ हो नहीं उपदेश
छांट पडइ जिम चीगटइ ॥ मो ॥
वाल्हा सेवउ हो न्याय अनेस
कर्म अरि क्यो किम कटइ ॥ मो० ॥५॥

हरि साथा सूँ रसियउ वातां सणी,
सुणिते नवि थे को जवाब रे लाल।
मन मिलीयां बिन प्रीतड़ी
कहो नइ किम चढ़ियइ आब रे लाल॥ ५मा ॥
हरि लाल निज पल तरवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल।
पर उपगारइं धाम ते हुँ पिण जिनजी हुइ तेम र लाल ॥६ मा०॥
घणुं र कहिये किस्युं, करिजे मुझ आप समान रे लाल।
रयणि दिवस ताहरउ धरइ,
कवि विनयचन्द्र' मन ध्यान रे लाल ॥७ मा०॥

॥ श्री कुंथुनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ईडर आंबा आमली रे

बहु दिवसां थी पामियो रे, रतन अमोलक आज।
जतने करि हुं राखसुं रे, जगवल्लभ जिनराज ॥१॥
मोरउ मन लागउ राग अथाग मइ तउ पाम्यउ वारू लाग।
माहरउ जइपिण मोटउ भाग करस्युं भवसागर त्याग ॥मो०मो०॥
अणमिलियां हुं आणतउ रे, जिनवर केहवा होय।
मिलियां थी सुख उपनइ रे मन जाणइ छइ सोय ॥२ मो ॥
मइ साहिब ना गुण ग्रह्मा रे आणो पूरण राग।
कोइल आंबा गुण लहे रे, पिम स्युं जाणे काग॥३ मो ॥
जे वेधक सहु वातना रे, गुण रस जाणइ सारा।
मूरख पशु जाणइ नहीं रे सेलड़ी केरउ मिठास ॥४ मो० ॥

प्रभुनी मुद्रा देखिनइ रे, मुझनइ थइ रे निरान्ति ।
हिव सेवा करिवा तणी रे, मनड़ा मइ थइ खान्ति ॥ ५ मो० ॥
नेह अकृत्रिम मई कियउ रे, कदे न विहडइ तेह ।
दिन २ अधिकउ ऊमटइ रे, जिम आषाढ़ो मेह ॥ ६ मो० ॥
एक घड़ी पिण जेहनइ रे बीसार्यौ नवि जाय ।
विनयचन्द्र' कहइ प्रणमियइ रे, कुन्थु जिनेश्वर पाय ॥७ मो०॥

॥ श्री अरनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—मोतीनी

तुझ गुण पंकति वाड़ी फूली,
मुझ मन भमर रह्यउ तिहां भूली ।
साहिबा कांइ मउज करौ मइ
साहिबा कांइ मउज करउ ॥ आंकणी ॥
मउज करउ कांइ अंग सुहावा
सुणि सुणि नै दिलवाली वातां ॥१॥सा०॥
तुझ पद कज केवकी मइ पाई,
तसु आवे खुशबूह सवाई ॥ सा० ॥
मालन मास मालती महके
गन्धानी संगति करि गहकइ ॥२॥सा ॥
सुघ महमहउ कमल विकास्यौ
समवासरण मकरंदह वास्यउ ॥ सा ॥
चित्त उदार ते चंपक जाणौ
दिल गंभीर गुलाब वखाणौ ॥सा०॥३॥

कुंद अनै मचकुंद विलासी,
कलि कीरति उज्वल प्रतिभासी ॥सा०॥
पाडल प्रीति प्रतीत प्रबोधइ,
मरुक दमण सज्जन गुण सोधइ ॥सा ॥३॥
केवलज्ञानी परि तुं उपगारी,
फूल अमूल गुणे करि धारी ॥सा०॥
फल सहकार सकारइ फावे
द्राखते दूंपनी रेखनइ दावे ॥सा०॥४॥
वलि संतोष सदाफल सवली
करुणा रूप सुकोमल कदली ॥सा०॥
नारंगी ते प्रभु निरागइ,
जंभीरी युगत करि आगइ ॥सा ॥५॥
फूल अनइ फल इत्यादिक छे
प्रभु ना गुण इण मांहि अधिक छइ ॥सा०॥
नही शिव पोखणि ते तुम्ह आगइ,
श्री अरनाथ विनयचंद मांगइ ॥सा०॥६॥

॥ श्री मल्लिजिन स्तवनम् ॥

ढाल—राजिमती राणी इण परि बोलइ

मल्लि जिनेसर तुं परमेसर,
तुम्ह मइ सुरनर चर्चित केसर ॥म०॥
तुम्ह सरिखा ते पुण्ये लहिये
देखी देखी मन गह गहीयइ ॥म०॥१॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनम् ॥

ढाल—मोकूनी

मुनिसुव्रत मन माहरौ जी, लागौ तुम लगि प्रेम ।
पिण तुं मीट न मेलवै जी, ए मत दुक्कर नेट ॥१॥
जिनेसर बणस्यै नहीं इम वात ॥ आंकणी ॥
मुझ स्वभाव छै तामसी जी रहिन सकइ तिण मात ॥२॥जि०॥
हुं रागी पिण तुं अछइ जी नीरागी निरधार ।
मावै नहीं इक म्यान मइ जी सीली दोइ तरवार ॥जि०॥३॥
चाजपणउ मइ आणीयउ जी, जिनवर ताहरौ आज ।
तक उपर आव्यउ हतो जी हैं नवि राखी लाज ॥४॥जि०॥
जे लोभी मुझ सरिखा जी वंछित नापइ रे अन्त ।
मुझ सरिखा जे लालची जी लीधां पिण न रहंत ॥५॥जि०॥
एह अणमल छे आपणौजी सदा न बणस्यै रे एम ।
करि मुझ नइ रागी हिवै जी जिम थायइ बहु प्रेम ॥६॥जि ॥
तुं मुझ नइ नवि ओलखइ जी, देखी सेवक वृन्द ।
तारा तेज करै नहीं जी विनयचन्द्र विण चन्द्र ॥७॥जि०॥

॥ श्री नमिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—मामाजी हो दूसरिया हरिया हुवा

साहिबा जी हो तुं नमि जिनवर जगधणी
सरणागत साधार म्हांरा साहिबा जी ।
पुण्य संयोगइ ताहरउ
मैं दीठउ दीदार म्हां सा० ॥१॥

चतुरपणानी ए कइ चातुरी,
मिलीयइ तुम्ह नइ धाय म्हां० ।
सा० सो तुं चित चिन्ता हरै,
बादल नइ जिम वाय ॥ म्हां० ॥२॥ च० ॥
सा० प्रीति हुवइ जिहां प्रेम नी,
उपजइ तिहां परतीत म्हां० ।
करि करि नइ सुं कीजियइ
प्रेम विहूणी प्रीति म्हां ॥ ३ ॥ च० ॥
दैव अधर मीठा मुखे,
हृदय कुटिल असमान म्हा० ।
जाणि पयोमुख संभवा,
ते विषकुम्भ समान म्हां० ॥ ४ ॥ च० ॥
सा० इम जाणी मन ओसर्यो,
पाम्यौ स्यांमी भेट म्हां० ।
फेटि निगुण नी टलि गई
थई सुगुण नी भेट म्हां० ॥ ५ ॥ च ॥
इतला दिन मन मां हुतउ,
उदासीनता भाव म्हां० ।
ताहरउ मिलियइ ते गयउ,
सत्तिरण तजि निज दाव म्हा० ॥६॥ च० ॥
मइ तुम्ह सेवा आदरी
दोइ रहउ तुम्ह दाम म्हां० ।

जिम सुरतरु फल चाखियउ
कुफल गमइ नहीं तास म्हां० ॥ ७ ॥ च० ॥
तुं कहिरावइ मो मणी,
तारि तारि करतार म्हां० ।
विनयचन्द्र नी वीनति
हिव धरी नइ अवधार । म्हां० ॥८॥ च० ॥

॥ श्री नेमिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—रूमी राजुलरे राणी अरज करै छै

थांहरी तौ मूरति जिनवर रागै छइ नीकी
शिवसुन्दरि सिर टीकी हो ।
राणी शिवादेवीजी रा जाया
नेमजी अरज सुणीजै ।
अरज सुणीजै काई करुणा कीजै
म्हांनइ मुजरौ दीजै हो ॥१॥रा०॥
ते दिन वाल्हा मुझनै कदियइ आस्यै
तुम थी मेळौ थास्यइ हो । रा० ।
अंतर तुम्हारउ माहरउ दूरइ नसस्यइ
अंगइ सुख रूपजस्यइ हो ॥२॥रा ॥
दिवणा तउ तुमनइ हियड़ा महि धारूं
इण भांतइ दिल ठारूं हो । रा० ।
आखर ये पिण समझदार सनेहा
नवि दाखविस्यौ छेहा हो ॥३॥रा०॥

जे तुम सेती प्रेम प्रयासइ श्री विलगा
ते किम टलस्यै अलगा हो। रा०।
प्रीति लगास्यइ ते तउ जिम रंग मजीठी
पड़े नहीं जो फीकी हो ॥४॥रा०॥
प्राणपियारा साहिब थे छउ श्री म्हारे
मुझ नइ छइ तुम्ह सारे हो। रा०।
इम जाणी नइ प्रत्युपकार करंता
राखौ यौ सी चिन्ता हो ॥५॥रा०॥
स्युं कहुं कीरति राज तुम्हारी
तुमे छउ बाल ब्रह्मचारी हो। रा०।
राजुल नारी ते विरहागर भारी
पोतानी कर तारी हो । रा० ॥६॥
कहियउ श्री म्हारो अवधेसर अवधारउ,
हुं छूं दास तुम्हारो हो। रा०।
विनयचन्द्र प्रभु तुमे परवाई
मउज सवाई पउ काइ हो। रा०॥७॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—इण रिति मोनइ पाछली सांभरइ

जिनवर जलधर उलट्यौ सखि बयण बरसे मेह।
जेहनइ आगममइ करी सखि रूपस्यौ प्रेम अछेह रे॥
नर नारी चातक मेह रे ठाढो मइ सहुनी देह रे।
पसर्यो चित भुइ मइ नेह रे, उपसम जल कंदल लेह रे॥१॥

पद्धवा म्हरि पास जी मन बसइ ॥ आँकणी ॥
वाणी ते हिव जिण सजी सखि गुहिर घटा घन घोर।
ज्योति मकूके बीजली सखि ए आडम्बर कोइ और रे।
प्रमुदित भविजन मोर रे, पिण नहीं किहां कुमति चोर रे।
कंदर्प तणो नहीं जोर रे, अन्धकार न किण ही कोर रे ॥१॥प ॥

महिर करइ सहु ऊपरइ सखि लहिर पवन नी तेह।
सुर असुरादिक आवतां सखि पीळी थइ दिशि जेह रे ॥
जाणे कुटज कुसुम रज रेह रे, जिहां धम ध्वजा गुण गेह रे।
ते तउ इन्द्र धनुष वणेह रे अभिनव कोई पावस एह रे ॥
इम निरखै सहु नमणेह रे ॥२॥प ॥

चतुर पुरुष चातक तणी सखि मिट गई तिरस तुरन्त।
हरिहर रूप नक्षत्र नउ सखि नाठउ तेज नितन्त रे ॥
थमक दुरित जवासक अन्तरे, मुनिवर मधुकर हरखंत रे।
जिहां विचरमान भगवन्त रे, विकसित त्रभ भुवन वनंत रे॥३॥प ॥

सुर मधुकर आलंबिया सखि पदि कोमल अरविन्द।
विरही जेह कुमरांमी सखि पावइ दुख नइ दन्द रे ॥
मुद्ध थी विरम्यां राजिन्द रे, हरिया यथा सुगुण गिरिंद रे।
विकसति मति सरति अमंद रे, पल्लवित वेलि सुख कन्द रे ॥
फेलाया सगळाई फंद रे ॥४॥प०॥

फिर फिर फिर फिर मन करइ सखि नावइ किम ही थाह।
प्रतिबोधित जन जेहवा सखि ज्यइ वगि जिण माँ काह रे ॥

हंसा सर सामरियाइ रे, ते जन घरे मुगतिनी चाह रे।
तिहां दीसइ रतन घणाहरे आणे नवल ममोला चाह रे ॥६॥ प०
जीवदया जिहां जाणियइ सखि नीली हरी भरपूर।
वीज तणइ रूपइ भली सखि प्रगम्यउ पुण्य अंकूर रे ॥
दुख दोहग गया सहु दूर रे इम वर्षा मावइ मूरि रे।
प्रभुना गुण प्रबल पडूर रे कहै 'विनयचन्द्र' ससनूरि रे ॥७॥ प०

॥ श्री महावीर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—इाडानी

मनमोहन महावीर रे त्रिसला रा जाया
ताहरा गुण गाया मनड़ा में ध्याया।
तोही रे ताहरा आदर में नहीं रे
इतड़ी सी तकसीर रे त्रि० आज्ञाकारी रे हुं सेवक सही रे ॥१॥
तुम्हसुं पूरवा जेह रे
त्रि० रंग लागो रे चोल मजीठ ज्युं रे।
दिन दिन वाघइ तेह रे,
त्रि भला रे व्यवहारी केरी पीठ ज्युं रे ॥२॥
निशिदिन मंइ कर जोड़ रे,
त्रि० आलग कीधी स्वामी ताहरी रे।
मन धकां थी छोड़ि रे,
त्रि० भरज मानो रे महिल माहरी रे ॥३॥
मंइ आलंबी तुझ बांहि रे
त्रि० कहो रे निरासी तउ किम आयइ रे।

चीपत हुवइ घर मांहि रे,

त्रि० छूटौ रे तौ स्या माटे लाइयइ रे ॥४॥

तार्या तें सुरनर कोडि रे,

त्रि० पोते तरी रे शिव सुख अनुभवइ रे।

मुझमां केही खोड़ रे

त्रि० तारै नहीं रे क्यों मुझनइ हिवइ रे ॥५॥

ओछा तणउ सनेह रे

त्रि० जाणै रे पतंग केरा वाहला रे।

वहतौ वहै एक रेह रे,

त्रि० पछइ विघटइ रे ज्यु तट डाहला रे ॥६॥

तिण परि नेहनी रीति रे,

त्रि० नहीं छैरे चरम जिनेसर आपणी रे।

'विनयचन्द्र' प्रभु नीति रे,

त्रि० राखइ स्वामी नइ सेवक तणी रे ॥७॥

॥ कलश ॥

ढाल—शांति जिन भामणइ जाऊँ

इण परि मैं चौवीसी कीधी सद्भावे करि सीधीजी।
कुमति निकेतन आगल दीधी सुमति सुधा बहु पीधीजी ॥१॥ इ०
इण में भेद तणी छइ हढ़ता गुण इक इक थी चढ़ताजी।
सज्जन पंडित थास्यइ पढ़ता दुर्जन रहस्यइ कुढ़ताजी ॥२॥ इ०
पूरण ज्ञान दशा मन आणी वेधक वाणी वखाणीजी।
विबुध मणी अवबोध समाणी मूरख मति मूंझाणीजी ॥३॥ इ०

बोध बीज निर्मल मुझ हुओ दियो दुरति नइ दूओजी।
खपना नो मारग मइ मूओ आणे ते कोई गिरूओजी ॥४॥ इ०
संवत सत्तर पंचावन वरषइ विजयदशमी दिन हरषइजी।
राजनगर मां निज उछरंगइ, ए रची भक्ति अमरपइजी ॥५॥ इ०
श्रीखरतरगण सुगुण विराजइ, अंबर उपमा छाजइजी।
तिहां जिनचन्द्रसूरीश्वर गाजइ, गच्छपतिचन्द्र दिवाजइजी ॥६॥
पाठक हर्षनिधान सवाई ज्ञानतिलक सुखदाईजी।
विनयचन्द्र तसु प्रतिमा पाइ, ए चोवीसी गाईजी ॥७॥ इ०

इति चउवीसी समाप्ता।

विहरमान जिनवीसी

॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

ढाल—रखियानी

श्री सीमंधर सुखकर साहिबा मन्दरगिरि सम धीर सलूणा।
श्री श्रेयांस नरेसर नन्दन मुझ हीयड़ा रे हीर सलूणा ॥१॥
सोवन वरण रे दीपत देहड़ी
सुमनस सेवित पाय सलूणा।
अनुराधा लक्षण करि राजतउ,
भेट्यां भव दुख जाय सलूणा ॥२॥
चन्द्र सूरज ग्रह गण सहु प्रभु तणउ,
चरण सरण करइ नित्य सलूणा।
आण रे सीसा आप प्रभा मरउ
करइ भवछिन्ना कृत्य सलूणा ॥३॥
मध्य विदेह विजय पुष्कलावती
नयरी पुण्डरिकिणी सार सलूणा।
सिद्धा विचरइ भविजन मन मोहता,
सत्यकी मातु मल्हार सलूणा ॥४॥
मेरु महीधर परि अविचल रहउ
मुझ मन पहिज रे देव सलूणा।
ज्ञानतिलक गुरु पदकज मधुकरउ
विनयचन्द्र करइ सेव सलूणा ॥५॥

॥ श्री युगमघर जिनस्तवन ॥

ढाल—नाटकियानी

श्रीजा जिनवर वंदियइ, युगमंघर स्वामी छो अहो युग०।
मइ तउ सेवा जेहनी बहु पुण्ये पामी छो अहो बहु०॥
अध्यातम भावइ रह्यौ, मुझ अन्तरजामी छो अहो मुझ०।
लळि लळि लागु पाउले, युगतइ शिरनामी छो अहो युगते०॥१॥
शान्त थई अंतर गुणे दुसमन सहु दमिया छो अहो दु०।
दान्त पणइ अविकार थी विषयादिक वमिया छो अहो वि०॥
त्रिभुवन पणि परमेश्वरु, त्रिभुवन जन नमिया छो अहो त्रि०।
ए अचरिज प्रभु गुण तणउ, शिव सुख मन रमिया छो अहो शि०
रूप अधिक रळियामणो सो वन वन काया छो अहो सो०।
शत्रु मित्र समता धरइ सम रंक नइ राया छो अहो स०॥
राग न रोस न जेहनइ
मद मच्छर न माया छो अहो म०।
सोहग सुन्दर ना गुणइ
भवियां मन भाया छो अहो भ०॥२॥
सज्जन जन मन रीझवइ
नीराग समावइ छो अहो नी०।
विषय विभाव थी वेगळउ
सहु विषय दिखावइ छो अहो स०॥
सकल गुणाश्रय निज भज्यउ
निर्गुणता ध्यावइ छो अहो नि०॥

सकल क्रिया गुण दालवी,
अक्रिय रुचि पावइ छो अहो अ ॥४॥
सुगढ़ राज कुल दिनमणी,
जसु माय सुतारा छो अहो ज० ।
गज लंछन अति गहगहइ,
महुलइ सुखकारा छो अहो स० ॥
वम विजय मा विचरता,
ज्ञानतिलक उदारा छो अहो ज्ञा ॥
विनयचन्द्र विनयइ कहइ,
जिम जगत आधारा छो अहो जि० ॥५॥

॥ श्री बाहुजिन स्तवन ॥

ढाल—योगिनाकी

बाहु जिनेश्वर वीनवु रे
बांह दिउ मुझ स्वामि हो जिनजी बा० ।
भवसायर तरवा भणी रे
तारक बाहर्नं नाम हो जिनजी बा० ॥१॥
जिणंदराय दरसन दीजो आज
जिणंदराय जिम सीझइ मुझ काज । आंकणी ॥
कल्पतरु कलि मां अछइ रे
वंछित देवा काज हो जिनजी वं ।
तुम बांहि अवलंबतां रे
छेदियइ भव जल पाज हो जिनजी छ० ॥२॥जि०॥

पंच कल्याणक अवतर्या रे,
अंगुलि मिसि तुम्ह माहि हो जिनजी अ० ।
तुम्ह दानइ किंकर थका रे,
सेवइ तेह उच्छाहि हो जिनजी से० ॥३॥ जि०॥
सुक्ख अतींद्रिय जो तुम्हे रे,
ते गुण नहीं ते मांहि हो जिनजी ते० ।
विण ईहइ परगट नहीं रे,
सांप्रत भमुवन मांहि हा जिनजी सां०॥४॥
सुग्रीव कुल मलयाचलइ रे,
चन्दन विजयानन्द हो जिनजी चं० ।
विनयचन्द्र वंदइ सदा रे,
श्रीदा श्रीजिनचन्द्र हा जिनजी ॥५॥॥जि ॥

॥ श्रीसुबाहु जिन स्तवनम् ॥

देशी काफीनी

श्री सुबाहु जिनवर मइ नमियइ उमाहउ बहु आणी ।
जस प्रभुता नउ पारन लहियइ किम कहि सकियइ वाणी ॥१॥
प्राणी प्रभु सीधु चित्त लाणी प्रभु मूरति उपशमनी खाणी,
मुझ मन ए ठकुराणी रे प्रा० ॥
ज्ञानी जाणइ पिण न कहायइ सर्व थी जस गुण खाणी ।
परिमल्या गुणनी अति निर्मल जिम गंगा नउ पाणी रे॥२॥प्रा ॥

रंगाणी मुझ मतिए रंगइ समकित नी सहिनाणी।
कुमति कमलिनी दहन कृपाणी दुख विस पीऊष पाणी रे ॥३॥
शक्ति अपूर्व सहज ठहराणी दुगति दूर हराणी।
वाणी तेहिज वेमु वेषइ कीरति तास गवाणी र ॥४॥ प्रा० ॥
निसढ नरेश्वर सुत शुभनाणी माता भू नन्दा जाणी।
विनयचन्द्र कवि ए कही वाणी, सुणतां अमी समाणी रे ॥५॥ ॥

॥ श्रीसुजात जिन स्तवनम् ॥

ढाल—कोकरिया मुनिवरनी देशी

श्री सुजात जिन पंचमा जी पंचम गति दातार।
पंचाश्रव गज भेदिवा जी, पंचानन अनुकार ॥ १ ॥
पंचम ज्ञान प्रपंच थी जो धर्मादिक पणि द्रव्य।
जेह त्रिकाल थकी कहै जी, सद्दहै मनि तेह भव्य ॥ ॥
पंच बाण नइ टालिवा जो पंच सुत्रापम जेह।
विरचित पंच शरीर थी जी, अकळ अलख गुण गेह ॥ ३ ॥
पंचाचार विचार सुं जी पालइ जे व्यवहार।
कल्पातीत पणइ रहइ जी चरित अनेक प्रकार ॥ ४ ॥
देवसेन नृप नन्दना जो देवसेना जसु मात।
विनयचन्द्र सोहइ भलौ जो रवि लंछन विख्यात ॥ ५ ॥

॥ श्रीस्वयप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—लाछलदेनी मल्हार

श्री स्वयंप्रभ अतिशय रत्न निधान
आज हो हेजइ रे हेजाळू हियडै हरखियइजी ॥१॥
जिम चकवा दिनकार मोरां नइ जलधार,
आज हो नेहइ र गुण गेही नयण निरखियइजी ॥२॥
जिहां विचरै प्रभु पाय, तिहां होइ सुख अछेह
आज हो पुण्यै रे परमेश्वर प्रेमइ परखियइजी ॥३॥
सुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज
आज हो रंगइ रे रळियाळउ साहिब सेवियइ जी ॥४॥
मिश्रमूर्ति फुलचन्द सुमगला नौ नन्द,
आज हो वदइ र जिनयचन्द्र हित आणी हियइ जी ॥५॥

॥ श्री ऋषभानन जिन स्तवनम् ॥

ढाल—आवौ आवौ जी म्हारै मारुगर

ऋषभानन जिनवर वंदी हुँतौ थयो र अधिक आनन्दी।
करि कर्म तणी गति मन्दी, आतम सुं दुमति निंदी।
आवौ आवौ साहिब सुखकन्दा मुझ नयन चकोर नइ चन्दा।
आवौ आवौ जी सेवक संभारे ॥आकणी॥
संभारइ तइ सहजा, स्युं ममारइ र निहजा ॥१ आ० ॥
जाण्यौ जे तुम सुं नेह चाणे चपल केरी रह ॥आ ॥
अमवारइ जायइ मही तइ जिम आई धरायें मेह ॥२ आ०॥

छीणो तुम पद अरविन्दइ मुझ मन मधुकर आनन्दइ ॥आ०॥
न रहइ ते दूर कमार, कुक मन्द यथा सहकार ॥३ आ०॥
तुम्ह बिन हुँ अवरन चाहुँ अविचल निज भावइ आराहुँ ॥आ०
निरालम्बन ध्यानइ ध्याउँ, कीरती परइ सिद्धि जाउँ ॥४ आ०॥
वीरसेना नन्द बिराजइ, कीर्तिराज कुमर निज छाजै ॥आ०॥
सिंह लञ्छन दुख गज भाजइ, कवि 'विनयचंद्र' नइ निवाजइ ॥५॥

॥ श्री अनन्तवीर्य जिनस्तवनम् ॥

राग—चन्द्राउलानी

अनंतवीर्य जिन आठमउ रे, जीत्या जम कषाय ।
नाम ध्याम श्री जेहनइ रे अष्ट महा सिद्धि थाय ॥
अष्ट महा सिद्धि जेहनइ नामइ, महज सौभाग्य सुयशता पामइ
जे इच्छित होइ मुझ नइ कामइ,
तेह लहइ नित ठामो ठामइ जी ॥१॥ विहरमानजी रे ।
ईति उपद्रव सवि टलइ रे, जिहां विचरइ जिनराज ।
भीति रीति पसरइ नहीं रे, जाणि गंध गजराज ॥
जाणि गंध गजराज सोहावइ सुभग दान ना भर वरसावइ ।
कपट कोट दहवट गमावइ
मित मयवाद घंटा रणकावइजी ॥२ विह ॥
अतिशय कमला हाथिणी रे, परिवरियउ निशदीश ।
सहजानन्द नन्दन वनइ रे, केलि करइ सुजगीश ॥
केलि करइ परमारथ वाणी, समता तटिनी सजल वखाणी ।

आगम सुंणा इणइ प्रमाणी,
परमत गज संगति नवि आणी जी ॥३ विह०॥
शुक्ल ध्यान उज्वल प्रभु रे, क्षायिक दर्शन ज्ञान।
कुंमस्थल प्रभु दीपता रे, महिमा मेरु समान॥
मेरु समान उत्तुंग ए देव भविक कोडि प्रभु सारइ सेव।
अचिर अमग विचित्र कलापइ
तइ तस चरण सरोज मिलायइजी ॥४॥ विह०॥
मेघ नृपति कुल सुर पयइ रे, भासुर भानु समान।
मंगलावती माता तणउ रे, नन्दन गुणइ निधान॥
गुण निधान गर्जित गज लछन, वर्ण अनोपम अभिनव कंचन।
भविक लोक नइ नयणानन्दन
'विनयचन्द्र' करइ नित नित वंदनजी ॥५ विह०॥

॥ श्री सूरप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—मोहरी सही रे समाणी

सूरप्रभु प्रभुता तइ पामी
तोरा चरण नमुं शिर नामी रे। मोरा अंतरजामी॥
देव अवर दीठा मंइ स्वामी
पिण ते क्रोधी कामी रे॥१॥ मो॥
तुम्ह मुद्रानइ आकइ भावइ,
तइ सेवक दिल किम आवइ रे। मो०।

हंस सोभ बग जाति न पावइ
यद्यपि धवल समावड़ रे ॥२॥ मो० ॥
महिमा मोटिम तणी वड़ाई
किम छइ ते सुपड़ाइ रे। मो०।
तद भावइ तउ छइ इक ताई
पिण अंब नीब अधिकाई रे ॥३॥ मो०॥
पंखी जातइ एकत्र हुआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे। मो०।
देव अवर तुम्ह थी सहु नीचा, तुम्हे तउ गुणाधिक ऊँचा रे ॥४॥
चन्द्र वदन जिन नयणानन्दा, विनयचन्द्र तुम्ह वन्दा रे ॥५ मो०

॥ श्री विशाल जिनस्तवनम् ॥

ढाल—म्हारे नीरिता उपरि मेह झरोखे वीजली हो लाल झरोखड वीजली
श्री सुविशाल जिणंद कृपा हिव कीजियइ हो लाल कृपा०।
चाहइ मया नइ छेह, कहो किम दीजियइ हो लाल कहो ॥
सहज सलूणा साहिब नेह निवाहियइ हो लाल नेह०।
मुझ परि कुरम दृष्टि तुम्हारी चाहियइ हो लाल मु ॥१॥
चातक नइ मन मेह, विना को नवि गमइ हो लाल वि०
हंस सरोवर छोड़ि कि छीलर नवि रमइ हो लाल कि छी०
गंगा जल झीलन्या ते इह जल नादरे हो लाल कि इह०
सोभा मालती फूल से आकउ स्युं करइ हो लाल कि आ ॥२॥
भवि भवि तुं मुझ स्वामी सेवक हुं ताहरो हो लाल कि से०।
जन्म कृतारथ आज सफल दिन माहरो हो लाल स ॥

प्रेम मइ कीना हो लाल, जिम मालती भमरी
　　　　हेलइ भीना हो लाल तारी मंदिर करी।
बहु तपसीना हो लाल साहरइ दरसन पामइ
　　　　दास अमीना हो लाल, बारइ २ सूं मामइ ॥३॥
तुम्हे प्रवीणा हो लाल, समकित रतन दाता,
　　　　देखी दीणा हो लाल, पूरो सुख मइ साता।
दुर्जन हीणा हो लाल, ते तउ विमुख करउ,
　　　　तुम गुण भीना हो लाल, सेवक हायइ धरउ ॥४॥
पदमरथ नृपति हो लाल, नन्दन गुण निलमो,
　　　　मात सरसती हो लाल, विजया कंत थयो।
संख लंछन सोहइ हो लाल, ज्ञानतिलक छाजे
　　　　'विनयचन्द्र' मोहे हो लाल महिमा महियल गाजै ॥५॥

॥ श्री चन्द्रानन स्तवनम् ॥

ढाल—फाग

चन्द्रानन जिन चदन शीतल परमेष नमण विशेष।
वयण सुकोमल सरस सुधारस समण हर्षित होइ देख ॥१॥
सोभागी जिनवर सेवियइ हो
　　　　अहो मेरे सजना अद्भुत प्रभु रूप रेख ॥आंकणी॥
विषय कषाय दवानल करी टालइ ताप सजार।
सहज स्वभाव सुचन्द्रिका हो उल्लसित भविक चकोर इस सो०॥

मिथ्यामत रज दूर मिटावइ, प्रगटइ सुरुचि सुगंध।
अरुचि परस्यता प्रगट न होवइ करुणा रस भवइ सुबंध ॥३ सो०॥
चन्द्रानन आनन उपमानइ, होवइ लीजउ चन्द्र।
शून्य ठाम सेवइ ते अहनिसि मानु कलंकित मंद ॥४ सो०॥
श्री वाल्मीक नृपति कुल भूषण पद्मावती जो नन्द।
वृषभ लंछन कंचन तनु प्रणमइ, प्रमुदित कवि 'विनयचन्द्र' ॥५॥

॥ श्री चन्द्रबाहु जिनस्तवन ॥

ढाल—त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणि रे कि पा

चन्द्रबाहु जिनराज उमाह धरि वणउ रे। उमाह०।
वास तणा चोय चयण निभर करिमइ सुणउ रे। नि०।
जनम सम्बन्धी वैर विरोध ते उपसमइ रे। वि०।
समवसरण तुम देख पंखी सबला भमइ रे॥ पं० ॥१॥
दस मृदु आवी पाय सेवइ प्रभु तुम तणा रे। से०।
आप आपणी ऋतु भेट कि पुष्प प्रकर घणा रे कि।
नीप कदम्ब नइ केतकि, जूहि मालती सू रे कि। जू०।
विउलसिरि वासंत कि वासिकवा छती रे कि ॥वा० ॥२॥
शतदल कमल विराजे कि करणी केतकी रे। कि क०।
बन्धु जीवना थोक अशोक सुचंगु की रे। अ ।
सप्तपर्ण प्रियंगु सरेसइ मोगरा रे। स०।
लाल गुलाल सरल चंपक परिमल घरा रे॥ स० ॥३॥

विछक केसर कोरट मकुल पाडल बळी रे। च ।
दमणो मरुवो कुसुम कली बहु विध मिली रे। कं०।
होइ अनुकूल समीर परइ नहीं भूलवा रे। च ।
तौ किम महृदय लोक धरै मतिकूलता रे॥ च० ॥४॥
देवानन्दन भूप कुमार जिनमणि रे। कु०।
रेणुका माता नन्द लीलावती नउ धणी रे। ली०।
कमल लंछन भगवान विनयचन्द्रइ' थुण्यौ। वि ।
तुम गुण गण नौ पार, कुण इ ही नवि गुण्यो रे ॥कुं ॥५॥

॥ श्री भुजंग जिनस्तवन ॥

ढाल—मकखानी

भुजंग देव भावइ नमुं भगति युगति मन आणि ॥सखूणेसाजना
भुजंग नाथ वंदित सदा सुरनर नायक जाणि। स ॥१॥
हूं रागी पण तुं सही निपट निरागी सभाय। स०।
य एकंगी प्रीतड़ी लोकां मांहि लजाय। स ॥२॥
आश्रित जन नइ मूकतां, प्रभु अति हांसी थाय। स ।
शंकर कंठइ विष धर्यो पिण ते नवि मूकाय। म० ॥३॥
जे नेही नेहइ मिलै तउ तेह सु मिलियइ जाय। स ।
तेह मिलवइ स्युं कीजियइ जे काम सरयो कमसाय। स ॥४॥
महाबल नृप महिमा तणौ नन्दन गुण मणि धाम। स ।
कमल लंछन प्रभु मा करइ विनयचन्द्र' गुण ग्राम। स० ॥५॥

॥ श्री ईश्वर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—धरि मावे पियरग पाय सोनारी छोगलउ मारूजी

ईस्वर जिन नमियइ, दुःख नीगमियइ भव तणा। वाल्हाजी।
चउगति नवि भमियइ दुजन दमियइ आपणा। वा०।
संसारइ भमतां बहु दुःख गमतां भव गयउ। वा०।
भव थिति नइ भागइ कर्म सयोगइ सुख थयउ। वा० ॥१॥
तुं साहिब मिलियउ, सुरतरु फलियउ आंगणइ। वा०।
मिथ्यामति टलियउ दिन सुभ वलियउ हूंजइ घणइ। वा०।
हुं छुं अपराधी मइ सेवा साधी तुम्ह तणी। वा०।
करउ सहज समाधि वीरति वाधी अति घणी। वा० ॥२॥
मन विषय न रमियउ क्रोधइ धमियउ कुभाव थी। वा०।
आरइ भव गमियउ हुं नवि नमियउ भाव थी। वा०।
हिव मिथ्यात्व वमीयउ मन उपसमियो अति घणुं। वा०।
दुरस दिल रमियउ, गगडिग रमीयउ गुण गुणुं। वा ॥३॥
तुं आगम अरूपी अकल सरूपी साहिबा। वा०।
परमातम रूपी ज्याति सरूपी गाइबा ॥ वा०॥
तुं आप अजायच त्रिभुवन नायक गुण भर्यो। वा ।
जिन समरथ लायक भरायक मारइ भव तर्यो ॥ वा०४॥
गजसेन महीपति वंश विभूषण दिनमणी। वा०।
जसु सुयशा माता उत्तम विख्याता बहु गुणी ॥ वा०॥
वचन सहु अतिसइ मंडन दीपइ निरामणी। वा०।
जिनपदमइ भासनइ श्री जिन वंदइ सुरमणी ॥ वा० ५ ॥

॥ श्री नेमिप्रभ स्तवनम् ॥

ढाल—दीवाळीवारी कर्म दीवाळनइ मार्ग म्हूकइ चैसनराव

इम दीवोळमइ झूकइ, नेमिप्रभ जिनराय।
जिहाँ शुद्ध आशय भूमि पटळी, सोहियइ विरवाय।
तिहाँ ज्ञान दर्शन धर्म अनुभव दिव्य भाव ससाय॥
उपदेश शिक्ष्या सहज सकळि, विविध चोर बनाय।
सौंदर्य्य समता भाव रूपइ, दीपिता सुख थाय॥१॥ इ०॥
जिहाँ चरण शोभा भाव चामर, चतुरता चींझाय।
व्रत सुमति गुपति प्रतीत चाळी रहत हासरि थाय॥
परपञ्च गुण शुभ वासु सुँघा परिमलइ महकाय।
तिहाँ मगति सुगति विवेचनादिक दीपिका दीपाय॥२॥ इ०
सद्बोध वकीया उदार शुभ मति विमचना समुदाय।
अनुभावि भाव सुभाव चित्रित महिव मन चमकाय॥
जिहाँ सहज समकित गुण सुचन्दित चंद्रुआ चितवाय।
शम शील लील विळास मंडित मंडपइ बुधि दाय॥३॥ इ०
कर कमळ जोड़ी करइ सेवा नाकि नाथ निकाय।
सुर असुर नरवर हप भरि, सम्मिळित राणा राय॥
अनुभाव मोहनइ वैर विद्दुर, दुरित दुख पुलाय।
धन धन्न प्रभु पुण्य जय जय सयव गीत गवाय॥४॥ इ०॥
वीरराय कुळ अभ्र दिनमणि, सुवरा विदुभव जाय॥
प्रभु सूर लंछन चरण कंचन सुभग सेना माय॥
भवि जीव मोहह चित्त मोहइ ज्ञानविळक पमाय॥
कवि विनयचन्द्र प्रमोद भरि नइ, देव ना गुण गाय॥५॥ इ०

॥ श्री महाभद्र जिन स्तवनम् ॥

ढाल—भँवर बुलावड़ हो गजसिंह री जामी महल में जी

साहिब सुणियइ हो सेवक वीनति जी
श्री महाभद्र जिणंद।
मुझ मन मधुकर हो नित लीणउ रहै जी,
प्रभु पदकज मकरन्द ॥१॥सा०॥

पइ अनादि हो अनन्त संसार मंइ जी
तुम्ह आणा विन स्वामि।
जे दुख पाम्या हो नाम छेहई स्युं कहुं जी
फरस्या सवि भवि भवि ठामि ॥२॥सा ॥

अविरत आस्रव हो परवश नइ गुण जी
मोह नृपति मइ घोर।
कर्म भरम नइ हो आल अलूझियो जी
चंचलता चित चोर ॥३॥सा ॥

हुं निज वीती हो वात शी दाखवूं जी
जाणउ सहु जिनराय।
तारक बिरुद हो वहियइ आपणो जी
बाँह ग्रह्यांनी लाज ॥४॥सा ॥

देवराय नृप मउ हा कुँअर दीपतउ जी
उमा देवी प्रभु माय।
सिपुर मंडन हो चरणइ कंचनइ जी
विनयचन्द्र सुखदाय ॥५॥सा ॥

॥ श्री देवयशा जिन स्तवनम् ॥

ढाल—काचीकली अनार की रे हां

तुम्ह तउ दूर जइ वस्या रे हां,
आयौ केम मिलाय। मेरे साहिबा।
संदेशा पहुंचइ नहीं रे हां,
कागल पिण न लिखाय ॥ मे० ॥१॥

पिण अनन्त ज्ञानी अछउ रे हां
जाणउ मन ना भाव। मे० ॥
इण परी मुझ नई मिलौ रे हां
जिम दाइ प्रीति जमाउ ॥ मे० ॥ ॥

अनुकम्पा करि मइ करउ रे हां
समकित नउ निरधार। मे०।
तुम्ह बिन अवर न को अछइ रे हां
जीवित प्राण आधार ॥ मे० ॥ ३ ॥

जामी नइ नवि पूरवा रे हां
सेवक केरी आश। मे०।
तउ साहिब शी वात मा रे हां
हुँ पिण स्थानउ दास ॥ मे० ॥ ४ ॥

गयभूत नृप नन्दनौ रे हां,
गंगा मात मल्हार। मे०।
देवयशा हरि लंछन रे हां
विमलचन्द्र सुखकार ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ श्री अमितवीर्य जिनस्तवन ॥

राग—वीरवखाणी राणी चेलणा

अमितवीरज जिन वीनमा जी,
विसरइ नहीं तोरउ नेह।
अकल रूपी तुमे चित्त छिन्मावी
आ भव पर भव नेह ॥१॥ अ०॥
प्रभु तुमे अकल कल्पना करी जी
अगम्य कीधा तुमे गम्य।
असाध्य ते साध्य प्रभु आपयाँ जी
आदर्यो रम्य अरम्य ॥२॥ अ०॥
अपेय ने पामर लोकनइ जी
तेह कीधुं तुम्हे पेय।
अंतरगति इम भावतां जी
तुम्हे अनुपम उपमेय ॥३॥ अ०
अकल पट दृश्य निज रूप थी
अगम्य ते सिद्ध नुं ठाम।
असाध्य जे काल अपेय नइ जी
सहज अनुभव सुधा साम ॥४॥ अ०॥
नरपति राजपाल सुंदरु जी
मात कनीनिका जास।
स्वस्तिक लंछनइ वंदियइ जी
कवि विनयचन्द्र सुविलास ॥५॥ अ०॥

॥ श्रीशत्रुंजय यात्रा स्तवनम् ॥

ढाल—कब तवान् परिहरो पहनी।

हरि मोरालाल सिद्धाचल सोहामणो
ऊँचो अविहि सरंग मोरालाल।
सिद्धि वधू वरवा मणी
मानु उन्नत करि चग मोरा लाल ॥१॥
सेत्रुंजा शिखरे मन लागो
साहिबनी सूरति चित लागो ॥ आं० ॥
हरि मोरा लाल पाजीवाणी वलवटी
जिहां छलितसरोवर पालि ॥ मो० ॥
पगला प्रथम जिणवरना,
प्रणमीजे सुविशाल मोरा लाल ॥२॥से०॥
हरि मोरा लाल भवमी ने पतले चढ्यो,
समवसरणा जिहां नेम ॥ मो० ॥
जिहां प्रभु पगला वंदिये
पूरण धरि ने प्रेम मोरा लाल ॥३॥से०॥
हरि मोरा लाल आगल चढ़तां अतिभली,
नीली भमली पव ॥ मो० ॥
कुंडे कुंड पादुका
वंदे भविजन सर्व मोरा लाल ॥४॥से०॥
हरि मोरा लाल अनुक्रमि पहिला कोट मैं,
पेसी कीध प्रणाम ॥ मो० ॥

वाघणि पोळे पैसतां
नाग मोरनो ठाम मोरा लाल ॥५॥से०॥
हरि मोरा लाल गोमुख ने चक्केसरी
प्रणमा वामे हाथ मोरा लाल ॥ मो० ॥
चौरी नेम जिणंदनी,
सरगवारी ने साथ मारा लाल ॥६॥से०॥
हरि मोरा लाल चौमुख सयमलजी तणो
ममतां होइ आल्हाद ॥ मो० ॥
अवर चत्य नमि पसीये,
आदि जिणंद प्रासाद मोरा लाल ।७।से०।
हरि मोरा लाल दीजे मध्य प्रदक्षिणा
खरतरवसही मांहि ॥ मो० ॥
पुंडरीक गणधर तणी
प्रतिमा अति आनंदि मोरा लाल ।८।से०।
हरि मोरा लाल सहसकूट अष्टापद
प्रमुख बहु जिन वांदि ॥ मो० ॥
रायणि तलि पगला नमो
गणधर पगला सार मारा लाल ॥९॥से०॥
हरि मारा लाल मूल गंभारे ऋषभजी,
पासे हाइ जिणंद ॥ मो० ॥
मरुदेवी माता गज पगे
आगल भरत नरिंद मारा लाल ॥१०॥से०॥

हरि मोरा लाल चवदेसय बावन अछे
गणधर पगला सार ॥ मो० ॥
इणिपरि देव महिमणा,
नमिये नाभि मल्हार मोरा लाल ॥११॥से०॥
हरि मोरा लाल चैत्यवंदन प्रभु आगले,
करिये आणी भाव ॥ मो० ॥
हिव बाहिर देहरा थकी,
जे छे ते कहूँ भाव मोरा लाल ॥१२॥से०॥
हरि मोरा लाल सूर्यकुंड भीमकुंड ने
पासे पगला जान ॥ मो० ॥
ओल्खामूल आवियो
फरसीजे जिन न्हाण मोरा लाल ॥१३॥से०॥
हरि मोरा लाल आइये चेलणतलावड़ी
सिद्ध सगला तिथि ठौड़ ॥ मो० ॥
सिद्धवड़े प्रभु पादुका,
नमिये बे कर जोड़ मोरा लाल ॥१४॥से०॥
हरि मोरा लाल आदिपुरे आवि चढ़ो,
फिरि नै ए गिरिराज ॥ मो० ॥
हवणी पोळे आविनै,
वलि बंधो जिनराज मोरा लाल ॥१५॥से०॥
हरि मोरा लाल बीजी जात्र करिये तिहां
बाहिर रमणा चैत्य ॥ मो० ॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल — पूजी मा मीठ्नी वेरी

वीनति सुणो रे म्हारा वाल्हा, राजि मरुदेवा राणी ना लाला
राजि थांरा चरण नमुं शिरनामी।
थेतो मूकां मो मावठ मंजर
राजि निज सेवक तणा मन रंजर राजि० ॥१॥
म्हारा मननी आशा पूरो,
राजि म्हारा कठिन करम दल चूरउ। राजि०।
थांरा गुण सुं मो मन लागो
राजि हियड़ राखुं रे थांमण जिम तागउ ॥ २ ॥
थांरी सूरत अधिक सुहावै
राजि म्हारा नयण देखि सुख पावइ राज०
थांरी कंचनवरणी काया
राजि थांरउ रूप सकल सुख दाया। राज० ।३॥
सोहइ नयन कमल अणियाला,
राजि समतामृत रस वरसाला । राजि०।
थे तो नाभि नरिंद कुल चन्दा
राजि थानइ सेवे सुर नर इन्दा। राजि० ॥ ४ ॥
थांरो ध्यान हिया विच धारू
राजि थानइ निशिदिन कदीन विसारू ।राजि०।

त्रिभुवन नउ मोहनगारउ
राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारो ।राजि० ॥५॥

तुझ नइ देखी हिव फूली,
राजि तुझ पास सदा रहइ झूली । राजि० ।

तुझ मइ निज सेवक जाणी
राजि मुझ तारउ करुणा आणी । राजि० ॥६॥

मई तउ पूरव पुण्यइ पाया
राजि प्रभु चरणे चित्त लगाया । राजि० ।

श्री ऋषभ जिणद जगराया
जिनचन्द्र हरख सुं गाया राजि० ॥७॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडन ऋषभदेव स्तवनम् ॥

ढाल—माबीमी

वात किसी तुम्हनइ कहुं मुझ नइ आवइ लाज ऋषभजी ।
विगर कह्यां मन नवि रहइ हिव सांभलि जिनराज ।ऋ ॥१॥

हुं माया सुं मोहीयउ मइ कीधा पर द्रोह । ऋ० ।
अधम तणी संगति ग्रही न रही संयम सोह । ऋ० ॥२॥

मूकि रह्यउ संसार मैं न धर्यो ताहरउ ध्यान । ऋ० ।
परमारथ पायउ नहीं भरियउ घट मां मान । ऋ० ॥३॥

तृष्णा सुं लागी रहउ, पिण न भज्यउ संताप । मू० ।
ठाभा मुझ माहि मिल्या, सगळाई जे पाप । मू० ॥४॥

कुमति घणी मुझ मन बसइ सुमति बली नहीं नेह । मू० ।
माठी करणी मां पड्यउ, हुं अवगुण नउ गेह । मू० ॥५॥

वलि झूठी साची करूं वातां तणउ विचार । मू० ।
हुं लंपट नइ लालची कपट तणउ नहीं पार । मू० ॥६॥

ढांकुं अवगुण आपणा केहनी न करूं काण । मू० ।
पर दूषण लेवा भणी, हुं छूं आगेवाण । मू० ॥७॥

मिथ्यादृष्टि देव सुं धरियउ पूरउ राग । मू० ।
अर्थ तणउ अनरथ कियउ देखी नइ निज लाग । मू० ॥८॥

विरति रहउ निज पाट में, चंचल माहरउ चित्त । मू० ।
संसारी सुख ऊपरइ हीयडउ हीसइ नित्त । मू० ॥९॥

जीव संताप्या मइ घणा, पर आशायें जीव । मू० ।
वलि रात्रि भोजन कर्या काम अकारज कीध । मू० ॥१०॥

हिव हुं किम करि छूटिसुं कीधा करम कठोर । मू० ।
भव दुख मां हुं भीडीयउ, कोई न चालइ जोर । मू० ॥११॥

पिण इक शरणउ ताहरउ, लीयउ छइ जग तात । मू० ।
देस्युं ताहरी सानिधइ दुरजन नइ सिर लात । मू० ॥१२॥

'विनयचन्द्र' प्रभु तूं भलउ सेत्रुंजय सिणगार । मू० ।
चरण ग्रह्या मैं ताहरा मुझ कुमति नइ वार । मू० ॥१३॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन गीतम् ॥

ढाल—प्रीतिविपानी

पंथीड़ा अविसड मिटस्यै जे दिनइ रे,
　　　　ते तउ मुझ नइ आज मवाइ रे।
प्रभु अभिनन्दन नइ मिलवा तणउ रे,
　　　　अलजो ए मनड़े न समाइ रे ॥१॥ पं० ॥
ते शिवपुर वासउ बसे रे,
　　　　हुं तउ मानव गण मइ थोय रे।
प्राणवल्लभ दुलभ जिनराज नी रे,
　　　　कहि नै सेवा किण विधि होय रे॥२॥पं०॥
पांख हुवे तउ ऊडि नै रे,
　　　　आइ मिलीजै तेह सुं नेट रे।
ओलग कीजइ चेकर जोड़ि नै रे,
　　　　स्युं बलि काइ भलेरी मेट रे॥३॥ पं० ॥
इण कलि संमुख नवि मिलइ रे,
　　　　वलि पहुंचइ नहीं कागल मात रे।
दूर थकी जे रंग इसी परि रे
　　　　रालिस ए पटोले भाति रे॥४॥ पं० ॥
परम पुरुष पोहर पखै रे,
　　　　चाहै वंछित कवण प्रमाण रे।
शुभ आगलि साचो जाणै सही रे
　　　　सगगुरु विनयचन्द्र' नी वाणि रे॥५॥पं ॥

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन गीतम् ॥

देशी—विनती हो इसव वदन मन मोहवउ हो लाल

साहिबा हो पूरण ससिहर सारिखो,
हो लाला सोहै मुख अरविंद जिणेसर
तें चित चोर्यो माहरो हो लाल,
जिम अलि मम मकरन्द जि ॥१॥ते०॥
गयण निसाकर दीपतो हो लाल,
जस वड जिम विस्तार जि० ॥२॥ ते० ॥
तुं वेहिज सुपनइ मिलइ हो लाल
सांप्रति दरसण दाखि जि० ।
मूढ पतीजे जे हियइ हो लाल,
लाज मोरी तुं राखि जि० ॥३॥ ते० ॥
अन्तरजामी तुं अहे हो लाल
वालहेसर सुविनीत जि ।
साहिब वलत लिका करो हो लाल,
जिम करि आवै चीत जि० ॥४॥ ते० ॥
ते हिज बात सही करी हो लाल
कदीये न विसरइ देव जि० ।
'विनयचन्द्र' सानइ सही हो लाल
श्रीचन्द्रप्रभु देव जि० ॥५॥ ते ॥

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—जे हसमानै मोंकरी ए देशी

सांभलि निसनेही हो लाल कहुं बात ते केही हो ।
सगुण म्होरा वालहा ।
कहुं बीनति केही हो लाल पिण तूं बड़ तेही हो । स० ॥१॥
शरणागत पाळौ हो लाल, अंतर दुख टाळौ हो । स० ।
तुं तउ माया गाळौ हो लाल, रहै मोसुं निराळौ हो ।स०॥ ॥
बाते परचावै हो लाल, ते मन नइ नावै हो । स० ॥
साची पतियावै हो लाल, तउ संशय जावै हो । स० ॥३॥
राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौहो । स० ।
सेवक तारेवौ हा लाल भाकार वारेवौ हो । स० ॥४॥
शांतिनाथ सोभागी हो लाल सोख्य जिन सागी हो ।स ।
'विनयचन्द्र' रागी हो लाल थयो तुं बड़ भागी हो ।स०॥५॥

॥ श्री नेमिनाथ गीतम् ॥

ढाल—अब कब चौमासी मे घर आवो आवइ रहज राजि ए देशी

नेमजी हो अरज सुणो र वालहा माहरी हो राज,
राजुल कहइ घरि नेह घरि रहइनै राज ।
साहिबा एकरस्यउ थे फिरी आवउ
घरि रहउ नै राज ।
केसरिया घरि० अलबेला ए अभिमानी ए,
साहिबा एकरिस्यउ ॥ आं ॥

नेमजी हो नवभव नेह निवारनइ हो राज
इम किम दीजइजी छेह ॥१॥ प०॥
नेमजी हो विन अवगुण मुझ नइ तजी हो राज,
ते स्यउ मुझ मा दोष ॥प०॥
नेमजी हो करियउ न घटइ तुम नइ हो राजि,
अबला ऊपरि रोष ॥प०॥सा० २॥
नेमजी हो सह मीनति करतां थकां हो राजि,
मत आवउ मुझ मेलि ॥प०॥
नेमजी हो तुम विन मुझ काया दहइ हो राजि
जिम जल विहूणी वेलि ॥प०॥सा० ३॥
नेमजी हो मुगति रमणि मोहया तुमे हो राजि
पिण तिण मां नहि स्वाद ॥प०॥
नेमजी हो तेह अनंति भोगीवी हो राजि
छोड़इ छांकरवाद ॥प०॥सा० ४॥
नेमजी हो अधिका छोभ न कीजइ हो राजि
आणउ हियइ रे विवेक ॥प०॥
नेमजी हो मुझ सरिखी शील सुंदरमणी हो राजि
हूं तुम मारी एक ॥प०॥सा० ५॥
नेमजी हो योवन आदर लीजियइ हो राज,
छोड़ विषम सुरा भोर ॥प०॥
नेमजी हो चारित पिण लेज्यो पछइ हो राज
म हुवउ कठिन कठोर ॥प०॥सा ६॥

नेमजी हो भलौ रे कियौ तुम साजना हो राज,
आवी तोरण बार ॥प०॥
नेमजी हो रथ फेरी पाछा चल्या हो राज,
एह नहीं जग व्यवहार ॥प०॥सा० ७॥
नेमजी हो अठ भाम्या मन मन्दिरइ हो राज,
हूं आविस तुम पास ॥प०॥
नेमजी हो इम कहि पिउ पासइ गइ हो राज
राजुल धरती आस ॥प०॥सा० ८॥
नेमजी हो प्रणमी नेम जिणन्दनइ हो राज
संयम लीधो धरि प्रेम ॥प०॥
नेमजी हो प्रिउ पहिली मुगते गई हो राज
वंदइ 'विनयचन्द्र' एम ॥प ॥९॥

॥ श्री नेमिनाथ राजिमती बारहमासा ॥

राग—हिंडोल

आवत हो इस रिति हित सइ यदुकुलचन्द
हृदय माहि परम आनन्द।
इस रीति राजुल वचन प्रमुदित सुनो यादव राय।
छोरि कै प्रीति प्रतीति प्रिय तुम क्यूं चले रीसाय॥
चिहुं ओर घोर घटा विराजत गुहिर गाजत गगन।
धरि अधिक गाढ अपाढ उन्मद, पदमा पिउ से मगन॥१ आ॥

उत्तंग गिरिवर प्रबर फरसत मेघ वरषत घोर।
दमकती दामिनि चतुर मामिनी, चमकती तिहिं ठोर॥
पियु पियु पपीयन रटत प्रगटत पवन के झकझोर।
इम मास सावन विक दिखावन, सजन मानि निहोर॥२ आ०॥
दिहुं दिसइ जलधर धार दीसत हार के आकार।
ता बीचि पहुबे नहीं कबही, सूई को संचार॥
सा झमत है झरराट करती, मध्यवरती बान।
भर मास भाद्रव प्रबल भंवर, सरस रस की खान॥३ आ०॥
सरसा सरोवर विमल जल से, भरे हैं भरपूर।
जल छोल करत दिखाल हर्षित हंस पंखि पडूर॥
चन्द्र की शीतल चन्द्रिका से विकासइ सिरि नूर।
आसोज मास उदास अबला रहत तो पियु झूरि॥४ आ०॥
संयोगिनी को वेष देखत तब उवेलयत कंत।
शृ गार शोभत महल मंगल महल दीप दीपंत॥
उनमत पीवर अति घन स्तन मध्य मुकुलित माल।
मदी मास काती दहत छाती माल तो मई झाल॥५॥आ०॥
सिव रमनि संगति सइ उमाहे आत काहे दूरि।
निज नारी प्यारी आमकारी दीजियत क्युं छोरि॥
घनघास दीपइ भप दीयइ भला न कछु तोहि।
इन मागसिर भई माग सिर परि, हरि दुखिनी मोहि॥६॥आ०॥
अति दिवस दुचल सबल तापाक्रान्त निशिपति ज्योति।
संकुचित हिम हिम कठिनता सइ कमल लटपन होत॥

इन भांति मन की खांति बारह, मास विरह विलास।
करि कह प्रिया प्रिय पासि चरित्र, मद्धइ आनि उल्लास॥
दोउ मिळे सुन्दर मुगति मंदिर, भइ वहां अति भाइ
मृदु वचन वाच्छ रचन गावत विनयचन्द्र कवीन्द्र ॥१३॥भा०॥

॥ इति श्री नेमिनाथ राजीमत्योर्द्वादश मास ॥

॥ श्री संखेस्वर पार्श्वनाथ बृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—कोइलो परवत धूंधलउ म्हारी

श्री संखेसर पास जी रे लो
सुणि बाल होइ नइण रे सनेही।
दरसण ताहरउ देखिवा रे लो
तरसै माहरा नइण रे सनेही ॥१ श्री०॥
चाळ मजीठ तणी परइ रे लो,
लागउ तुम सुं प्रेम रे सनेही।
हियडउ हेजइ उल्लसइ रे लो,
जलहर चातक नेम रे सनेही ॥२ श्री०॥
हूं आणूं जइ मइ मिलूं रे लो
साहिब मइ इकवार रे सनेही।
सयणा रइ मेळा करी रे लो
सफल हुवइ अवतार रे सनेही ॥३ श्री०॥
ताहरा किम आवुं तिहां रे लो
वेळा विषमी जाय रे सनेही।

सुख चाहंता जीव मइ रे छो,
मत कोइ लागू थाय रे सनेही ।।४ श्री०।।
केहवि कछ काइ हिवै रे छा,
जिम आबु तुम पास रे सनेही।
आवी नइ तुम रंमिस्युं रे छो
सिवमति करस्युं त्राम रे सनेही ।।५ श्री०।।
मत आणौ मोनइ लाछवी रे छो
दिल माहरउ दरियाव रे सनेही।
बीजउ कंइ माहरइ नहीं रे छो,
चाहइ आन्तर भाव रे सनेही ।।६ श्री०।।
महिर विना साहिब किसउ र छो
छहिर विना स्यउ थाय रे सनेही।
सहिर विना स्यउ राजवी रे छो,
इम कहि माहि कहाइ र सनेही ।।७ श्री०।।
को न करउ मुझ ऊपरइ रे छो
प्रेम दृष्टि सुदृष्टि र सनेही।
जेमी ततखिण संपजइ रे छा
शान्त सुधारस वृष्टि रे सनही ।।८।।श्री०।।
इत्यादिक नइ सेवता रे छो
पूगइ मनना आस रे सनेही।
तइ मानित तुम साहिबइ र छो
क्रिम रागइ मीराम र सनही ।।६।।श्री०।।

वधणे नेह वधइ नहीं रे लो
नयणे वाधइ नेह रे सनेही।
नेह लेह स्या काम नो रे लो
अणमिलियां रहै तेह रे सनेही ॥१०॥मी०॥
जिम तिम मुझ नइ छेहनइ रे लो,
करि आदरज निरवाह रे सनेही।
'विनयचन्द्र' प्रभु सानिधइ रे लो
नहीं क्षमनी परवाह रे सनेही ॥११॥मी०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ बृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—देशु देशु नणद हठीली एहनी

श्री पास जिनेसर स्वामी तुं वाहलो अन्तरजामी रे।
जिनदेव तुं जगकारी, तुम्ह सुरति लागे प्यारी रे॥
साहिब सुन बीनति मोरी चाकिहारी जाउ तोरी रे॥१॥
तुं गुण अनन्त करि गाजइ, तुम्ह रूप अनोपम राजइ रे।
सुन्दर तुम्ह मुख नउ मटको वारू लोयण नउ लटकउ रे॥२॥
तु धर्म तणउ छइ धोरी आदरउ मन लीधउ चोरी रे।
तुम्ह दीठां विण न सुहावइ, मुझ जीव असाता पावइ रे॥३॥
मरि निजर जोई जब तुम्हनइ तब आनंद उपजइ मुझनइ रे।
चित माहि हुवइ रंग रोळ, जाणे स्वयंभूरमण कल्लोल रे॥४॥
मइ देव घणा ही दीठा तुम्ह मीठा हीयडइ पीठा रे।
मिळियउ नहीं तुझ तुलइ कोई त्यारइ मूँक्या सहु जोई रे॥५॥

हुं भव भव भमतो हार्यो, बहु दिवसे तुम्ह सम्भार्यो रे।
तुम्ह सेवा करिवी मांही ते किम थायइ कहौ छांडी रे ॥६॥
पूरवली प्रीति जगाई, हिवइ करौ निवाज सकाई रे।
जे मांहि वस्त गुण छहियइ मोटा तउ तेहिज कहीयइ रे ॥७॥
तूं अध्यातम मत वेदी, तइ कर्मप्रकृति सहु छेदी रे।
संसार सरी तु बइठउ शिवमन्दिर मां जइ पइठउ रे ॥८॥
आजन्म तु बाळउ योगी तु अनुभव रस नउ भोगी रे।
तु तउ छइ निपट निरागी हुं रागी तुम्ह रढउ लागी रे ॥९॥
रागी रागइ से व्यापइ, वेहनइ सउ वंछित आपइ रे।
तउ भगतवच्छल बहु मीतइ तेहनाइ कहियइ मी रीतइ रे ॥१०॥
अविचळ सुख मुम्ह दीजइ परमातम रूपी कीजइ रे।
प्रभु सापइ आवे आया कवि 'विनयचन्द्र' गुण गाया रे ॥११॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—सुन्दर रे ना गीतनी

सुन्दर रूप अनूप मूरति सोहइ हो
सगुणा साहिब ताहरी रे।
चित मांहे रही चूप देखण तुम्ह नइ हो
सगुणा साहिब माहरी रे ॥१॥
मुम्ह मन चंचळ पइ राखुं तुम्ह नइ हो
सगुणा साहिब मचि रहइ र।
मुम्हनुं धरिय सुनेह, राखउ चरण हो
सगुणा साहिब सुरग छइइ रे ॥२॥

तु उपगारी एक, त्रिभुवन मांहइ हो
सगुणा साहिब मइ जाण्यउ रे।
आव्यौ धरिय विवेक, हिवइ तुम्ह सरणइ हो
सगुणा साहिब संग्रहउ रे ॥३॥

सरणागत साधारि, बिरुद सम्भारी हो,
सगुणा साहिब आपणौ रे।
भवसायर थी तारि, तुम्ह नइ कहियइ हो
सगुणा साहिब स्युं घणउ रे ॥४॥

साहिब नइ छइ लाज निज सेवक नी हो
सगुणा साहिब चाखिज्यो रे।
सेवक वे महाराज वचन हीयामइ हो
सगुणा साहिब आणिज्यो रे ॥५॥

लाख कोड मावीत जो नवि पूछइ हो
सगुणा साहिब प्रेम सु रे।
तो कुण राखइ प्रीति तउ कुण पालइ हो
सगुणा साहिब खेम सु रे ॥६॥

पास जिणेसर राजि पदवी आपउ हो
सगुणा साहिब ताहरी रे।
कहै 'विनयचन्द्र' निवाजि अरज मानेज्या हो
सगुणा साहिब माहरी रे ॥७॥

॥ श्रीगौड़ी पार्श्वनाथ बृहत्स्तवनम् ॥

राग—मल्हार

नाम तुम्हारो सांभळी रे, जाग्यउ परम सनेह।
ते तउ दिन दिन ऊलटइ रे, मानुं पावस ऋतु नउ मेह ॥१॥
गोड़ी पासजी हो ज्ञानी पासजी हो, परतख सुरतरु इण वार ॥
तुम पासे आव्या तणो रे, अधिक उमाहउ थाय।
पिण स्युं कीजइ साहिबा, आव्या मै छै अन्तराय ॥२॥ गो०॥
ते माटइ करिनइ मया रे, आपी मन उपगार।
आवी नइ मुझ थी मिलउ, दरसण थौ इकवार ॥३॥ गो०॥
तुम जेहवउ वलि कुण अछरे, अवसर केरो जाण।
निज अवसर नवि चूकियइ, करौ सेवक वचन प्रमाण ॥४॥ गो० ॥
तीन भवन मां ताहरो रे, झळकइ निरमल तेज।
सूरति देखी ताहरी वाल्हा हरखा आवै हेज ॥५॥ गो०॥
तुम मुख मटकउ अति भलो रे, जाणइ पूनिमचन्द।
आंखड़ी कमलनी पांखड़ी दीठां मइ सुखकन्द ॥६॥ गो०॥
दीपशिखा सम नासिका रे, अधर प्रवाली रंग।
दंत पंकति दाड़िम कुली दीपइ अग अनग ॥७॥ गो०॥
मुकुट विराजइ मस्तकइ रे, काने कुण्डल सार।
बांह बाजूबन्द बहिरखा दीपइ मोती नउ हार ॥८॥ गो०॥
नील वरण शोभा बणी रे, अहि लंछन अभिराम।
तुम सारीखा जगत मां वाल्हा रूप नहीं किण ठाम ॥९॥ गो०॥

तीन छत्र सिर शोभता रे चामर ढाळइ इन्द्र।
तुझ प्रभुता देखी करी मोह्या सुर नर नइ नागेन्द्र ॥१ ॥गो०॥
अपछर रुपइ तुझ आगणा रे, करती नाटक जोर।
तारी तारी पास श्री रे, ऊभी करइ निहोर ॥११॥गो०॥
चाकर केरी चाकरी रे, प्रभु आणो मन मांहि।
वाल्हेसर सुप्रसन्न थयी धरि हेत ग्रहउ मोरी बांहि ॥१२॥गो०॥
तुझ सू लागी मोहणी रे बीजा सूं नहिं काम।
सांभलो छोडो साहिबा, आवो आवो आतम राम ॥१३॥गो०॥
योगी भोगी तुझ भणी रे, ध्यावै नित एकान्त।
मुगति रमणि रस रागीयो, तु नीरागी भगवन्त ॥१४॥गो०॥
अश्वसेन नृप कुल तिलो रे, वामादेवी को नन्द।
ते साहिब नइ बीनवी, इम बीनवइ 'विनयचन्द' ॥१५॥गो०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

राग—सारंग

माई मेरे सांवरी सूरति सु प्यार ॥मा०॥
जाके नयन सुधारस भीने देख्यां होत करार ॥मा ॥१॥
वासों प्रीति लगी है ऐसी ज्यों चातक जलधार।
दिल में नाम बसे तसु निसदिन ज्युं हियरा मइ हार ॥मा०॥२॥
पास जिनेसर साहिब मेरे, प कीनी इक तार।
विनयचंद्र कहै वेग लहुं अब भव जल निधि को पार ॥मा ॥३॥

॥ श्री गाड़ी पार्श्वनाथ लघुस्तवनम् ॥

छोड्या गिरवर डूंगरा जी छोड्या विषम निवास।
ते तुम मुझ मेल्या गया जी सांभळि वाड़ी पास ॥१॥

परमगुरु माहरे तुमसुं प्रीति।
पामि सगुण तो सारिखा जी, निगुण न आवे चीत ॥२॥प०॥

नयणे निरख्या ताहरुं जी भलो थयो परभात।
मन मेलू था तु मिल्यो जी उल्हस्यो माहरो गात ॥३॥प०॥

सह तो कर्म का फेरवी जी तन मन ताहरउ हाथ।
खरी कमाई माहरी जी हिव हूं थयो सनाथ ॥४॥प०॥

अठवि करे अरापता जी वायें वादल दूर।
एह विरद सम्भारि ने चित चिंता चकचूर ॥५॥प०॥

सकल थउे तू पूरिवा जी घणा दरग ने छाड।
चाड़ अनेरा आगले जी किम्यो पहाडुं पाड ॥६॥पा०॥

पथने जागइ कारिमो जी काम गुणे ही नेह।
दिल भर दिल देवे छतो जी जिम बापईय मेह ॥७॥प०॥

प्रस्तावे ऊपर घर जी पद्मनी ए अरदास।
दरसण दे संतापने जी, जिम भो तिम पंपाम ॥८॥प०॥

मत वीसारेज्यो हिवे जी सौ बात इक बात।
जयगुण गुण करि हेरराज्या जी जिनचंद्र जगतात ॥९॥पा०॥

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

ढाल—आज माता जोगणी ने चालो जोवा जइये रे एहनी

भलौ थयो मुखड़ा मत मटको आंखड़ली अणियाली।
रूपालौ साहिब देखी नइ, तो सुं लागी ताली रे ॥१॥
राखि म्हारा चीता नइ किम मन री वातां कहियइ ॥आंकणी॥
ते पासिइ क्षमा नवि रहियइ, जे होवइ बहु मीता।
थे म्हारा प्रभु अन्तरजामी, मनड़ा रा मानीता रे ॥२ रा०॥
आज मिल्यउ थानइ कमाई पूवे अवसर पूरा।
प्रभु थारउ दर्शन देखन्तां पाप गिया पग पूठा रे ॥३ रा०॥
हियड़उ छइ मांहरउ हेवाळ सांझ सवार म देखइ।
थांसूं प्रीत करण नइ आवइ, गिणइ दिवस निज लेखइ रे ॥४॥
कर जोड़ी नइ थांसूं हवरी अरज करूँ सिरनामी।
सनमुख थइ शिवसुख द्यो नायक, सी कीधी छइ खामी रे ॥५॥
थांरउ जस मैं पहिला सुणियउ, ए प्रभु आस्या पूरइ।
तउ पोतानइ सेवक जाणी चिन्ता किम नवि चूरइ रे ॥६ रा०॥
जग मांहि तुं श्री चिन्तामणि, पारसनाथ कहावइ।
'विनयचन्द्र' नइ सुगति सूंपतां थारउ कांसु जावइ रे ॥७ रा०॥

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा जी एहनी

अरज अरिहंत अवधारियै जी चतुर चिन्तामणि पास।
आतुर दरसण निरखिवा जी मुंकीये केम निरास ॥१॥

वृपण ने पम्पड पांतरे जी तेह थगसी महाराज।
वांह अड दीजीये मो मणी जी, आज तोहिस रहे लाज ॥२॥
एक पखउ मई तो जाणीयो जी स्वामि सेवक व्यवहार।
भवरूपो वृप जिम देखिनेजी हुं रम्यो सरस अनुहार ॥३॥
नेह कीजे निज स्वारथे जी ते इहां को नहीं काइ।
तु निरंजण सही माहरी जी तिण भर कां नहिं थाइ ॥४॥
पग मरि कवण रुमो रहे जी जिहां नहिं साव मे साच।
कहे 'विनयचन्द्र' गिरुवाकृम्योजी करम यों देखिने दाव ॥५॥

॥ श्री पारवनाथ गीतम् ॥

ढाल—सरवर बारो हे नीर ह नमदा रो पाणी हालणो हेलो पहनी देशी

तूठा हे पास जिणद ।तू । वूठा हे अमृत मेहड़ा हे लो ।वू ।
रूठा हे पातक वृन्द ।रू० पूठा हे पग दे नापड़ा हे लो ।पू० ॥१॥
साचउ हे परम सनेह ।सा० लागउ हे प्रभु सुं माहरउ हे लो।
मुम्ह हकतारी हे एह ।मु० नेह कियां विन किम सरउ हे लो ॥२॥
समकित आम्यउ हे जोर ।स० अशुभ करम दूरउ गया हे लो।
कुमति न चांपइ हे कोर ।कु० संयम जोग वशियया हे लो ॥३॥
प्रगट्यो हे ध्यान श्री ज्ञान ।प्र । उदय थयउ अनुभव तणो हे लो।
आतम भाव प्रधान ।आ । सहज सतोष वाध्यउ घणो हे लो ॥४॥
सहुमां प्रभुनो हे भेरा ।स० जेम घृतादिक घोर मां हे लो।
भीलइ हे मुझ मन हंस ।भी० प्रभु गुण निर्मल नीर मां हे लो ॥५॥
जगव्यापी जिनराज ।ज० तिर्थंकर तेवीसमउ हे लो।
दिव सुख केरउ हे काज ।दि० चरणकमल प्रभुना नमउ हे लो ॥६॥

परमपुरुष श्री पास ।प । प्रणम्यां तन मन उल्लसइ है हो।
पूरइ हे सेवक आस ।पू । 'विनयचन्द्र' हियड़ बस्या है हो ॥७॥

॥ श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

राग—छाजनी

सुणि माहरी अरदास रे मन मोहनगारा म्हारा प्राण पिआरा।
आस पूरो रे बाल्हा पास निपट म करि नीरास ।म ।
सास तणी परि हुं तुम्ह सांभरे रे ॥१॥

माहरइ तुं हिज सज्जण रे ।म०।
ताहरी मूरति मननी मोहनी रे।
निरखि ठरइ तुम्ह नयण रे ।म ।
हियड़ो हेजालू विकसै माहरो रे ॥२॥
तुम्ह श्री लागो रंग रे ।म ।
करुणा वरुणा नो कारण पछ छेरे।
किम न पड़े मन भंग रे ।म ।
संग न छोडुं जिमओ ताहरउ रे ॥३॥
ताहरो मन नीराग रे ।म ।
राग घणौ रे मन मैं मोहरै रे।
ते किम पहुंचइ लाग रे ।म ।
एक हाथइ र ताली नवि पड़इ रे ॥४॥
बलि एहवउ नहि कोइ रे ।म ।
लेहनइ कहियइ रे मननी वातड़ी रे।

अलवि कह्यां सुं होइ रे ।म०।
मन ना चिंत्या रे कारज नवि सरइ रे ॥५॥
मोह मिथ्यामति भाव रे ।म०।
रवि मवि नइ घट माहि रहइ रे।
सुं ताहरउ परभाव रे ।म०।
विमुख न थायइ अरियण पइता रे ॥६॥
अधिक करइ आवाज रे ।म०।
राता माता रे हस्ती घूमता रे।
ते मृगपति नइ लाज रे ।ते०।
एह औलाणउ जिनजी आणियइ रे ॥७॥
कलिमां तूं कलिकाम रे ।म०।
धरियउ रे भरियउ गुण रयणे करी रे।
दुख सहु दूरि गमाय रे ।म०।
ऊहिर घरउ महिर तणी हियइ रे ॥८॥
भव जल निधि थी तारि रे ।म०।
बिरुद धरायइ रे साचउ तउ सही रे।
'विनयचन्द्र' जलधार रे ।म।
बरसइ रे सगलइ पिण जोवइ नहीं रे ॥६॥

॥इति श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

॥ श्री नारिंगपुर पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—आठ टकर कंकण लीयउ री नणदी मिरकि रहयउ मोरी बांह, कंकण मोल लीयउ पहनी वेंगी

मुनिजर ताहरी दरिसनइ रे जिनजी सफल थई मुझ आस।
मोरउ मन मोहि रह्यउ हरि जैसे मृग मधुर ध्वनि गीत ।।मो०॥
तु साहरइ मन मइ वस्यो रे, जि श्री नारंगपुर पास ॥१॥
तुम मुख कमल मिहालिवा रे, जि० रहती मयल उमेद ।।मो०॥
ते तुम्ह नइ मिलियाँ पछी रे जि० मागउ मन रउ भेद ।।मो०॥२॥
हुं सेवक तु साहरउ रे जि तु साहिब सुप्रमाण ।।मो०॥
तें मन हेख्यो माहरउ रे जि भावइ तउ जाण म जाण ।।मो०॥३॥
खिण इक जउ तुम्ह नइ तजु रे जि० तउ उपजै अंदोह ।।मो०॥
भरती पिण फाटइ हिया रे जि० पाणी वयय विछोह ।।मो०॥४॥
ताहरी सूरति मन वसी रे जि धरिसु निशि दिन ध्यान ।मो०।
जिण विध मो मन थाअ्यो र जि० न रहै माहरउ मान ।मो०॥५॥
चरण न मेल्हुं साहरा रे जि रहिसु केडइ लागि ।।मो०॥
फल पापति पिण पामस्यु रे जि० जेह लिखी छइ भागि ।मो ।६।
मइ तउ चीपउ मो हिसा रे जि० ताहरइ ऊपरि मोह ।मो०॥
विनयचन्द्र कहै माहरी रे जि० सगली तुम ने सोह ।मो०॥७॥

रहनेमि राजीमति स्वाध्याय

राग—सोरठ

शिवादेवी नंदन चरण वंदन चली राजुल नारि ।
प्रिय संगि रागी सवी मागी चलत लागी बार ॥

निज प्राणपति को नाम जपती हाथ जपती माल ।
तहाँ मास पावस कइ भये सें आइसइ जगत कृपाल ॥१॥
इण भांति सइ सखि आयउ वरषाकाल,
सउ सउ वरनत कवि सुविसाल ॥आंकणी॥
सजि बुंद सारी इपकारी भूमि नारी देख ।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सघल जलद उमेख ॥
घन घग्ग गर्जित खग्ग तर्जित भये वर्जित गेह ।
टम टमकि टमकत झमकि झमकत बिधि बिधि बीज कि रेह ॥२॥
भरहि भवाजइ गगन गाजइ वायु वाजइ सु हि ।
दिग चक्क मझकइ ताल झलकइ नीर झलकइ मु हि ॥
रंग स्याम बादर देखि दादुर रटत रस भरि रयन ।
घन मोर बोलइ पिच्छ डोलइ फिरत लोलइ पुनि मयन ॥३॥इ०॥
उल्लसित हीयरो करि पपीयरो करत पिउ पिउ सोर ।
विरह सइ पीरी अति अधीरी करत विरहनि जोर
अंधकार पसरइ वैर विसरइ परस्पर भूपाल
सर्वरी राका देत शंका दिवसन मइ घरीयाल ॥४॥इ०॥
जहाँ परत धारा अति उदारा जानि गृह मउ यन्त्र
स्वाधीन वनिता सौख्य जनिता करत कंत निर्मंत्र
मदन के माते रंग राते रसिक लोक अपार
चढि कइ गोखइ मनइ चोखइ गावत मेघ मल्हार ॥५॥इ०॥
पंचरंग चापें अधिक ओपइ इन्द्र धनुष गभीर ।
चक मेघि सोहइ चित्त मोहइ सर सरित के तीर ॥

जहाँ करत क्रीड़ा सुमाइ बीड़ा चापती प्रिय जात।
केसरी सारी मूछ मारी पहिरि के हर्ष न मात ॥६॥ढ०॥
ससि सूर ढांका जहाँ तहाँ के पंथ पूरे नीर।
वकुल के बन में झिनकि झिन मई भकोरतहिं समीर॥
बहु सलिल पाय वेलि जाय सघन वृक्ष सुहाय।
झंकार भमरे करत गुणरे सु वत पल्लव पाय ॥७॥ढ०॥
बहिसइ लहरी भरी जलसइ नदी आवत पूर।
करणी के दरसात निकट निरखत छिन करत चकचूर॥
सूकत सवासौ तरु निवासौ करत पंखी वृन्द।
घन बिग्रवारे सर संमारे हंस मिथन निरदंद ॥८॥ढ०॥
रंगत रसीली निपट मीली हरी प्रगटत ज्याँहि।
कोमल अमोला मृदु ममोला छाय से तिन माँहि॥
उच्छाह सेती करत खेती करसनी सुविचार।
सब लोक कु आनंद उपज्यौ प्रम्यौ है सुरित प्रचार ॥६॥ढ०॥
बरसात इन परि भरी मंडइ छिन न खंडइ धार।
राजीमती के वस्त्र भीने सबल भीने सार॥
पकन गुफा में जाहि तामइ सुठाय सब चीर।
भई नगन रुपइ अति सरूपई निरखी नेमि के वीर ॥१०॥ढ०॥
निरखि के भागी तुरत जागी मदन नृप की छाक।
घट भमत ताकी लगि भराकी ज्युं कुलाल की चाक॥
चिहुं ओर घेरी भग हेरी नृप सुवा सुत्र काज।
कहै वचन एसे अटपटे से सुनत ही आवै लाज ॥११॥ढ०॥

हूं गुफावासी नित उदासी रहत हूं इन ठौर।
व्यायाम तोडूं मिली मांडूं चित लीयउ तें चोर॥
भोगवउ हूं तउ अति सिरत्यारी करो प्यारी प्यार।
अब बिरह टारौ हृदय ठारौ मिलौ मिलौ प्रान आधार ॥१२॥इ०
तब चीर पहिरइ सबर गुहिरइ मग करिकइ गूढ़।
राजुल भवानी वदत वानी सुनि अग्यानी मूढ़॥
मुनि मांग मूंछइ चित्त पूछइ वृथा तु इन वेर।
क्युं भव बिगाडइ लाज गमाडइ रहि रहि जियकु फेरि ॥१३॥ इ० ॥
निग्रन्थ निपुर पहुत पन्थुर इद कन्धर हाथ।
अब धरत मधुरा मिर महामत ठौर आवत माथ॥
सु मदुपदेश विराग देकइ विमल पकड़ पान।
पूजन्यौं सा राजनमि बिरची गइ जहाँ यदुपति मइ न ॥१४॥इ० ॥
यूं सुजस वाधी आतम माधी गये सुगति मझार।
कलियुग इमगइ नाम जाकउ लेत है समार॥
परि प्रान अन्तर दशा सुरमा मनह मच्छर छांड़ि।
कवि विनयचन्द्र जिनेन्द्र भावै अपन है कर जोरि ॥ १५ ॥इ० ॥

इति श्री रहनेमि राजीमती सज्झाय

॥ श्री स्नेह निवारणे स्थूलिभद्रमुनि सज्झाय ॥

राग—केदारो ढाल—मेरे ममता ...

कामिनि मांडी भामिनी रे हां परदेशी नै माय। नह न कीजिये।
अमर मना परि न सम रे हां त नहीं चाहने दाय ॥ नह० ॥१॥

ते वीर रस मां थया कायर, जेह योगी वापड़ा।
थरथरइ फिरता तेह दीसइ, उदासीन थयाइ खड़ा ॥५॥
भयानक रसइ भेदियउ, मगसिर मास सनूरो जी।
मांग सिरइ गोरी धरइ वर भरमी मां सिन्दूरो जी॥
सिन्दूर पूरइ रूप ओरइ मदन झाल अनल जिसी।
तिहाँ पड़इ कामी नर पतंगा, धरी रंगा धसमसी।
वलि अधर सधर सुधारसइ करि सींचि नव पल्लव करइ।
तिण प्रीति रीतइ भीति न हुवइ एम कोशा उच्चरइ ॥६॥
रस बीभत्से वासियउ, पोष महीनउ ओपो जी।
दोषी पोषइ विन वृक्षु, हिम सकोचित होयो जी॥
संकोच होवइ प्रौढ रमणी, संगथी अपु कन्त ज्युं।
तिम कंत हुमचउ वेष देखी थइ बीभत्स घणुं मनुं॥
ए प्रौढ रमणी सयण सेवइ एकली किम थावए।
हेमंत ऋतु मइ प्रिय उछगइ सेवतु मन भावए ॥७॥
माघ निदाघ परइ दहे ए अद्भुत रस देखुं जी।
शीतल पणि अदृता घणुं प्रीतम परतिख पेखुं जी॥
पेखुं तुम्हा सिव साधु रंग पणि रम्या मुझ हृदयस्थलइ।
ए मृषा सम्प्रति तुम्ह विना मुझ प्राण क्षण क्षण टलवलइ॥
इण परइ प्रश्न ना भग दीसइ परिग्रह भणी आविया।
तउ पद अचरिज रस विशेषइं शुद्ध चारित्र भाविया ॥८॥
फागुन शान्त रसइ रमइ आणी भव भव भावा जी।
अनुभव अतुल दर्सन मां परिमल सहज सभावो जी॥

सहज भाव सुगम तेजइ पिचरकी सम जल रसइ ।
गुण राग रंग गुलाल उडइ, करुण ससबोही बसइ ॥
परमाग रंग मृदंग गूँथइ, सत्त ताल विशाल ए ।
समकित तंत्री तंत झमकइ, सुमति सुमनस माल ए ॥९॥
चैत्रइ विचित्र थइ रही अंब रुणी बनरायो जी ।
मुइ शाखा अंकुरित थइ, सोइ बसंतइ पायो जी ॥
पाई बसतइ सोइ जिण परि, प्रियागमनइ पद्मिनी ।
सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी ॥
रति हास्य मुख थइ स्थायि भावइ, शोभती कोशा कहइ ।
हुं कामिनी गजगामिनी मुझ, तो विना मन किम रहइ ॥१०॥
वैशाखइ वन फूलीया हास रसाल सुसाखइ जी ।
अंब सु कलरव कोकिला पंचम रागइ भाखइ जी ॥
भाखइ तिहाँ वलि भाव आठे सरस सात्विक सुखकरा ।
पुलक स्वेद अस्तंभ स्वर नइ स्वम आँसू निझरा ॥
इहाँ काम वेरी पम अवस्था भरइ देहइ दंपती ।
प्रिउ देखि मुझ मइ तेह प्रगटे कोशा मुख इम जपती ॥११॥
जेठ दीहाडा जेठ ना लागइ ताप भयाहो जी ।
विरहानल तपइं विपड प्रिय सुम चंदन वाहो जी ॥
वाहि चंदन सुगम सेज्याइ भाव संचारिक थयइ ।
तेत्रीस धृति मति स्मरण जडता शाक निद्रादिक समइ ॥
उन्मत्तता आनंद भय मद माह उत्सुक दीनता ।
आरंभ बाधइ ए विरोधइ रहइ वेम निरीहता ॥१

नेह थी नरक निवास नेह सबल दुख पास ।
नेहे देह विनाश नेह सयल दुख रास ॥ नेह० ॥ आ ॥
परदेशी तउ पाहुणा रे हां, मेल्ही जाय निराश । नेह० ।
तिण थी केहउ नेहड़उ रे हां न रहै जे थिर वास । ने० ॥२॥
पहिलि मिलीयइ नेह सुं रे हां करियइ हास विलास । ने० ।
मिलि नइ वीछड़ियौ पछै रे हां तब मन होइ उदास । ने० ॥ ३ ॥
वालहा नइ वल्लावता रे हां पीड़इ प्रेमनी झाल । ने० ।
हीयड़ो फाटइ मति पणु रे हां मांखइ विरह जंजालि । ने० ॥४॥
वलतां मुंह भारणि हुवै रे हां, अंग तपइ अंगार । ने० ।
आंखड़ियइ आंसू पड़इ रे हां जिम पावस जल धार । ने० ॥५॥
मत किणही सुं लागिज्यो रे हां, पापी एह सनेह । ने० ।
धुखइ न धुंओं नीसरइ रे हां बलइ सुरंगी देह । ने० ॥ ६ ॥
कोशा नइ थूलिभद्र कहइ रे हां, नेह नी वात न माखि । ने० ।
तिण कीधइ ही सारियइ रे हां विनयचन्द्र ए साखि । ने० ॥७॥

श्री थूलिभद्र बारहमासा

ढाल—चउमासियानी

आषाढ़इ आशा फली कोशा करइ सिणगारो जी ।
आवउ थूलिभद्र वालहा प्रियुडा करइ मनोहारो जी ॥
मनोहार सार शृङ्गार रसमां अनुभवी थया तरवरा ।
वेलड़ी वनिता स्यइ आलिंगन भूमि भामिनी जलधरा ॥
जलधारा करइ नदी विलसी एम बहु शृंगार मां ।
सम्मिलित थइ नइ रहै अहनिशि पणि तुम्हे प्रिय मार मां ॥ १ ॥

ते वीर रस मां थया कायर, जेह योगी वापड़ा।
घरघरइ फिरता तेह वीभइ उदासीन पणइ सदा ॥५॥
भयानक रसइ भेदियउ, मगसिर मास सनूरो जी।
मांग मिसइ गोरी धरइ वर लछमी मां सिन्दूरो जी॥
सिन्दूर पूरइ रूप जोरइ, मदन काम अनल किसी।
तिहां पड़इ कामी नर पतंगा, धरी रंगा धसमसी।
वलि अधर सधर सुधारसइ करि सींचि नव पल्लव करइ।
तिण प्रीति रीतइ भीति न हुवइ एम कोशा उच्चरइ ॥६॥
रस बीभत्से वासियउ, पोष महीनउ आयो जी।
पोषी पोषइ दिन पूतळु, हिम संकोचित होयो जी॥
संकोच लावइ प्रौढ रमणी संगमी जपु कंत ज्यु।
तिम कंत तुमचउ वेष देखी मइ बीभत्स पणुं भणुं॥
ए प्रौढ रमणी सयण सेवइ एकला किम आवए।
हेमंत ऋतु मइ प्रिय लागइ जैम्यु मम भाव ए ॥७॥
माघ निदाघ परइ दहै ए अद्भुत रस देखुं जी।
दीवस पणि अड़ता भणु मीवम परतिख पेखुं जी॥
पखुं तुम्हा सित साधु दग पणि रखा मुझ हृदयस्थळइ।
ए मृषा समति तुझ विना मुझ प्राण क्षण क्षण टळवळइ॥
इण परइ व्रत ना भग दीसइ परिसह भणी भाविया।
तउ पह अचरिज रस विशेषइ शुद्ध चारित्र भाविया ॥८॥
फागुण शान्त रसइ रमइ प्राणी भव भव भाखा जी।
अनुभव अतुल वसंत मां परिमल सहज समायो जी॥

सहज भाव सुगंध तेलइ पियरकी सम बल रसइ ।
गुण राग रंग गुलाल छबइ, करुण ससघोही बसइ ॥
परभाग रंग मृदग गूजइ, सख ताळ विशाल ए ।
समकित तंत्री तंत मधूरक, सुमति सुमनस माल ए ॥९॥
चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणो वनरायो जी ।
कुइ शाखा अंकुरित थइ, सोइ वसंतइ पायो जी ॥
पाई वसंतइ सोइ जिम परि, प्रियागमनइ पदमिनी ।
सिणगार विन पिण मुदित होवइ प्रेम पुलकित भगिनी ॥
रति हास्य मुख थइ स्थायि भावइ शोभती कोशा कहइ ।
हुं कामिनी गजगामिनी मुझ, तो विना मन किम रहइ ॥१०॥
वैशाखइ वन फूलीया, द्राख रसाल सुसाखइ जी ।
अंब सु कलरव कोकिला पंचम रागइ भाखइ जी ॥
भाखइ तिहां वलि भाव आठे, सरस सात्विक सुलक्खा ।
पुलक स्वेद अस्पष्ट स्वर भई स्तंभ आंसु निझरा ॥
इहां काम केरी दस अवस्था धरइ देह दंपती ।
प्रिय देखि मुझ नइ तेह प्रगटे, कोशा मुख इम जंपती ॥११॥
जेठ दीहाडा जेठ मा, लागइ ताप अथाहो जी ।
विरहानल तपइ हियउ प्रियु तुम चंदन बांहो जी ॥
बांह चंदन सुगम सेव्यइ भाव संचारिक थयइ ।
तेत्रीस धृति मति स्मरण चिंता शोक निद्रादिक सयइ ॥
उन्मत्तता आनंद भय मद मोह उत्सुक दीनता ।
वाकंम व्याधइ ए विशेषइ, रहइ प्रेम निरीहता ॥१२॥

श्री स्थूलिभद्र मुनिंदना, मणीया बारहमासो जी।
नवरस सरस सुधा थकी सुणतां अधिक उल्हासो जी॥
उल्हास धरि मुनिराज गायो जिण रहायत वागरमां।
निज नाम अति अभिराम गुणसी चउवीसी शीलसंखमां॥
गुरुराज ज्ञाननिधान पाठक, ज्ञानतिलक प्रसाद सुं।
गुर्जरा मंडन राजनगरइ, 'विनयचन्द्र' कहइ इसुं॥१३॥

॥ श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम् ॥

इ चउवी गुरु नित गाजै, कलि दिन दिन अधिक दिवाजै।
सु गच्छपति सिर छाजै॥१॥ राजेश्वर पाटियइ पाटधारउ।
क बीनतडी अवधारो पाटोधर। श्रीसंघना बंछित सारउ॥रा०
श्रीजिनधर्मसूरीसर पाटइ पूज्य थाप्या थणै गहगाटइ।
मर नारी आगे खुड़े वाटइ॥ रा ॥२॥
वंशे बहुरा सिरदार, तात सांवलदास मल्हार।
माता साहिबदे घरि हार॥ रा० ॥३॥
हंस परि मधुरी सी वाणि अति अद्भुत रूप रसाल।
मारग मिथ्यात चढाल॥ रा ॥४॥
तेजे करि जाणे सूर, शशिधर परि शीतल पूर।
सु निकवट अधिकउ नूर॥ रा ॥५॥
नित मित चढती कला राजइ सुगवर जिनचंद विराजइ।
सु श्रेण्यां सब दुख भाजइ॥ रा० ॥६॥
छत्तीस गुणे करि सोहइ, गुरु भविक तणा मन मोहइ।
जगि इण समवड नहिं कोई॥ रा० ॥७॥

नित पाळे पंचाचार, छकाय रक्षा करे सार।
ब्रह्मचर्य उत्तम व्रत धार ॥ रा० ॥ ८ ॥
धन नगरी मइ धन वेश जहाँ सद्गुरु करे निवेश।
कीरति जग में सप्रकास ॥ रा० ॥ ९ ॥
वंदो भवियण हित आणी, पूजजी नी मीठी वाणी।
सांभळतां अमिय समाणी ॥रा०॥१०॥
मानइ मेहनइ राण राया, प्रणमीजे महसम पाया।
मुनि 'विनयचन्द्र' गुण गाया ॥रा०॥११॥

ग्यारह अंग सज्झाय

(१) श्री आचारांग सूत्रसज्झाय

देशी—हठीला वयरी की

पहिलौ अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे सगुणनर
वीर जिणंदइ भाखीयउ रे लाल, रचाई खास उपांग रे सगुणनर।
बलिहारी ए अंगनी रे लाल, हुं जाउं बार बार रे स०
विनय गोचरी आदि दे रे लाल,
जिहां साधु तणउ आचार रे स० ब० । आंकणी।
सुयखंध दोइ जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचीस रे स०
उद्देशादिक जाणियइ रे लाल पंच्यासी सुजगीस रे स० ब०। २।
देव सुगति करी सोभता रे, पद अढार हजार रे स०
अक्षर पदनइ छेहडइ रे लाल, संख्याता श्रीकार रे स० ब०। ३।
गमा अनंता जेहमां रे, वलि अनन्त पर्याय रे स०
त्रस परित्त तउ ह ह्यां रे लाल थावर अनन्त कहाय रे स० ।।४।।
निबद्ध निकाचित शासता रे, जिन प्रणीत ए भाव रे स०
सुणतां आतम ऊलसइ रे लाल प्रगटइ सहज सभाव रे स० ।।५।।
श्रावक वारू श्राविका रे, अंग धरी उल्लास रे स०
विधिपूर्वक सुणज्यो सामकत रे, लाल गीतारथ गुरु पास रे स० ।।६
ए सिद्धान्त महिमा निलौ रे, उतारइ भव पार रे स०
'विनयचन्द्र' कहइ माहरउ रे लाल पहिलउ अंग आधार रे स० ।।७।।

।।इति श्री आचारांगसूत्र स्वाध्याय ।।

(२) श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय

देशी—रसियानी

बीजउ रे अंग हिवइ सहु सांभळो
मनोहर श्री सूयगडांग। मोरा साजन।
त्रिणिसइ त्रेसठि पाखंडी तणउ
मत खंडयउ धरि रंग। मोरा साजन।
मीठी रे लागइ वाणी जिन तणी लागइ जेह थी रे ग्यान।मो०।
ए वाणी मन भावी माहरउ मानु सुधा रे समान।मो० मी०।
रायपसेणी उपांग छइ जेहनु, एतउ सूत्र गंभीर।मो०।
जाणइ रे अर्थ बहुश्रुत महना एतउ क्षीर नीरधि नुं रे नीर मो०।२।
पहना रे सुयखंध दोइ छइ सही वलि अध्ययन त्रेवीस।मो०।
वरग सगुदरा जिहां भला सज्झायइ रे तेत्रीस मो ॥३॥
नय निक्षेप प्रमाणइ पूरिया पद छत्रीस हजार।मो०।
संख्याता अक्षर पद छइ इहां, कुण लहइ एहनुं रे पार मो० ॥४॥
गमा अनंता वलि पर्याय ना भेद अनंत जेह मांहि।मो०।
गुण अनंत त्रस परित कह्या वली थावर अनंता रे क्यांहि ॥५॥
निबद्ध निकाचित जे सासय कह्या जिन पन्नत्ता रे भाव।मो०।
भाखी रे सुन्दर पद परूवणा चरण करण नी रे आव।मो० ६॥
करिवइ सगति युगति ए सूत्रनी निरवय लहिवइ मुक्ति।मो०।
विमलचन्द्र कहइ मानउ एह थी आतम गुण नी रे शक्ति॥७॥

॥ इति श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय ॥

(२) श्री स्थानांग सूत्र सज्झाय

ढाल—आठ टके कंकणा लीयो री नणदी थिरकि रही मोरी बाँह पचेली

त्रीजउ अंग सकउ कहइ रे जिनजी, नामइ श्री ठाणांग।
मोरो मन मगन थयउ। हाँ रे देखि देखि भाव
हाँ रे जिहाँ जीवाजीव स्वभाव ।मो०। आंकणी ॥
सबल युगति करि भाखउ रे जिनजी, जीवाभिगम उपांग ॥१॥

एह अंग मुझ मन वस्यउ रे जिनजी, जिम कोकिल चित अंब।
सुथिर भाव करि गावतउ रे जिनजी आज लउ एह आलंब ॥२॥

कूट शैल शिखरी शिला रे जिनजी कानन नइ वलि कुण्ड ।मो०।
गह्वर आगर द्रह नदी रे जिनजी जेहमां भाख्या अखण्ड मो० ॥३॥

दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण पर्याय प्रयोग ।मो०।
परित जेहनी वाचना रे जिनजी संख्याता अनुयोग ॥४॥

वेष्ट सिलोक निजुत्तिडे रे जिनजी संग्रहणी पडिवत्ति ।मो०।
ए सहु संख्याता इहाँ रे जिनजी सुणताँ उल्लसइ चित्त ।मो० ५॥

सुयखंध एक राजतउ रे जिनजी दश अध्ययन उदार ।मो०।
उद्देशा इकवीस छइ रे जिनजी, पद बहोत्तर हजार ।मो० ६॥

रागी जिन शासन तणा रे जिनजी, सुणइ सिद्धांत वखाण ।मो०।
विनयचन्द्र कहइ ते हुवइ रे जिनजी परमारथ ना जाण ।मो०७॥

॥ इति श्री स्थानांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(४) श्री समवायांग सूत्र सज्झाय

चाल—चांदरा महलां ऊपरि मोर झरोखे कोइलो हो लाल झरो
चउथउ समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ।सु०।
पन्नवणा उपांग करी सोभा घणी हो लाल ।क०।
अर्द्ध मागधी भाषा भासा सुरतरु तणी हो लाल ।सा०।
समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणी हो लाल ।प०।।१।।
जीव अजीव नइ जीवाजीव समास थी हो लाल कि जी०
छठीयइ एह मां भाव विरोध कोई नथी हो लाल वि०
भांगा तीन द्रव्यसमयादिकना जाणीयइ हो लाल आदि०
लोक अलोक नइ लोकालोक वखाणीयइ हो लाल कि लो० ।।२।।
एक थकी लइ सत समवाय परूपणा हो लाल स०
कोड़ाकोड़ि प्रमाण कि जाव निरूपणा हो लाल कि जा०
बारस विह गणिपिटक तणी संख्या कही हो लाल त०
शासता भव अनन्त कि सइ पइना सही हो लाल कि० ।।३।।
सुयखंध अध्ययन उद्देसादिक भला हो लाल उ०
संख्याया एक एक प्रत्येकइ गुणनिला हो लाल प्र०
पद एक लाख चउमाल सहस ते उत्तरा हो लाल स०
पद नइ अम अक्षर संख्याता अक्खरा हो लाल सं० ।।४।।
भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करो मोहइ सदा हो लाल क०
सुणतां भेद गंभीर विपति न हुवइ कदा हो लाल वि०
देव न भावइ अंग कि अंतरगति हमी हो लाल कि अं०
जल भरमंगह जाए कि शुभ न हुवइ सुणी हो लाल किं० ।।५।।

बाम्यउ परम सनेह जिणंद सुं माहरउ हो लाल जि०
ठव्या शास्त्र मिथ्यात सूत्र आण्यउ खरउ हो लाल सू०
जिम मालती लही भृ ग करीरइ नवि रहइ हो लाल क०
ईसर सिर सुरगंग तजी पर नवि वहइ हो लाल त० ॥६॥
ए प्रवचन निर्मल तणउ सुरसइ बहु हो लाल त०
साकर सेलडी द्राख थकी पिण मीठडउ हो लाल थ
सी कहीयइ बहु बात 'विनयचन्द्र' इम कहइ हो लाल वि०
पहुना सुणिनइ भाव भाता अति गहगहइ हो लाल भो० ॥७॥

॥ इतिश्री समवायांग सूत्र स्वाध्याय ॥

(५) श्री भगवतीसूत्र सज्झाय

देशी—पंथीडानी

पंचम अंग भगवती वाणियइ रे, जिहां जिनवर ना वचन अथाह रे
हिमवंत पर्वत सेती नीकल्या रे मानु गंगा सिन्धु प्रवाह रे ।१।पं०
सुरपन्नत्ती नामइ परगडइ रे जेहनउ छइ उदाम उमंग रे ।
सूत्र तणी रचना करीया जिसी रे मोहिला अर्थ ते सजल तरंग रे
इहां तउ सुयक्खंध एक अति भलउ रे
एक सउ एक अध्ययन उदार रे ।
दस हजार उद्देशा सोहता रे,
जिहां कणि प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥३।पं०॥
पदवद दोइ लाख अरथइ भर्या रे,
ऊपरि सहस अट्टयासी जाणि रे ।

लोकालोक स्वरूप नी वरणना रे,
विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ।।७।।पं०।।
करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे
धरियइ शुभगुरु ऊपरि राग रे।
सुणियइ सूत्र भगवती रंग सुं रे,
तउ होइ भवसायर नु ताग रे ।।८।।पं०।।
गौतम नामइ नाणुं मुकीयइ रे,
सम्यग् ज्ञान वय होइ खेम रे।
कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे,
भगति युगति मन आणी प्रेम रे ।।९।।पं०।।
इण परि एह सूत्र आराधतां रे,
इण भवि लीजइ वंछित काज रे।
परभवि विनयचन्द्र कहइ ते लहइ रे
मोहन मुगतिपुरी नउ राज रे ।।१०।।पं०।।
इतिश्री भगवती सूत्र स्वाध्याय ।

(६) श्री ज्ञातासूत्र सज्झाय

ढाल—बिंद लाल लाल्या राजाजी रे मातीयड़ की चाली ।

छठुं अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियइजी
तेहना ढइ धर्म अधिक लक्षण हो।
म्हारी सुणिज्यो धरि नेह सिद्धान्त नी वातड़ी जी।
प्रथमे सुणतां गाढउ रस ऊपजइ जी
मधुरता वर्जित जिण मधुकइ हो ।।१।।म्हा०।।

जम्बूद्वीप पन्नती उपांग छट्ठ पाछुं जी,
इण माहे जिनपूजा नी विधि जोर हो म्हा०
चपक मुनि परम शांतरस अनुभवइ जी
चपक मुनि करइ समा नी सोर हो म्हा०।२।
नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणा जी
समोशरण राजा ना मात नइ तात हो म्हा०
धर्माचारिज धर्मकथा तिहां दाखवी जी,
इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो म्हा०।३।
भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यया जी,
सूत्र परिग्रह बारू तप उपधान हो म्हा०।
संलेखण पच्चखाण पादपोपगमनता जी
स्वर्गागमन सुकुल उत्पत्ति प्रधान हो म्हा०।४।
बोधिलाभ वलि अंत ते अंत किया कही जी
धर्मकथा ना दोइ अधिक सुतखंध हो म्हा०
पहिला ना अगणीस अध्ययन ते आज छइ जी,
बीजा ना दस वर्गे महा अनुपम हो म्हा०।५।
स ठ कोड़ि तिहां सवा कथानक भाखीयाजी
माहरा वलि अगणीस कहेस हो म्हा०
संख्याता हजार भला पद पद्मना जी,
पद थकी थायइ कुमति किलेस हो ।।६ म्हा०
विनय करे ने गुरु मो बहु परवाजी
देखनइ सुत सुणतां बहु फल होइ हो म्हा०

ते रमीया मन वसीया विनयचन्द्र मन जी,
मन मांहि विराइ साचो एक कहु होय हा ।७ मां०।
॥ इति श्री ज्ञाता धर्मकथांग स्वाध्याय ॥

(७) श्री उपासकदसांग सूत्र सज्झाय

हिवइ सातमइ अंग ते सांभलउ, उपासक दशा नामइ चंग रे।
श्रमणोपासकनी वर्णना जम चन्द्रपन्नति छत्तंग रे।।१।।
मन लागउ र मारउ सूत्र थी एतउ भय थइ राग तरंग रे।
रस राता गुण ज्ञाता सहइ परमारथ सुविहित संग रे।।२।।
इण अंग सुयक्खंध एक छइ अध्ययन उद्देशा विचार रे।
दस दस सत्यापइ वागम्या पद पिण संख्यात हज्जार रे।।३।।
आर्णदादिक श्रावक तणउ गुणतो अधिकार रसाल रे।
रस लागउ जागइ मोहनी मांताजन नइ ततकाल र।।४।।
माता आगलि तउ वाचतां गीतारथ पामइ रीझ रे।
जे अद्दरथ ममम्झ नहीं तेह सुं तो करिवी खीज रे।।५।।
दश श्रावक तइ हुवां भाखिया पिण सूत्र मध्यत नहि कोई रे।
ते माटइ शुद्ध श्रावक मणो एक अर्थनी धारणा होइ रे।।६।।
साचा होअइ तह प्रत्यपियइ निस्संक पणइ सुजगीस रे।
कवि विनयचन्द्र कहइ सुं थयउ, जउ कुमती करिस्यइ रीस रे।।७।।
॥ इति श्री उपासक दसांग सूत्र स्वाध्याय ॥

(८) श्री अंतगड़दशांग सूत्र सज्झाय

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणाजी, एहनी

आठमो अंग अंतगड़दशाजी, सुणि करउ कान पवित्र।
अंतगड़ केवली जे थया जी, तेहना इहाँ रे चरित्र ॥१॥ आ०
कर्म कठिन दल चूरता जी, पूरता आगमनी आस।
जिनवर देव इहाँ भासता जी शासता अर्थ सुविलास ॥२ आ०॥
सकल निक्षेप नय भंग थी जी, अंगना भाव अभंग।
सहज सुख रंगनी रसिका जी कसिका जास उमंग ॥३ आ०॥
एक सुयखंध इणि अंग नउजी वर्ग छइ आठ अभिराम।
आठ उदेशा छइ वली जी संख्याता सहस पद ठाम ॥४ आ०॥
आठमा अग ना पाठमइ जी, एहवइ छइ रे मीठास।
सरस अनुभव रस ऊपजइजी संपजइ पुण्य नी राशि ॥५ आ०॥
विषय छपन्न मद में हुवइ जी निरविषयो सुण्यां थाइ।
जिम महाविष विषधर तणउ जी नाग मत्रइ सुण्यां जाइ ॥६॥
अमृत वचन मुख वरसती जी सरसती करउ रे पसाय।
जिम विनयचन्द्र इण सूत्रना जी, तुरत छइइ अभिप्राय ॥७ आ ॥
॥ इति श्री अंतगड़ दशांग स्वाध्याय ॥

(९) श्री अणुत्तरोववाई सूत्र सज्झाय

देशी—नणदल बींदली दे, एहनी

नवमो अंग अणुत्तरोववाई, एहनी रुचि मुझ मन आई हो।
भावक सूत्र सुणउ॥
सूत्र सुणउ हित आणी, एता वीतराग नी वाणी हो ॥१ भा०॥

तस कल्पावतंसिका नामइ, सोहइ अंग मकामइ हो ।।आ०।।
एहो आगम नइ असुकूला, मानु मेरुशिखर नी चूला हो ।।१०।।
ए सूत्र नुं नाम सुणीजइ, तिम तिम अंतरगति मीजइ हो ।।आ०।।
भगत्इ कोई नवल सनेहा, पइ थी अम्बइ मोरी देहा हो ।।आ० ३।।
अणुत्तर सरपद जे पाया तेहना गुण इण मां गाया हो ।।आ०।।
नगादिक भाव वखाण्या, ते तउ बहुइ अंगइ आण्या हो ।।४।।
इहां एक सुयक्खंध बारू, जिण्ह वग वली मनोहारू हो ।।आ०।।
छहेरा त्रिण्ह सनूरा सम्यात सहस पद पूरा हो ।।आ० ५।।
अम्हे सूत्र सुणावुं तेहनइ सारी श्रद्धा होवइ जेहनइ हो ।।आ०।।
श्रोता नी प्रीति जगावुं निरख नइ मुंह न छगावुं हो ।।आ ६।।
जे सुणतां करइ चकोर, ते तउ माणस नहीं पिण ढोर हो ।।आ ।।
कवि विनयचन्द्र कहइ साचउ श्रुत रगइ मनु को राचउ हो ।।आ।।

।। इति श्री अणुत्तरोववाई सूत्र स्वाध्याय ।।

(१०) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र सज्झाय

ढाल—आया आम पधारो पूजि

दशमउ अंग सुरंग सोहावइ, प्रश्नव्याकरण नामइ ।
सूत्र कल्पतरू सेवइ तेहउ, चिदानन्द फल पामइ ।।१।।
आवउ आवउ गुण ना जाण तुम्ह नइ सूत्र सुणावुं ।।आ०।।
पुष्पकली जिम परिमल महकइ, गुण पराग नइ रागइ ।
तिम अंग पुष्पिका लहनउ ओर जुगति करि आगइ ।।२ आ०।।
अंगुष्ठादिक जिहां प्रकाश्या प्रश्नादिक अति रूडा ।
ते हइ अष्टोत्तर सउ एतउ सूत्र मध्य मणि चूडा ।।३ ।।आ ।।

आस्रव द्वार पाँच इहाँ आख्या, पाँचे संवर द्वारा।
महामंत्र वाणी माँ भाखीयइ, भवि भेद सुखकारा ॥७॥आ०॥
सुयक्खंध एक बरामइ अंगइ, पणयालीस अज्झयणा।
पणयालीस उद्देशा वलीपद, सहस संख्यात नी रयणा ॥८॥आ०॥
जे नर सूत्र सुणइ नहि काने, केवल पोषइ कामा।
माया मांहि रहइ लपटाणा ते नर इम ही आया ॥९॥आ०॥
सूत्र मांहि तत्त मार्ग दोइ छइ, निश्चय नइ व्यवहारा।
'विनयचन्द्र' कहइ ते आदरीयइ तजिमइ मदन विकारा ॥१०॥आ०

॥ इतिश्री प्रश्न व्याकरण स्वाध्याय ॥

(११) श्रीविपाकसूत्र सज्झाय

ढाल—तारि करतार संसार सागर थकी एहनी

सुणउ रे विपाक श्रुत अंग इग्यारमउ
चतुर चितधार सुणी भेरी।
ललित सर्वांग जस मधुर पुण्यचूलिका
मूलिका पाप आतङ्क केरी ॥१॥सु०॥
अशुभ किंपाक सम दुकृत फल भोगवी,
नरक माँ नरक जे थया प्राणी।
सुकृत फल भोगवी स्वर्ग माँ जे गया
तास वक्तव्यता इहाँ आणी ॥२॥सु॥
दोइ सुयखंध नइ बीस अध्ययन वलि,
बीस उद्देस इहाँ जिन प्रभु भइ।

सहस सख्यात पच पुन्न मचकुन्द जिम
बहुल परिमल भ्रमर चित्त गु जइ ॥३॥सु०।

सरस चपकलता सुरभि मद्ध मद्द रुचइ,
अन्य उपगार नी बुद्धि माटइ।
सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियइ
जेहथी पुण्य सुख अचल खाटइ ॥४॥सु०॥

बंध मइ मोक्ष ना बेउ कारण अछइ
दुकृत नइ सुकृत ओळख विचारी।
दुकृत ना परिहरी सुकृत मइ आदरी
जिन वचन धारियइ गुण समारी ॥५॥सु

म करि रे म करि निंदा निगुण पारकी
नारकी तणी गति काइ बंधइ।
मारकी प्रकृति तजि सहज संतोष भजि
लागि प्रभु सौमकी धम धंधइ ॥६॥सु ॥

सुख अनइ दुक्ख विपाक फळ दाखव्या
अंग इग्यारमइ वीतरागइ।
चिर जयउ वीर शासन जिहां सूत्र थी
कवि 'विनयचन्द्र' गुण ज्योति जागइ ॥७॥सु०

॥ इतिश्री विपाक सूत्राङ्ग स्वाध्याय ॥

॥ एकादशांग स्वाध्याय ॥

ढाल—अयोध्या रे राम पधारीया एहनी

अंग इग्यारे मइ सुण्या सहेली हे आज थया रङ्ग रोल कि।
नन्दी सूत्र मइ एहनउ सहेली हे भाख्यउ सर्व निचोल ॥१॥
सहेली हे आज वधामणा ॥

पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मंडप वेलि कि।
सींचूं नेह रसइ करी सहेली हे अनुभव रसनी रेलि ॥२॥
हेम परी जे सांभलइ सहेली हे फूल सूदा फूल थाल कि।
तड ते फल ठवै फूटरा सहेली हे रसालइ अविहि रसाल ॥३॥
हर्ष अपार धरी हियइ सहेली हे अहमदाबाद मझार कि।
मास करी व मंगनी सहेली हे बरत्या जय जयकार ॥४॥
संवत सतर पंचावनइ सहेली हे वर्षा रिति नभ मास कि।
दसमी दिन वदि पक्ष मां सहेली हे पूण थई मन आस ॥५॥
श्री जिनधर्मसूरि पाटवी सहेली हे श्रीजिनचन्द्रसूरीस कि।
खरतर गच्छ मा राजीया सहेली हे दस राजइ सुजगीस ॥६॥
पाठक हर्षनिधानजी सहेली हे ज्ञानतिलक सुपसाय कि।
'विनयचन्द्र' कहइ मइ करी सहेली हे अंग इग्यार सिज्झाय ॥७॥

इति श्री एकादशांगानां स्वाध्याय ॥१२॥

संवत् १७५६ वर्षे मिति वैशाख सुदि १४ दिने श्री विक्रमपुरे उपाध्याय श्री हर्षनिधानजी शिष्य प ज्ञानतिलक लिखत ॥ साध्वी कीर्तिमाला शिष्यणी हर्षमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ कल्याण मस्तु ॥ श्रेयांसि प्रवर्द्धतां ॥

श्री दुर्गति निवारण सज्झाय

ढाल—बीबी दूर खड़ी रहि तोको मरम परेगा

सुगुन सनेहा मेरा आतम तेरी सुम मति जागी ।
सहज संतोष मन्दिर में मोक्षा सुगति वधू रस लागी ॥१॥
दुर्गति दूर खड़ी रहि तेरा काम नहीं है ॥ आंकणी ॥
शम दम तोरण भजव झरोखे सेज प्रदीप बनाया ।
धर्म ध्यान का छाप दुलीचा नीचड़ सूत्र बिछाया ॥२॥ दु०॥
समकित तख्त क्षमा का तकिया मण्डप शील सुहाया ।
ज्ञान छत्र चामर चारित्र गुन परम महोदय पाया ॥३॥ दु०॥
शुचि सुगंधता परिमल महके सुरुचि सभी मन भाया ।
उपशम पुत्र सुलक्षन सुन्दर, आतम नृप घरि आया ॥४॥ दु ॥
ए विलास सब सुगति रमनि के छिन छिन में सुखकारी ।
सोहागिन से रंग रम्यो तब तुम से दृष्टि उतारी ॥५॥ दु०॥
तूँ तो दुगति दुष्ट दुहागिन कामन से मस्तानी ।
पर प्रपंच सुत अरुचि सखी के संग ही धारि पिछानी ॥६॥ दु ॥
अति दुर्गन्ध असुचिता प्रगटे निरगुनता से कीनी ।
तेरो संग करे सो मूरख हूँ तो बहुत सुखीनी ॥७॥ दु ॥
समता सागर मेरो आतम ज्योतिवंत अविनाशी ।
परमानन्द विलासो साहिब सज्जनता प्रतिभासी ॥८॥ दु०॥
सुगति प्रिया रस भीना अहनिश दुर्गति दूर निवारी ।
विनयचन्द्र कवि आतम गुन से हाइ रहे अधिकारी ॥९॥ दु०॥

श्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय

॥ दूहा ॥

विपुल विमल अविचल अतुल, निरतल केवलज्ञान।
तास प्रकाशक चरम जिन मन धरि तेहनउ ध्यान ॥१॥
जिन प्रतिमा वंदन तणउ हिव कहिस्युं अधिकार।
जे निगुण मानइ नहीं तेहनइ पड़उ धिकार ॥२॥
अभव छेदक भाव थी[1] समकित न आवइ दम।
सम्मूर्छिम कपटी तपउ, श्रमण कठरस्यइ भ्रम ॥३॥
शास्त्र तणी युगति करी सद्गुरु भाषइ तास।
कुमति वास नें तुं पडयउ किसी मुगति नी आस ॥४॥
अरे दुष्ट बुद्धि विकल किम निंदइ जिन बिंब।
अंब सघन छोड़ि नइ, किम मनइ तुं निंब ॥५॥
जिन प्रतिमा निश्चय पणइ, सरस सुधारस रेलि।
चिन्तामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेल ॥६॥
नेह विना सी प्रीतड़ी कण्ठ विना स्वर गान।
लूण बिना सी रसवती[2] प्रतिमा बिन स्वउ ध्यान ॥७॥
हेत विहूणाये भरइ, जिन मूरति सउ संग।
ते नर अस मानवि कहुं जेहवा गंग तरंग ॥८॥
तीर्थंकर पिण को नहीं नहीं को अतिशय धार।
जिन प्रतिमा नउ इण भरत, एक परम आधार ॥९॥

१—व्यक्ति युक्ति नै निरखतां २—निठुर
३—दीपक बिन मन्दिर किसउ ४—इत्यादि इत्यादि इत्यादिवत्

ढाल—१ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं[1] एहनी

तैं तउ रे निज मत संग्रहउ, सहु नी तजि लाज रे।
तिण कारण तुझ नइ कहुं सुविदित हित काज रे ॥१॥
जिनवर प्रतिमा वंदियइ, मन मां धरि रंग।
समकित संकित कारणे भामइ बहु भग रे ॥२॥ जि०॥
तुझ नइ रे कहता स्युं हुवइ वायस नइ भावइ र।
जउ दुग्धइ प्रक्षालियइ पिण धवलता नावइ रे ॥३॥ जि०॥
उपल मुद्गगेलिक तणइ, ऊपरि घन वरसै रे।
आर्द्र तदपि न हुवइ कदा तुझ ते गुण फरसै रे ॥४॥ जि०॥
वलि ऊसर धर ऊपरइ जउ बीज कउ वावै रे।
अंकुर मात्र न नीपजइ बहु एम सरावै रे ॥५॥ जि०
बधिर भणी जउ को कहइ, अनुगामि प्रमाण रे।
पिण तसु मन नहि कोतनी व्यापकता जाण रे ॥६॥ जि०
श्वान तणी वलि पूछनउ, दृष्टान्त दखावौ रे।
तिम कुमति तुझ चित्त मां आखर ते नावउ रे ॥७॥ जि ॥

ढाल—२ माली नी देशी

शुद्ध परंपरा मानियइ प्रतिमा नो प्रतिरूप । अज्ञानी।
जिन सासनसायें सही इम व्यवहार सरूप अज्ञानी ॥१॥
पहिला तत्त्व विचारियइ जउ म्युं जाणै साच अज्ञानी।
आनहित ते शास्त्र बिना पाच तजी ग्रहइ काच अ० ॥२॥

१—भवन-भावस्तेम

समकित विण प्रतिबोध थी शक्ति न ताहरइ वांदि अज्ञानी।
आ गुण मधुमाधिक देखतां न मिलइ तुम्ह घट मांहि अ० ॥३॥
वंदन अंग उपासगें, वलि ठाणांग मझार अज्ञानी।
रायपसेणी मइ यछउ, सूरीयाम सविचार[1] अज्ञानी ॥४॥अ०॥
ग्याता अंगइ जाणियइ द्रूपदि नइ अधिकार अज्ञानी।
तिम अंबड अधिकार थी निर्मल उपाई सार अज्ञानी ॥५॥अ०॥
चारण श्रमण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सनेह अज्ञानी।
ते छइ भगवइ अंगमां, किम मन आणइ रह अज्ञानी ॥६॥अ०॥
एक मदय गुण तूँ करइ, सूत्र बहुल मइ लोप ॥ अज्ञानी ॥
तउ तुम्ह नइ दीठां विना मन नइ आवइ कोप अज्ञानी ॥७॥अ०॥

ढाल (३)

चाल—कोसीडानी

दरय पणइ आवश्यक रे भावित कायास्सर्ग।
प्रतिमा विण निष्फल कह्या रे, तो स्युं वाचिक वग ॥१॥
आश्चर्य प्रतिमाये स्वरत संघ।
अनुमति मइ अनुभाव थी आति तणउ तूं संघ ॥२॥आ ॥
विजयदेव अति भक्ति सु रे पूज्या श्री जिनराय।
इम छइ जीवाभिगम मां रे, ते तुम्ह भावइ दाय ॥३॥अ०॥
भक्ति जिन पूज्या शुभ मनइ रे श्री सिद्धारथ राय।
कल्पसूत्र संपेखि मइ रे तसु आगम चित लाय ॥४॥अ०॥
दानादिक सम भाखियइ रे, अरचा मइ फल सूध।
महानिशीथे ते छइ रे, तो रयूं तेह असूध ॥५॥अ०॥

१—विचारेण सहित

धर्म विरोध विरुद्धता र ते प्रारंभी मूष।
ते किम शोमा किम रहइ रे जिम काजीयइ वृष ॥६॥भ०॥
साधन फल तं आदरयउ रे करण बिना परसक्ष।
पिण कितलाइक दिन रहै रे, नदी कनारै वृक्ष ॥७॥भ०॥

डाल (४)

चाल—मोहन सुन्दरी ले गयउ एहनी

चिदानंद फल जउ महई जिन पूजा मन धार।
आधाकर्मिक भांति नउ हो दूषण नहीय लिगार ॥१॥
मूरख रे मानि कथन तूं माहरउ ॥आंकणी॥
वाहरउ मन भ्रामिक थयउ अर्चित हिंसा हेत।
नाग भूत यक्षादि नउ हो विवरण सगलउ चेत ॥२॥मू॥
पिण जिन हेति नवि कहउ सूयगडांग मइ देखि।
भाष्य चूर्णि निर्युक्तिमइ हो थहिज अर्थ विशेष ॥३॥मू॥
मानइ सूत्र महु वली पिण प्रतिमा सुं द्वेष।
तउ वाहरइ मुक्ति दीजियइ हो भयीय कूचिका रेख ॥४॥मू॥
जिनवर जैन ममाचरइ शौच क्रम हरि राम।
ते सह एकण भां नहीं हो निगत भेप प्रकाम ॥५॥मू॥

कलश

इम सुगम कहतां जउ न समझै सूत्र नउ बोधक पणउ।
भव में अनतानत कालइ, दुःख देखिस तूं घणउ॥
आज्ञा बिना जे मत उपावइ नरक वासु निदाम ए।
कवि विनयचन्द्र जिनेश प्रतिमा वजउ धरिये ध्यान ए ॥१॥

इतिश्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्यायः सर्व गाथा ३६

[पत्र १ आचार्य श्री गच्छ भण्डार]

१ प्रकाम—अतिशयेन

कुगुरु स्वाध्याय

॥ दूहा* ॥

जैन मुक्ति सुं साधना, आगम सुं अनुकूल।
निज अविहित श्रमण इरण सुविहित श्रमण मूल ॥१॥
सिद्धि शक्ति धारक सदा व्यक्ति गुणइ अनुबंध।
निहत निरंजण मक्ति विधि जानि हेतु निरबंध ॥२॥
बंध गिणइ संसरण मुख भरण करण गुण क्षीण।
अतिशय सुभ जसु आचरण क्रिया करण सुप्रवीण ॥३॥
मिथ्या भ्रम रूपक द्विरद विहां पंचायण जेह।
चिदानंद चिद्रूप सुं निस दिन अधिक सनेह ॥४॥
एहवा सदगुरु श्रवियइ जिम थायइ भव अंत।
कुगुरु कपटधर बंदतां सदगुण न रहइ संत ॥५॥

ढाल (१)

चाल—हठीला वयरीनी

[सार सु] प्रवचन मत मही रे,
विहित प्रपंचक भाव रे ॥सगुण नर॥
अनुभव कहि [सु रं] गमु रे छाक
कुगुरु तणइ प्रस्ताव रे ॥सगुण नर ॥१॥

---

* प्रारम्भ करनेके पूर्व ओळियं पर लिखे दोहे —
धर्म वचन साधक सदा जिन वचना पद्दीण।
प्रस्तुतानुयोगिक सदा जे सोधिक सुकुलीण ॥१॥
उपादान निज शुद्धविधि अन्वेषणीय प्राय।
प्रस्तुतानुयोगिक तणा जे सोधिक मुनिराय ॥२॥
मारग साधु तणउ कहइ, दर्शन ज्ञान चरित्र।
तिणथी लिय विरचइ नहीं निशिदिन पुण्य पवित्र ॥३॥

मुनि विकसित चित सांभलड रे लाल,
अधिक प्रयोजन आणि रे ।।स०।।
अतरगत गुण पामिस्यइ रे लाल
प समवाय प्रमाण रे ।।स ।।२।।मु०।।
प्रथम द्रव्य माबइ रहइ रे लाल,
विकल सकल आचार रे ।।स०।।
चरम अवधि स्वच्छन्द सुं र लाल
निघ निगत उपचार रे ।।म ।।३।।मु०।।
बाह्य दृष्टि विरतंतनउ र
मेदक विविध प्रकार रे ।।स०।।
प्रवड्मान पर वृत्ति सुं र लाल
जेम जलधनी धार रे ।।स०।।४।।मु०।।
इन उन्मारग चालतां रे,
नवि पामइ तिहां लाग र ।।स०।।
चित्त विचारि समाचरइ रे लाल,
चढि मरकट बइराग रे ।।स ।।५।।मु०।।

ढाल २ सोरठ देश सुहामणउ एहनी

अंतरगति आतप करइ बप बहिरंग प्रधान लाल रे।
अवर मांहे जे भरइ शवकर पट उपमान लाल रे ।।१।।
अवयव तादृश आचरइ वचन तथा विध धाम लाल र।
सविकल्प चिन्तन करइ, अहनिशि अध्यवसाय लाल र ।।२।।
चाहइ वेगि निरूपणा मम पूरव पद चार लाल रे।
पिण इण कलि मांहे नहीं सांप्रति साधु परिवार लाल र ।।३।।

रस आसंकायइ करइ, शवर औषध विधि जेम जाण रे।
कारिज मइ आसवतां पृथिवी सुत सुं प्रेम जाण रे ॥४॥
इम संवरता हिव धरी, ते स्तुति करि कहइ मन्य जाण रे।
ते जग मांहे जाणियइ परतखि पण्डित मन्य जाण रे ॥५॥

ढाल ३ हरिया मन लागउ एहनी

जिण अधिकारइ ऊपजइ, जे अनवस्थित दोष रे।
साजन सुणि मोरा।
हिव तेहिज विवरणा तणउ निश्चय करिस्यु पोष रे ।सा ॥१॥
जउ पूरव विधि मइं रहइ न करइ किम विपरीत रे ।सा०।
पिण पासत्थउ ते करउ सर्व देशे परिणीत रे। सा ॥२॥
ज्ञानादिक गुण जे तजइ, न वहइ मारग सुभ रे। सा०।
साध तणी निंदा करइ लोक प्रमादइ मूंथ रे। सा ।३॥
संवेग वखाणे जे करइ, अल्प पावनता तेम रे। सा ।
साहदाता तेहनी छहइ, कल्पचूरणि मइ एम रे। मा ॥४॥
नित्य सिम्फातर असनन्न आगळि देइ पिंड रे। सा०।
जे ल्यइ तिणमइ तिण विषइ आवस्यक षइ दंड रे ।सा०॥५॥

ढाल ४ मेरे नन्दना, एहनी

साधु कहावइ सा गुणा रे हां न मिले वचन विवेक।
वचन किसा कहुं।
अवलंबन किहां थी ग्रहइ रे हां ग्रहां तइ कुमति अनेक। व ॥१॥
जे नव कल्पी नवि करै रे हां स्थत मुदित विहार। व ।
मास दिवस ऊपरि रहइ रे हां, सेवइ काळ अपार। व०॥२॥
तिण सरिखउ ते दाखव्यउ रे हां आचारांग मझार। व ।
आधाकर्मिक आगहइ रे हां ते ठाणांग विचार। व ॥३॥

शास्त्र सिखावइ जे पछी रे हां, पिण न रहइ व्यवहार । व० ।
इम अधिकतायइ कहइ रे हां, प्रवचन सारोद्धार । व ॥४॥
(मास कल्प ते मारगे रे हां, उत्तराध्ययनइ तेह ।व०।)
व्याख्यानादिक नित करइ रे हां उपदेशमाल में तेह । व० ।
इत्यादिक आगम तणी रे हां, साख कही निसंदेह । व० ॥ ५ ॥

ढाल ५ मल्हिनी

हिव पास प्रसगइ जेह, ते पिण कहीयइ ससनेह ।
उसन्नाउ दुविध प्रकार, तसु अन्त पणइ व्यवहार ॥१॥
वलि माहयउ त्रिविध कुशील नाण दसण चरण निमील ।
त्रिहुं भेद कहाउ संसक्तउ, शुभ अशुभ प्रकृति सपत्तउ ॥२॥
वह छंद कगइ य पच मद्‌माविक सगलउ संघ ।
त्रिहुं नउ निणय नवि कीधउ, स्वाभाविक फल गुण लीधउ ॥३॥
परमागम प्रहण विशेष ते समहिज्यो अवशेष ।
भाषित त्रिहुं नइ अनुवाय व्याकृति समयादिक न्याय ॥४॥
निज कल्पित दाइ प्रकार, शास्त्रादिक पंथ उदार ।
पासत्यादिक सू दूर तसु वन्दन ऊगत सूर ॥५॥

॥ कलश ॥

इम युक्ति साधन परी चितमइ कीध सपस सत्त्पता ।
जाणिस्यइ तो पणि तह सहिस्यै प्रगल अनमध्यिन सत्ता ॥
कष्टदि असमर्थक तणउ मन विनयपन्द विख्यात ए ।
उपदिशइ सद्‌गुरु नी साधना करि इम पदइ आरयात ए ॥१॥

॥ इति श्री कुगुरु स्वाध्याय ॥ सवगाथा ३१

कविवर विनयचन्द्र विरचित

श्री उत्तमकुमार चरित्र चौपाई

॥ दूहा ॥

एकदन्तो महावीर्यो नमोस्तु सरस पाणिने।
सिद्धन्ति सब कार्याणि, त्व प्रसाद विनायक ॥१॥
ॐ अक्षर अतुल बल चिदानन्द चिद्रूप।
सकल सत्व संपेखतां अविचल अलख अनूप ॥२॥

अजर अमर अविकार निति ज्योति तणौ जे ठाम।
सत्व रूप साराहिये पूरण वंछित काम ॥३॥
जेहने नाम स्मरण थी फीटै सगला फंद।
मंत्रमतो पंडित हुवे दूरि टलै दुख दंद ॥४॥
योगी ध्यावे युक्ति सुं, भक्ति करी भरपूर।
जपै तेहने व्यक्ति गुण शक्ति सहित ससनूर ॥५॥
मंत्र मुख्य बीजक कह्यो, सार सहित सुविलास।
अरिहंतादिक पद मों अन्तर आस निवास ॥६॥
जग माहि जिम भू अखिल शेषनाग पाताल।
मृत्युलोक मां मेरु जिम तिम ए चरण विशाल ॥७॥
ते अक्षर तो छै पछ मन पिण आगेवाण।
सरसति माता आपजो मुझ नै अमृत वाणि ॥८॥
श्रीजिनकुशलसूरिंद गुरु, पूरौ मुझ मन आस।
अंतरजामी जाणि नै करीयै निज अरदास ॥९॥

वाहि तणी का सुद्धि नहीं हुं अति मूढ़ अयाण।
तुम सुपसाये जे कहुं वाहो तेह प्रमाण ॥१०॥
दान सुपात्र समो न को मुक्ति तणो दातार।
उत्कट चरि यौ ते तजै सलिल निधि संसार ॥११॥
मालिभद्र आदिक उपरि दान तणे अधिकार।
जिनशासन मां जोवतां चरते नावे पार ॥१२॥
तो पणि उत्तमकुमर नौ चरित सुणो मन रंग।
साधु प्रशंसित दान जिण दीधा आणि उमंग ॥१३॥
धात चित को मत करौ छोडो कुमति किलेस।
वांचतां कविता तणो मन जिम थाय विशेष ॥१४॥

ढाल—(१) गौतम स्वामि समोसरया प्रहनी

वचन रचन सुणज्यो हिवे आणी भाव प्रधाना रे।
देज्यो दान इसी परै, जेम कहा तुमे माना रे ॥१॥व०
इणदिस , जंबूद्वीप मां, दक्षिण भरत उदारो र।
कासी देश जिहां भलो पृथिवी मा सिणगारा रे ॥२॥व०
नयरी तिहां वणारसी अलिकापुरि सम तेहा रे।
जहां सुर नरियां मानवी निशदिन चरत नेहो रे ॥३॥ व०
वनि वटमें चौ पावनी विकट दुरंग विराजै रे।
पग पाखित्र सदा पुरै घन गरजारव साजै रे ॥४॥ व०
ऊंचा मंदिर अति घणा दीठां आवे दायो रे।
तिम चिन चोरै कामणी जोतां दिन वहि जाया रे ॥५॥ व०

गोदै बैठी गौगड़ी, सपहर मैं अनुहारौ रे।
केलि करै मन मेलि नै सहियर सुं सुखकारा रे ॥६॥ भ०
जिनमन्दिर रळियामणा, दंड कळश करि सोहै रे।
अति ऊंची धज लहलहै सुरनर ना मन मोहै रे ॥७॥ भ०
चौरासी चहि चौहटा मिलिया बहु जन वृन्दो रे।
कृग अन परतख ना पावै परमानंदो रे ॥८॥ भ०
सरस सरोवर चिहुं गमा भरीया जल करि पूरो रे।
हंस प्रमुख कल्लोल सुं निवसै दुःख करि दूरो रे ॥९॥ भ
पत्नी विशेषै तरवर करी सोहै वन सम्मीका रे।
कोकिल करै टहूकड़ा रहै पंखी निरभीको रे ॥१०॥भ०
बारे मास सबै सदा नील हरी गिहरी दीसै रे।
फल फूले झाड़ घणु दीयड़ा देखी हीसै रे ॥११॥भ०
राज करै नगरी तणो मकरध्वज भूपालो रे।
सूरवीर अति साहसी न्याय नीत सुखमालो रे ॥१२॥भ०
दुर्जन जे वांका हता नार कीया ते सेही रे।
जिम मृगपति नै आगळै न सकै गयवर फेरो रे ॥१३॥भ०
इन्द्र समोवर जाणीये रिद्धि करी राजानो रे।
गुणह करौ निज प्रजा तणौ दिन दिन चढते वानो रे ॥१४॥भ
यत —थकै अह्रक्के भूप नहि, पविस्था नांही भूप।
दुंह कामै सा राजश्री निरखा सहै सा रूप ॥१५॥
तेहनें राणी रूयड़ी पतिव्रता गुण खाणी रे।
नामै श्री कमलावती इन्द्राणी सम जाणी रे ॥१६॥भ

जाणे ते चौसठि कला, निरुपम वचन विलासो रे।
चन्द्रवदन मृगलोयणी गय गजराज हल्हासो रे ॥१७॥च०
पाले सील भली परे धरम करी सुविकासे रे।
एम विनयचन्द्र हेज सु ढाल प्रथम परकासे रे ॥१८॥च०

॥ दूहा ॥

ते सुख विलसे दंपती, विविध परे ससनेह।
मास घड़ी सम खेलवे जिम दोगंधक देह ॥१॥
शुभ स्वप्ने सुत ऊपनो राणी उयर मझार।
सुत रूपवि सुत तो कहे जो तूसे करतार ॥२॥
ललित लखि पुण सुत निपुण गौरी गजगति गेलि।
पुण्य प्रमाण पामीये विनयचन्द्र गुण वेलि ॥३॥
दिन दिन डोहला पूरवां दोहया पूरा मास।
सुत जायो रलियामणो सहुनी पूगी आस ॥४॥
ए अनुसुत प्रगटीयो प्रथम हवा ज भूप।
दीप थकी दीपक हुवे ए दृष्टान्त अनूप ॥५॥
राजा अति उच्छवक थके जनम महोच्छव कीध।
घरि घरि तोरण बांधीया दान बली निरो दीध ॥६॥
दशऊठण कीधो पछी उत्तम लक्षण देखि।
नाम दीधा सहू मात ते उत्तमकुमर विशेष ॥७॥

ढाल—(२) बीबियानी

हा रे लाल तेह कुमर दिन दिन वध
जिम चन्द्रकला सुविसाल रे लाल।

भाइ　माइ　पालीजतो
　　　　थयो आठ बरस नो बाल रे ॥१॥
वाल्हो लागे रंगीलो र कुंमरजी
　　　　ते लागे राज दुवार रे लाल।
मोभा मुख मुलके सहु
　　　　तिम निजर तणे मरकार रे ॥२॥ बा०
हाँ रे लाल मात पिता बहु प्रेम सुं
　　　　तजिया बालापण साज रे लाल।
आडम्बर करि कुमर ने
　　　　मुंक्यौ भणवा ने काज रे।३॥ बा०
हाँ रे लाल लेखक शाला मांहि जे
　　　　शुद्धि पढ़ा छात्र अनेक रे लाल।
ते सहु पाछलि तेह ने अभ्यसन करे सुविवेक रे ॥४॥ बा
कितले दिन आवे थयौ ते सकल कला नो जाण रे।
लघु वय सफल सकल थये ए पुण्य तणा परमाण रे ॥५॥ बा०
सत्य वचन बोले सदा धर्म वलि राखै नीति रे।
ता हिज बाधइ लोक मां तेहसी पूरी प्रतीति रे ॥६॥ बा०
कान्ते लागे पगतले ते जन्के वारा वार रे।
जीव वधो किम मारीये इम जाणीवंचा करे सार रे।७॥बा०
अणदीधा लीजै नहीं ता ही अदत्तादान रे।
एम विचारी परिहरे सुलसीनो कुमर सुजाण रे ॥८॥ बा०

नरक महल चढिवा भणी, नीसरणी सम परनार रे।
अकलंकित तनु जेहनो वलि कनकाचल सम धीर रे॥९॥चा०
सहज सलूणो कुमर ची सायर री परि गंभीर रे।
गमन निवारै आणि नै, वेश्री अति गहन विचार रे॥१०॥चा०
कला बहुत्तर आगलो दाता ज्ञाता जिम सूर रे।
प्रसिद्धि मलेरी जगत मां,जस अधिको प्रबल पडूर रे॥११॥चा०
खेल करै निशि वासरै मन मेलू केइ संग रे।
विषमा अरियण अपहटै ए राजवीयां रो अंग रे॥१२॥चा०
दीन हीन न ऊधरै दुखीयां केरो प्रतिपाल रे।
जिनवचन्द्र कहै एतलै पूरी थइ बीजी ढाल रे॥१३॥ चा०

दूहा सोरठा

सुख विलसतां तेम निशि भर कुमर इमी परैं।
एक दिन चिंतै एम तरुण थयौ हिव हुं सही॥१॥
तो रयुं बैठो आम परवशि थई सुभा परै।
ए कायर सु काम, नर सूरा किम थईयइ॥२॥
यत —गुण ममतां गुणवंत नै, बठों अवगुण जाम।
वनिता नै फिरिवौ पुरी जा सुलखीणी होय॥३॥
खाटी लक्ष्मी जेह बाप तणी किम विलसीयै।
तो नहीं ए सुख देह जउ मन चिंत मति करैं॥४॥
इम मन मां आलोचि हाथ खड्ग ले एकीलौ।
कीयो न काइ साथ स्वजन तणौ तिण अवसरै॥५॥
चाल्यौ दोइ निर्चत ते परदेसें पाधरौ।
हरी आणी मन खंत कुमर परीक्षा कारणे॥६॥

ढाल—(३) चम री सोरठी

कांपै विषमी चालतां होजी चाट अनड़ वर वीर, प्रबल परामी।
धरम धुरंधर धीर प्र० महीयल शोभा आकमी होजी
गुण निधि गुण गंभीर। १ प्र

सूर तपै सिर ऊपरै होजी छ पिण भाँवै मग, ललहल ललकती।
तिहां पणि त्वरै चलकती होजी नदियाँ परवत शृङ्ग २ ल०
सुख दुख पामे ते सहै हो जी कौतकियाँ ना राव।
मलपइ मन मी रळी तो पणि सुविशेषै वळी होजी
देखी खेळै दाव ३ म

तिहां किण आवै पंथ मां हा जी अटवी एक अपार।
सरस सुहामणी घणी तिहां सरवर तणी होजी
अहिर सदा सुखकार। ४ स०

अवलोकै रन बन घणा हो जी, तस्वर नौ नहिं ग्यान।
नयणां निरखती जाण कि अमृत वरषती होजी
कुमर तणी तिण ठाम ५ न

तिहां किण कमल तणी मळी हो जी कलियां अति सोरंभ
विहसै विकसती नानी मोटी निकसती होजी
करती मळो रे अचंभ। ६ वि

अनुक्रमि निपत प्रमाण मां हो जी कांपै ग्राम अनेक
दीपै हिममणी, मन मांहे धीरप घणी हो जी
संगि न कोई एक ७ दी०

तो ममर तणी परे हां जी, आयो गढ चीत्रोड़,
ते हरखती हेके जिण दीधा भरी होजी
मुहड़ां सिरहर मौड़ ८ हे०

सा तिण नगरी तणो होजी, महाराजी महसेन
जी महिपति, अछे सभा हो कुममदी होजी,
वायक जिम सुरसेन ६ मा०

ां माहे दीपतो होजी वेरा बड़ो मेवाड़
ले तसु रक्षी तेहने को न मके बड़ी होजी
वैरी तणो रे विभाड़ १० रा०

णोयण बस जेहना कौ होजी चावो चारे खंड
मणा का नहीं सरिखा छै तेहने सही होजी,
हय गय प्रबल प्रचण्ड, ११ क०

वर सहु कौ राजवी होजी सीस नमावे बास
धिक वयण अमी प पणि मोटा राजवी होजी,
राखे महिर खास १२ ब०

विदभो दुर्मुख ऊपरे होजी पिण जिन धम करंत
वण दिवस रही समकित शुद्ध सुमति सही होजी,
भजे सदा भगवंत १३ द०

मामणि सेवी भोगवे होजी जे सुख संसारीक
अवसर आपणी सुत कारण सहु अवगिणी होजी
मागे छांड़ि अलीक १४ अ०

वेसी भणरी सोरठी होजी, तिण में तीजी ढाल
रसीया मन रमी कहवां हीज मन मां गमी होजी,
विनयचन्द्र मुनिराज १५ र०

॥ दूहा ॥

राज करंता राजवी, गेह गिणे सुग पास
पुत्र तणी यौवन पणे काय न पूगी आस , १
सुखिया देखि सके नहीं, होवी देव अकज्ज
संपति घ ते सुत नहीं, इण परि करे निर्लज्ज । २
वड् वृझो मंगल पणे रहे मन मांहि उदास ।
गृह जाणे सूनौ सहु दिन दिन थाय निरास । ३
इक अवनीपति सुत बिना वलि वेश्यां में वास
नही किराडे ए सदा जब तब हाइ विण्यास ४
देव मनायां नवि थयौ सरखी धनती कोड़ि
तो कोई कारण अछे का वन मांहे जोड़ि ५

ढाल ४ हमीरा नी

किणही आस फली नहीं रेह करमनी बात राजनजी
विण सरख्यां सुत किम हुवे जो समवारो बात रा १ कि०
इम मन मांहि चींतवी पोतानें परिवार रा
जाये वन नें मलरे, मंत्रि प्रमुख लेइ लार रा २ कि
नील वरण हयवर ऊपरे राय थयो असवार रा०
सहु गुण लक्षण पूरीयौ ते हयवर श्रीकार रा ३ कि०
पवि गति संग करे घणुं महीपति पूछे ताम रा०
मुंहता नवकि किशोर नी केम अवस्था आम रा ४ कि०

बीओ कोइ बोले नहीं घणी थई तिहां वार रा०
तेह सरूप अलख थइ पिण मंत्री करै विचार रा० ५ कि०
राजा अति आतुर थयो तेहने कीधी रीस रा०
उत्तम तिहां किम आविने बोले विसवा वीस रा० ६ कि०
हूं परदेशी छु प्रमो तो पणि सांमलि वात रा०
तुम आगलि किम राखियै, कूड कपट विछ मात रा ७ कि०
हूं कहिस्युं मति अनुसरे अरथ तुमारो एह रा०
महिषी दूध पियो घणो तिण मदी गत छेह रा० ८ कि०
बाई पय माये हुवे चपल गति तिण नांहि रा०
राय कहै वछ माहरे तु वसीयो मन मांहि रा० ९ कि०
तुं ज्ञानी तुमस्युं कहुं इम साचइ अहिनांण रा०
स्या कहीये गुण ताहरा तुं कोई चतुर सुजाण रा० १० कि०
दूषण किम ते जाणीयो कुमर कहै वलि एम रा०
जाणुं हयवर पारिखो तिण कारण कह्यो तेम रा० ११ कि०
मा मुई जब पहनी तब ए मधुवर बाल रा०
पय पाई मोने कियो एम कहै भूपाल रा० १२ कि०
इण परि चौथी ढाल मे रोमयो चित राजान रा०
विनयचंद कहै कुमर ने थास्यै आदर मान रा० १३ कि०

॥ दूहा ॥

इतला दिन हुं घरि रह्या विण गुण अति निरनेह
हिव तुं हिव गुण माहरे नृप पूछा मह १

मारे मागे तु मिल्यौ सगळी वात सकज्ज ;
पर उपगार शिरोमणी, सहु साधण पर कज्ज २
ए हय गय रथ ए सुभट ए मंदिर ए सेज
आदरि तुं संतोष धरि, माहरो सो परि हेज ३
चारित्र लेवा ऊमह्यो ज्ञानी गुरु नइ पास
तुम आगलि तिण कारणे कहियै वचन विलास ; ४
आचारे जाणीयै सही तुं छै राजकुमार,
मन गमतो मुझ राज्य ले मत को करे विचार ५

ढाल (४)

रसीयानी

तव ते कुंयर कहै कर जोड़ि मै सात सुणो मुझ वात मया करि
हुं परदेशी रे कुलहज जोइवा नीसरियो सुविख्यात म० १ त०
हिव आगे चालीस एकलो देखीस सकल विनोद दया पर
तुम चरणे रामन की हुं आविसुं मन भरि परम प्रमोद द०२ त०
इम कहि तइ सीख सनेहसुं लक्ष्मण चाल्यो र ऊठि सुगुण नर
एकलो पिण रयौ डर तेहने, जगगुरु जेहने रे पूठि, सु० ३ त०
छांपै माम नगर वहिला घणु, विमगिरि गहर नीर, चतुर नर
विलसाइक विम मारग चालतो पहुतो मरुच्छ तीर च० ४ त०
नगरी तणी छवि देखइ सोहामणी प्रसन थयो मन माहि सोभागी
जोया लायक नगरी जायगा, जिण मुँकी अवगाहि सो ५ त०
तिहां जिनवर मुनिसुव्रत स्वामिन, देवगृह निज आय सहीसुं
चारो पार करै गुण वर्णना मम सुद्ध प्रणमै रे पाय स ६ त०

जन्म सफल गिणि सरवर आवीयो बैठो सरवर आप रसिकनर
नीर मरै पणिहारी तिहां फिरै तिरखै ते मन आय, र० ७ त०
मांहो मांह वात करै त्रिया, सुणि बहिनी मुझ वात सहेली
कुबेरदत्त नामा विवहारीयो आज चलेस्यै रे जात स० ८ त०
पिण प्रवहण पूरेस्यै पोचसै, द्वीप सुगम मां रे जाय सुरंगी
ते तो अष्टादश योजन शत, मान इसु कहिवाय सु० ६ त०
मध्य भाग लवणोदधि नै रह्या तिहां लंका कहवाय सलूणी
द्रव्य उपावण मायै मानवी त्यां सु पूरी रे प्रीत, स० १० त०
इम सुणि वात घणुं हरखित थयौ कुमार विचारइ रे एम, सनेही
सांयात्रिक संघातइ ते मणी पूछि चडुं तिहां खेम स० ११ त०
प्रवहण ऊपर वैठो पूछने सहु सु मिलीयो रे आप विनय सु
मीठा वचन कही रीझव्या सहु सकल टल्यो रे संताप वि०१२ त०
शुभ महूरत ले पूरीया छांड्यो किंहरो रे माग चर्लता
जल खूटो तिहां पोतक वणिक कहै,पूरो कोई रे अमाग च०१३त०
इतलै पवन तणे वसि आवीयो एक तिहां सूनो रे द्वीप हरखसु
सहु उतरि जल भरवा नें गया वाहिका कूप समीप ह० १४ त०

पत —पेटी मत्री जल पूर, तिरस वसे आये तृषित
जग में गरज गरूर, विनयचन्द्र इण परि वदै ?

जल संग्रह करतां लोकां भणी तिण इक लागी रे वार, करम वसि
भ्रमरकेतु राक्षस तिहां आवीयो,सरजित तणे रे प्रकार, क०१५त
हाक करी रूठी पोयमी विनयचन्द्र बहु वाण मविकजन
मय करसी राक्षम पणि धरमथी पावये कुशल कल्याण,म०१६त०

॥ दूहा ॥

ते रात्रीचर अति विटल, विकल वदन विकराल
विषम वचन मुख बोलतो रुठो आणि कराल १
साठि सहस्र बलि जोड़नै, राक्षस पूरइ पूठि,
सौंक न राखै केहनी दूरि किया जिण दूठ, २
पिण मूलो ते स्यूं करै आम्यो अवसरि देखि।
मांस भखेवा सकरबो माणस नौ सुविशेष ३
बलि कालतो ओम ते लोक डरावे सर्व्व
कर झाल करवाल इक धरि मन माहि गर्व्व ३
वचने करि मधु नै कहै किहां आस्यौ रे आज।
इम कहतो आम्या कन्है, करतो अधिक अगाज ५

ढाल (६) सारि करतार ससार सागर थको पहनी

काप करि लोक तिण पकड़ि कपजो किया
विगर घर बार हूआ वियोगी,
मासतां मूढ़ मारी पड़ी स्यां मरी
सबल पावै पहया यथा सोगी १ को०
केइ झाल्या जकड़ि पकड़ि नै कारा मैं
दाबीया केई करवी सहावे
सेम चोप्या पग हूठि पापी तणे
पण अवसर कवण कहि थावै २ को०
अतुल दल कोरि करतार दिव आपणी
अमर तिण ठौर मदहाक आयो।

भाम्भिदि मुंड छूटे लिण छूटे वलि अम्मटे
प्रगट भट झझले जिम पतंगा
सिहां करे घाव देह ओर बद वेग सु
मरद म मुवे ज्युवे जिम मतंगा ९ को
अंत तस बल पन्यौ कुमर तब कल्प्यौ
कन्यौ संग्राम सहु लोक तूटा
झुद्ध मुह रखौ हथियार रो जिण घड़ी
जोर धरि वले अंग जूटा १० को०
झपटि थै थापटे चापटे झापटे
गहग गभीर मुख करे गाजा
मूंठि भर मुठि पडि ऊठि भड बूठ मचि
छडि सगावे रखे कोइ छाजा ११ को०
अधिक नहीं भास थइ खात करि घात अति
धगिधदि धुकि झबकि धुकि दीये धमका
ज्ञामि लेकार करती जिसी अपछरा
ठमकि पद ठावति करे ठमका १२ को०
प्रबल मुज झुद्ध जिण मां उपसम थयौ
निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठो
धन्न हो धन्य जोगणि कहै चित्त धरि
कीयौ राक्षस थकी हीयो काठो १३को०
धान्य पोले हुवे देह जीपइ सदा
धरम म करे तिके धमधमीजे

इम वाणी रिदै गुण समरै
पहिज वृक्ष सुहामणा सखी, घणा बली फल फूल
तो हिव इण हिज मानके सखी, बसिये करने सूल रे
तिहां तो न पडीजे भूल रे, जिन ध्यान मां रहीये भूल रे
करिय गुण भास अमूल रे, जिम न हुवइ चित डमडूल रे;२इ०

इहां रहतां कुण आपसी सखी पहुवो चित विमास,
पकण तरुवर ऊपरै सखी ध्यान मोमी सुविलास रे
तिहां समरै जिनवर पास रे, अबइइ मन भरतो आस रे
कहतो मुखथी अरदास रे, अमृत सम वचन विलास रे। ३इ०

वैह्ठ द्वीप निवासनी सखी दैवी वैलि कुमार;
मन चिंतइ रंजी थकी सखी, माहरइ प्राण आधार रे;
मिळीयो दुखियां साधार रे जो आम कहै घर बार रे
तउ सफल गिणुं अवतार रे पामै मन माहि करार रे ४इ

हिव आगलि आवी कहे सखी सुणि मनमोहन वात रे;
तुम्ह सु लागी मोहनी सखी मेरी सातें धात रे
तुम्ह दाभै लिण लिण गात रे तुम्ह सेती न राखो बात रे;
तु दिल मां परम सुहात रे, स्युं कहियै बहु अवदात रे ५इ०

तु तौ प्रीतम मानवी सखि हुँ छु अपछर नारि
तिहां सुख भोगवता थकां सखी करसां अन्य प्रकार रे
संतावै मदन अपार र, तन बाध्यो मदन विकार रे!
मिलवो तोसुं इकबार रे मैं कीधो एह विचार रे ६इ०

मोरउ पिण हिव ताहरउ सखी, गढ़ि मांहि पाड़िस धाड़,
जे मिळया नै रुसइसे सखी किसी विमासण ताहि रे
ए जोवण लहिरै जाहि रे टाढी तरवर नी छांहि रे;
कहियौ मानौ मन मांहि रे अणचाख्या चणमी नांहि रे ७ इ०
राजकुमार तब इम कहै सखी स्याने खोवै लाज
साहरउ मन में जे अछै सखी मोहु न मरउ काज रे
इसड़ी क्यउ कम आयाज रे हु मनु देख्यां सिरताज रे
माहरौ गाळीजै माज रे इणका हित दीजे राज रे ८ इ०
परनारी बहिनी अछै सखी पत्नीस विगावै मात
विण तुझ नै साची कहुं सखी मा मात इक बात रे
इण बात नरक मां पात रे नव लक्ष जीव नो घात रे;
दुख सहियै दिन न राति रे नवि छांडियै जिण सुगत साथ रे, ६ इ०
नईयर पाछै रुसणै सति भाखै इसी वाणि
मगपण भगनी मात ना सखी दाखै कम अयाण रे;
माहरो करि वचन प्रमाण रे जो चाहै घट मां प्राण रे
तु मावै वाणि म जाणि रे रहिस्यै मंदि काइ काण रे १० इ०
देखी तब स्त्री थकी सखी काढि खड्ग कहै ताम
विण जीवी तु वाइ मरै सखी करि मूरख ए काम रे;
तुझ नै नवि लागे दाम रे ए मउज मरण छै ठाम रे
तुं जे नवि पाछै दाम रे कहिं मैं शिम लक्ष्मी जाम रे; ११ इ०
सूर अपर दिशा ऊगमैं सखी मेरु टलै चलि जेम;
सायर मरयादा तजै सखी पिण नवि पूरुं तम रे

मुझ थी वात कहाणी राज जिण धरमनी वात कुमरजी
विषय निजर तुमे नाणी अमे० २
इम कहि वारइ कोड़ि रयणनी वरषा करि सुप्रमाणी राज
जिण धरमनी देसण ठाणी मुगति तणी अहिनाणी ३ अ०
मन नी कामना छोड़ि गइ हिव निज थानकि सुरराणी राज
कुमर तणा गुण चिंतव तिण समरे जास कुमति कमलाणी राज ४
प्रवहण देखि हसे इक नैहा नयण तिहां विकसाणी राज
सरले साद करै रे भाई स्यो तुम्ह नयर अम्हाणी ६ अ०
सांभली वाणी पुण्य नी महवी समुद्रदत्त मन भाणी राज
कांइक ना मागा छे वाहण स्यौ तुमे नगर आफाणी ७ अ०
नगरना नर तिण पासे आवे देखि धजा सहकाणी राज
उत्तमकुमर तिहां निज वातां भाखी चित्त सुहाणी राज ; ८ अ०
कुमर तणा गुण देखि मदनी अंतरगति हुलसाणी राज
हिलमिल बेसि चल्या सायरमां त्रूटि गयौ वलि पाणी ९ अ०
भर दरीया मांहे ते जल विण मुं करे प्रीति पुराणी राज
तड़के भड़के भूख थई तसु पीपइ उदर कुराणी १० अ०
निर्यामक कहे शास्त्र निहाली म करो तांणातांणी राज
हियणा बेलि उलरसी जलनो धीर धरा तुमे प्राणी ११ अ०
प्रगट तुम्हे गिर चित्रक रयण मां कूक तिहां सुरराणी राज
जल निरमल ते मांहे भरें पिण नयी वात सुहाणी १२ अ०
रासम पीठ टट इन थानक सोह वहनि वदवाणी राज
आठमी ढाल वदै मनरंगि जिनचन्द्र गुन गाणी १३ अ०

॥ दूहा ॥

निर्यामक सुणि वातड़ी छोक कहै गुण गेह
राक्षस ते केहवौ अछै अंगत आकारह १
तेह कहै दीठो किणी पिण लोकां री वात
जे भाखै इण वातकें, करै तेहनो भात २
महाक्रूर क्रूरातमा मांसभखी विष नयण;
भ्रमरकेतु नामै इसौ, दुद्दर जेहना वयण, ३
जळधि देव ने आगळै तिण ए कीधो नेम
वाहण मां जन नवि मलुं बाहिर की नहि नेम ४
वात करंतां तेहवै ते परवत तिण ठाम,
जगा ज्योति प्रगट थयौ सहु को हरख्या ताम ५

ढाल—६ मोगिला री

कूप दिशा ते निरखि नै रे जळ पूरत सम्रुवाय सज्जन जी
सहु निर्यामक नै कहै रे, विरमो तेह पलाव १
मजलसी एक सुणी भरदास स तेहनौ पछै वास स०
करिस्यै महुनो मास स यश्मै तेण निरास, २
प्रवहण थी नवि ऊतरै राक्षस भय असमान
केई नर आगे मरूया रे करतां नामै ध्याम, ३
तिण कारण मरणौ भलौ रे, तिरपारत इण ठाम;
पिण न हुवां तेहना वसूरे, छोक कहै सहु आम ४
वात सुणी इम लोकनी र, तेह अवचळ वाच
कुमर विद्दां वर साहमी रे इण परि जपै साच ५

मुझ सरिखी माये हुवा रे, काइ करावे काम
सुरपति विण मुझ सामुही रे, चाल सके नहीं ठाम ६ स०
तो ए सु छे बापड़ो रे, एहनी सी परवाह,
स्याल तणी स्यो आसरो रे, सीह तिहां गज गाह ७ स०
कवरि प्रवहण थी उतरा रे, जल भरिवा ने काज,
कूप समीपइ आविया रे लोकां तणो समाज, ८ स०
मन संकित पण तो हिवे र, छेह ने जल पात्र
राइ आगलि बांधि ने रे, मूक्यो सरले गात्र, ६ स०
पाणी तिहां नवि नीकले रे, सोकातुर सहु जात;
चिंतवणा एहवी करे रे एहो विरुद्ध बात १० स०
रीव करइ वलि तरफडे रे, जिम थोड़े जल मीन
ऐ ऐ दुर्जय ए त्रिपा रे जेण थया सत्वहीन ११ स०
मांहो मांहि ते कहै रे, दीसे जलि सुन कूप
तोही बिन्दु न नीकले रे, कोइक देव सरूप १२ स०
धरवि संदोह करे पणु रे मरणो आयो माथ
सु कीजे हिव आपणी रे, तिरय न लमणी आथ १३ स०
के संभारे गहने रे, के महिला सुत देस
के भाई के बहिनड़ी रे के माई के भाणेज १४ स०
इम चिंतातुर लोक मे रे, उत्तो राजकुमार
कूप प्रवेशन आदरी रे, सहु मन कीध करार। १५ स०
जेह विरुद्ध माता करे रे, तेह करे उपगार
नवमी ढाल कही भली रे जिनयचन्द्र हितकार १६ स०

॥ दूहा ॥

रज्जु विलंबी ने कुमर, पइसै कूप मझार ;
तिण माहे इक इण परै निरखै देव प्रकार १
जाळी कंचन मांहि सुभ, जळ ऊपरि तिहां कीध;
मन मां अचरिज ऊपनो, जाळी किम ए दीध , २
सुणो सुणो रे लोक सहु विस्मय वाळी वात
जाळी सोवन नी अछै, दीठां उल्लसै गात ३
तिण नीचे जळ देखि नै बहुचलती बहुनीर
दूरी परही करि जालिका भाजै घर मन धीर ४
पाणी सुगम कीयौ कुमर, जेह हतो दुर्लभ
रळियाइत सहु को थया पीधो परिघळ अंभ ५

दूहो सोरठो

गुण समरी नर तेह, कुमर तणा तिण अवसरै ;
तास चरण नी खेह सहु को आपण नै गिणै १

ढाल—१ राग—सामेरी

चतुर नर एह बड़ी अधिकाई
बाळ अवस्था मांहि अछै पणि कुमर थयो सुखदाई । १ च
हिव जाळी प्रवहण पूरी नै करि जळ तणी समाई ।
चन्द्रद्वीप माहे बैठा किम आवे वडम बडाई २ च
वात करेतां कूपक मांहे अद्भुत भींत बणाई
देव दुवार सहित पाखडोप निरखै कुमर सवाई ३ च

लोका ने कहै हुं परदेशी कीधो मान्य सदाई
तो देसीमें केलि कुतूहल, खोदि नही छे काई ४ च०
प्रथम तलि गृह ते चीत्रावे आई सगुणता पाई
राज तिहां महसेन दिया पणि न कीयो छोम समाई ५ च०
कोडाव्या नर रात्रिचर सु करि नै मवल कराई
सामिद्र पाणी परगम्र कीधउ सहु जाणें सुघराई, ६ च
हिव आगे सु वासी ते पिण देखीजे मन लाई
परि हुंति अभ्यास अछे मुझ करवी सहु सुं भलाई ७ च०
चाल्यो तिणहीज द्वार थई नइ मन मां आणि सिकाई;
पाखे रंग तणा पाहण नी, बांधि बाट विछाई, ८ च०
कंचन में सोपान सुपेखित रोमराइ उल्लसाई
आगे एक भुवन अति सुंदर वसुधा आणि इसाई ९ च
रतन जड़ित आंगण तसु दीसें अधिकी वास सफाई
भूमि प्रथम सोवन मां मंडित विकसित रहे सदाई १० च०
आतां कुमर इसी पर बीजी भूमि चढ्यो वलि आई
ते पिण मणि माणक मां मंडित तिहां रहे चित लोभाई; ११च
तीजी मुक्ताफल चोपति, तिम चौथी मन भाई
वलि पांचमी छट्ठी मन मोहे सातमी भूमि सुहाई १२ च
दसमी ढाल थई ए पूरी विनयचन्द्र चतुराई;
सुणिज्यो आगलि कुमर कुतूहल, तजि मन विषन पुराई;१३च०

॥ दूहा ॥

तिहां कणि तीजी भूमि परि, बैठी एक ज नारि
अति भूखी बलि लोण तन दीठी तेह कुमार १
मुख नहीं जिण दांत विण मुख माखी भिणकार,
केश पलि चक्षु मांजरी, कूबजा नै आकार २
देखी कुमर भणी निकट, इम जंपे सुविचार
कांइ मरै रे आमु विण रे गुणहीन गमार, ३
राक्षस तइ मति सांभल्यौ भ्रमरकेतु इण नाम
निज घर तजि आयो इहां कोइ नहीं स्युं काम ४
कुमर कहै रे डोकरी, ते जोरावर दीठ
एक धके मारयो गुड़े, पड़े स ऊठै नीठ, ५
पणि ए गृह छै केहनौ केण कराव्यौ कूप
वलि तुं इहां कवण छै ते सहु दाखि सरूप, ६

ढाल (११)

जिनवर सु मेरो मन लीनो, एहनी

सुणि पंथी एक वात हमारी इहा कहे मम बाई रे
तें पूछयो ते उत्तर देवा मुझ मन हरषित थाई रे १ सु०
राक्षसद्वीप इहां थी नेड़ो जिहां नगरी छै लंक रे
राज करै तेहनो राक्षसपति भ्रमरकेतु निसंक रे २ सु
अति वल्लभ तेहने पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे;
रूपैं करि जीती जाणै रति अपछर जिम अभिराम रे ३ सु०

नवली भली कुमुदिनी विकसे रवि उगमतें जेम रे,
भर यौवन रति ज्यौं दिन दिन, कुमरी विकसे एम रे, ४ सु०
भ्रमरकेतु राक्षस एक दिवसै, भर दरबार मझार रे,
नैमित्तिक ने पूछे चित धरि, प्रसन कह्यो सुविचार रे ५ सु०
कवण हुस्यै मुझ पुत्री नै वर, ते भाखे मतिवंत रे
कहिस्युं तंत तुम्हारे आगलि रीस म करज्यो संत रे ६ सु०
ताहरी पुत्री नें वर थासी राजकुमर सुप्रसिद्ध रे
तीने खण्ड तणो जे अधिपति सगली वाते समृद्ध रे ७ सु०
एहवो वचन सुणी विलखाणो मन मां चिंते घात रे
देवकुमर लायक मुझ पुत्री भूचर किम परणात रे ८ सु०
इम आणी मन माँहि न आणी तास कहाणी खास रे
सायर में गिरिवर नै शृंगै कूप कराणो आस रे ६ सु०

पूर धूप कपूर धुरा धुर, कौणि मन बिसवा वीस रे १० सु०
वाली कूपक माहि छगाइ पहिला में भय थाइ रे
वात कही तें पूछी ते सहु वलि सोमलि ससनेह रे; ११ सु०
ढाल एकादशमी मामली आणीजे सद्भाव रे
विनयचन्द्र कुमर तिहां ऊभो देखे अपणो दाव रे। १२ सु०

॥ दूहा ॥

खबर निमित्ती में कही पूछइ मन धरि राय
मुझ पुत्री कुण परणस्यै ते मुझ तुरत बताय १
ते कहस्यै तेहनी परइ भूप मन आवी रीस
कोडि उपाय कीधां हस्युं किम करिस्यै जगदीस २

विरू मरि विरू फेर कहि, सुं तेहनो अहिनाण
सांयात्रिक जन मारिवा तूं गयो करिने प्राण ३
द्वीपमांहि थोसूं छल्यो जिण मांहे बहुमाण
मुझ ने जीतो जोर करि, ते तुं निश्चय जाणि ४
इम वाक्य बहु मेळिने तेह चल्यो तसु काज ।
एम प्रतिज्ञा करि गयो मारेवो तसु आज ५

ढाल (१२)

बिंदली नी

मास थयो इक तेहने हिव पूछु खबर हुं केहने हो,
चटपट चित्त लागी
हुं संभारु मेहने जिम मोर चीतारे मेहने च० १
हीयडे कुमर विचारइ माहरो सु तेहने सारे हो च०
ते फोकट आपो हारे पहवो कुण मुझने मारे हो च २
सबळा नी उमकराव आयो तेहने निराबाट हो च
जोरो थमु मुझ घाट ता करिस घणा गहगाट हो च ३
तेह जाणे हुं धीगो तो मारग रोकी रीको हो च
हुं पिण छु रे ढबीगा ठीगां ऊपरलो ठीगो हो च ४
बात विमासे तेहवे ते कुमरी आवी तेहवे हो च
यौवन रूपे केहवे कवियण मालो सहु पहवे हो च ५
मर यौवन मां मातो पिण जैन धरम री राती हो च
न सके देखि मिथ्याती जिणे दूर कीया कुरापाती हो च ६

चन्द्र पंकज सोभावै, दाडिम कळीयां शोभावै हो च
नाक तणै जसु दावै, जिहां दीपशिखा पणि मावै हो, च० १५
आंखड़ीयां अणीयाळी, मिचि सोहै कीकी काळी हो च०
हिरण थसैं सुरवाळी मारी आंखि लीधी मटकाळी हो च० १६
मुख मचोड़े दीपै, चांकड़ी कृपाण नै जीपै हो च०
मांहो मांहि म छीपै ते माक विसाळ समीपैं हो च १७
वेणि निरखि विशाळ, शेषनाग गयौ पाताळ हो च०
पहवौ रूप रसाळ नहीं छै सही इण कळिकाळ हो च १८
रमणी मेह कुरूप सु कहीवै दास सरूप हो च०
विनयचन्द्र चित चूप कही बारमी ढाळ अनूप हो च १६

॥ दूहा ॥

सखीया सोळ सिंगार जिण सु कहीयै ते माम ;
रूप तणै अनुमान सहु, जाणो निज निज ठाम १
देखे देह कुमार मे मासे सनमुख नयण ;
फिर पूछी तह मालीयै बोलै मीठा वयण ; २
हे वृद्धा तुं माहरै पासे वहिली आवि ;
सु मुंकी आळस करे, जिण इक वार म लाइ ; ३
तिण पासे हिव ते गई पूछै पहनी बात ;
कुण कमौ मुझ अगिणै एह पुरुष शुभ गात ; ४

परदेशी तुं हो कवन छे बोले इम धरि नेह हे स०
कुमर कहै छुं मामवो स्यु इवड़ो संदेह हे म० १ इ०
वारू किम आया इहां, कुमर पयंपइ एम हे स०
केवळ तुम नै निरखवा, आयो छु धरि प्रेम म० १२ इ
कांचन छोपै सुन्दरी, सुकुळीणी सिरदार हे स
दोड़ि कपट हाको करै ना म कदै सुविचार हे स० १३ इ०
ढाळ बखाणी तेरमी विनयचंद्र तजि रेह हे स०
ते विम हिज करि आजम्यो मत आणो संदेह हे स १४ इ०

॥ दूहा ॥

भले पधाऱ्या कुमरजी पावन कीधा गेह
चक्रवाक रवि नी परै, थांसु लागौ नेह १
नाम तुमारुं स्यु अछै किम ओळख्या मा बाप
किण नगरो किण देशना वासी छो महाराज । २
कुमर कही सहु वातड़ी करि कुमरी आधीन
बिहुंना मन ळवळ्या छिये नीर विषै जिम मीन ३
वात कही दूढ़ा भणी पाणिग्रहण संकेत
तिण दीधउ आदेश इम जाणी बिहुंनो हेत ४
माबी न मिटै कुमरी तुम्हे थया छो एक
मन मान्यो सोढो मिळ्यो परणो आणि विवेक ५

स० प्रीतम नो चित रीझीयो मधुर स्वर हे गाई गुणगीत,
स० पति भगती प कुवरी परमज नी हे जाणे सहुरीति, १०
स० कुमर मतेओ हिवमयो, कौमुदी करि जाणे चिमर्त्तव
स० लोक सहु पिण इम कहै नारी विण हे जाणो नर मन्द ११
स० ढाल कही प चौदमी तिण माहे हो पहिलो अधिकार
स० मनगमतो पूरो थयो ते सौ भाख्यो हे सुणतां सुखकार १२
म० निजमति विस्तरता थकी में कीधा हे प प्रथम अभ्यास
स विनयचन्द्र कहै हालिसु आगे पणि हे द्वितीय प्रकाश १३

इति श्री विनयचन्द्र विरचिते सरस ढाल लचिते सबाहुल्य शौर्य्य धैर्य्य गांभीर्य्यादि शुभ गजा मंत्रे श्री मन्महाराज उत्तम कुमार चरित्रे पर जनपद संचरण भाग्य परीक्षा करण चित्राकूटचलित मिलन भृगुकच्छपुर गमन यान यात्रा रोहण पलाव निर्देश्न भूमिगृह प्रवेशन मदालसा पाणि पीडनो नाम द्वितीयाममा अधिकारः ॥ १ ॥

माहरा बाल्हा ताहरी न सगु कार, तु हीयड़ा नुं हार;
तु यौवन सिणगार, तुं भोगी भरतार; मा०
स्त्री तणे वसि ते पड्या, निश दिवस कवन करेइ,
कुमरइ वचन मानी कियउ अविहड़ नेह धरेह २ मा०
हिव रतन पृथिवी आदि दे, जे च्यार प्रगट प्रधान
पांचमो गगन तणी परै सुन्दर नव नव वान ३ मा०
ते पांच रतन महात्मा, छेई चढै मीत साथि
सु करो रहिने ओळगै चळिता पकड्यो हाथ ४ मा
वण त्रिण एक मत थई आव्या कूपक तीर
तिहां समुद्रदत्त ना आवसी कस्या काढै नीर ५ मा०
नीसरया रज्जु तणे बले, दीनें वथा तिण काज
मन हीयौ कुमरी मां सहू निरखि निरखि सुकमाल; ६मा०
कुमर नें पूछै किहां अइ परणी मयण प वाल
अपछर किंवा किन्नरी अथवा रंभ रसाल; ७ मा
चिंता करीनें तुम तणी अम्हे रह्या इण हिज ठाम
नयणे निहाळी तुम भणी हरख्या आतम राम, ८ मा
विरतंत सहु कुमरे कह्यौ जिम थयो पुर थी भांजि
मापुरुष कूड़ करै नहीं मेह न मांगै छांजि, ९ मा
प्रवहण तिहां थी पूरिया करतां बस्पन्त विनोद
ओळग्यो कुमरे मन हरयो उपजावी आमोद १० मा
पाम्यो वसि पूरो थयौ ओघता किस्यो पंथ
वहिनु आनन्द को नहीं काढे कोई ग्रन्थ; ११ मा

मिठड़ा राजिंद मिल्ल रहो इक मानो मोरी वात मो०
महिर करो मो ऊपरै जिम न हुवै उतपात मो० २ मि०
रत्न करंडक माहरा तुम पासे छै जेह मो०
पांच रतन ते मांहि छै, गुण सांभलि गुण गेह मो० ३ मि०
भूषेवाभिख्यित भलो पहलो रत्न उदार मो०
तेहनो निरखो पारिखो जिम न हुवै अकरार मो० ४ मि०
थाल कचोला वाटला वासण वरती थग ; मो०
मग गोधूमादि दिये, प्रथवी रतन सुरंग ५ मि०
नीर रतन भर्जे घरे, जल वरसे ततकाल मो
तेहनो बिवर्णा काम छै, कटिमी दुग्म नो साल मो ६ मि
अगनि रतन थी सिद्धि हुवै ते सुणि दीनदयालु मो०
नवली नवली रसवती चावल न वलि दाल मो० ७ मि०
मुरली नें छाड़ू मला पारुवा सहार मबाद मो०
खाजा ताजा इत्यदी हरख क्षुधित विरवाद मो ८ मि०
वात ममोरण चालवे सुरभि सीतल में मंद मो०
गगन वस्त्र आस वदीये तजै तिमिरमा फंद मो ९ मि०
पांच रतन ए हेर मैं करि प्रीतम उपगार मा०
हुं करिस तो ताहरा भवि लहमी ज्यपहार मा० १० मि
उपगारी सिर सेहरो तु जग मांहि कदाय मा०
केम कठिन थायै हदौ कहियो करि महाराय मो० ११ मि०
वपन सुनी नारी तणा कुमार विचारै एम मा०
ए गुणवती भामनी बोलै सहु मे प्रेम मो० १२ मि

कुमर परीक्षा जोइवा आयो तिहां वन देव
रूप कीयो वानर तणो वड पूरवली टेव ४

ढाल (४)

मोहिदीया वारे मले बनीई पाद की रे एहनी

बोलइ ते आगलि वानर कूदतो रे,
आवो मन मा मानीता मीत रे
आगति स्वागति करिस्युं आहरी रे
रजनी माहरे घरि करो व्यतीत रे १ बो०
आंबा रायण नालेरी तणो रे
सघल बण्यौ छे एहज मंडरे
तेण थानक आवो बेसिवरे,
पिण मुझ मे आवो मत छंडिर २ बो०
रूंख तणे थुडि घोड़ा बांधि मे रे,
कुमर चढ्यौ वानर नै साथ रे
साख ऊपरि बैठा आइने रे
नाह मरी तिहां आई बाथ रे ३ बो०
जल निरमल ल्यावै नदीयां तणो र
पान तणा संपुट करी सार रे
सरस रसाफल आणि नै रे
ते करी कुमर तणी मनुहार रे ४ बो०
राजकुमर पूछे वानर भणी रे
कोउक अणदीठी कहि बात र

इम कहतां हवे ते जागीयो रे
वानर सूतो तेहने अंक रे
मन छेवा ने कपट निद्रा करी रे,
नांखें स्वासोश्वास निसंक रे ११ मो०
तिसहीज मृगपति कुमर भणी कहै रे
लाईस हमवर ताहरो आज रे
नहिं तर फटकी दे वानरो रे
तिण भरि मकरि सूनी आज रे १२ मो०
कहतां वे हाथे करि नांखीयो रे
वानर खंडि गयो आकाश रे
सीह अरूपी लागो मारगे रे,
रहीयो मन मां कुमर विमास रे १३ मो०
मानी पहली वात महाजसा रे,
उत्तम चतुर वात सुणी निरबंध रे
इम अनुमान प्रमाणे जाणिवे रे,
सो हुवो पहिला संबंध रे १४ मो०
च्यार श्लोक तणी अनुपामिनी रे
आगलि कहिस्यो वात सुरंग रे
स्वाभाविक फल आमय जाणिनें रे,
मै न कही श्रोता नै संगि रे १५ मो०
बीजे अधिकारइ पूरी कही रे,
चौथी ढाल सरल सीकार रे

सग मां विनयचन्द्र यश ते कहे र,
जे न करे परद्रोह किमार रे १६ चो०

॥ दोहा ॥

फेरी ने कुमरी कहे प्राणपीयारा नाह
पछतावे पडस्यो पछे दिल ऊळसी दाह १
बात कुमर माने नहीं साचो जाणे साह
सजन मन माहे रमणि कुड कपट हुवे काइ २
सेठ अछे धर्मातमा बहु राखे छे प्रेम
कहि नारी वरसि अगणि चंद्र किरण थी केम ३
देखवा निजर चुकायवा सेठ दिखलावे खेल
वर गिरवर जल कोतिमव चल जल रतनी रेल ,४
हुइ हीया मो चाकसी करतो सवळी हल
पग सु ठलि समुद्र मां नांख्यो कुमर उयेल ५

ढाल (५)

चाल :—बिछले भार घणो छे राजि

कुमर पडंता इण परि भाखे मिश्र वचन शुभ भावे
गुण ऊपर अवगुण लेईने पापी दाहि ल्यावे १
पापी सु कीधा तें पह काज कुमाणस वाली;
पडत समान मच्छ एक मोटा मुख पसारि नै बैठो
तत्खिण तेह कुमर ने गिळीयो बळि जळ ऊडे पइठो २ पा०

प्रवहमान जलछित पेखि बसि पार जलधि नो पायो
पुण्यादिक अनुभाव कुमर मो अवसर निमित्त कहायो ३ पा०
तिहाँ मच्छ ने अभिलाप सवरै, धीवर सायर फूले
वसु इग बंधन थयौ मावडी अठ प्राणक जिण शूले ४ पा
माया जाल सहु नै गरिमौ ते सहु काई जाणै,
अंतःकरण तणै मीनादिक, द्रव्य जाल अहिनाणै ५ पा
तिण इक मो ते पकड़ि विमासयो तीखण कठिन कुहाडै
पाटस आवरणादिक तादरा फड़ वेहनै न गमाडै ६ पा
वेहना उदर थकी नीकलियौ रूपकुमर सवाई
रंच मात्र भिन्न भाव न लागौ ए ओपो अधिकाई ७ पा०
सगला धीवर अचरज पाम्या पसु थयौ तमामो
कुमर कहै रे मूढ़ गमारा इण वाते स्यौ हांसो ८ पा०
सदा आपदा पड़े पुरुष मा तम ने साचौ भाखु ।
पण पावे हुँ नवि मेरापा तो कर केहनो राखु ६ पा०
धीरवंत कुमर नै निरखी धीवर पाइ लागा
स्वामी पणै थाप्यौ सहु मिलनै जस ना वाजत्र वागा १० पा०
रहै कुमार तिहाँ सुख सेती फड साधन ए राखै,
भेद दृष्ट भिन्न पणै आतम. देह कदापि नविभाखै ११ पा०
मिथ्यादृष्टि तणो उत्थापक, स्पष्ट गुणे सुविकासी
थकि विरक्त मोहादिक मावै एक मुक्ति अभ्यासी; १२ पा०
ढाल थई चोथे अधिकारे, दुरत पांचमी पूरी
जिनयचन्द्र आगलि ते कुमरी विधु काका मै मूरी ११ पा०

ते भद्रक परिणाम थी जी सुविशेषे मन छाय,
ऊपरले आडंबरे जी, राषि रह्यो मुरझाय; ७ न०
प्रीतम म्हारा समरलो जी, कांइक कीजे संक;
फुल्या दीसे फूटरा जी आफु आडे अंक, ८ न
मास गयौ जीवतव्यनो जी, पिण सी पूगी आस
तें कल्पद्रुम जाणि नै जी सेव्यो निगुण पलास, ६ न
काम न आवे पहनें जी पछि न करे निज सूल
सुख काढो करि नै रह्यो जी जिम केसूना फूल १० न०
यतः—घन्ना होइ सुलक्षणा कुसली होइ सलज्ज
म्हारा होइ सीयला बहु फल फले सकज्ज ११ न०
हा हा हिवडुं किम रहुं जी ताहरउ विण खिण मात्र
विरह व्यथा मी माहरे हीयड़े पूरी यात्र १२ न०
मीठे अधिकाई करे जी हास खड़ी बहुलाय
विनयचन्द्र इम उपदिसे जी गोरी नावे राज १३ न०

॥ दूहा ॥

वारंवार मदालसा की सिसासी नीकि
किम आधारे जीविये छेदी मांहरी पीक १
इसड़ा वलव किहां थकी कामस रहे सोभाग
सिर कवि आवे माहरे अगुठानी आगि २
पंखिण पैसो पीयड़े विस शोकातुर थाय;
तिम कुमरी नै पिउ विना खिण इक खिण न सुहाय ३

ढाल (७)

काग्लीयो करतार मयो सी परिहिजुं रे एहनी

करम तणी गति को नवि लखे सके रे, सहु जाणे छे एम
पिण सयणां रे बिरह हीयड़ा र, फाटे हा रन सर जेम १ क०
कुमरी बिचारे रहिने जीवती र, स्यु करिस्यु निश दीस
मरण नयी का दृसो पापीया रे फिर मुंहा जगदीस २ क०
सांभलि सजनी मित्र ने पाछले र करिस्यु संपापात
यारिधि पिण जाणेस्ये प्रीतड़ी र जगि रहसी अतियात ३ क०
इम सुणि ते आकुल थई र इण बिध लपे रोइ
कांइ न करौ धीरा चाइला र यह अधामुख जाइ ४ क०
कमल विसामी क्यु विरस्या नहीं र इण ता पर सकोपि
हीयड़ा आगलि ह प्रीयुड़ा तणौ रे मांहयौ मयला मोष ५ क०
वलि वनवासी पसुवा हिरणला रे जावा मन धरि नेह
विरह वियोगइ नयणां सीचियां रे तिण कारण कहुं एह ६ क०
इम कहती महुने रायरावियारे पति भावे पपद्रश
दावणहार पदारथ नवि मिले रे मकरि मकरि अंदेश ७ क०
चाल्यमण्य मन मा नवि आणिये र इम मादम मदि गिरिट
जैन तणौ आगम मे चारिये र निज मरसी क्षण दिट्ट ८ क०
जीवंता मिलसी तुम्ह माहलौ र पगी मा परि जाण
जिम इक दंत सरोवर मां रहे र महिमा महित प्रमाण ९ क०
एक दिवस मद मे कूर्म गयौ र जिहां पद्मा सवास
अमजायतो माहि कर्म्मयौ यंग्य आयौ दास १० क०

नेह तणी बांधी तिहां हंसली रे, मसिवा लागी जाम।
नयण कहै तेहनै पासे थकरि, ए तु मत करि काम ११ क०
तेह तणे वसते तिण रत्न मैं रे आयो पुरुष ज एक
तिण सेवाळ सहु दूरे कियां रे, हंसण नी रही टेक १२ क०
एक घड़ी मां ते सब तौने वळि विहुं थया रे सचेत
तु निश्चय जाणे तेहनी परे रे पिण एम भरि तु हेत १३ क०
देखो इण पापी कीधी किसा रे कीजो न करे कोइ
कुमरी कहै पिग माहरा रूप नै रे, पहा अनरथ होइ १४ क०
बीजे अधिकारइ ए सातमी रे, ढाळ कियो प्रतिमास
जिनचंद्र कहै दुखीयां माणसां रे, घटिका जाय षमास १५क०

॥ दूहा ॥

इम विलपंती देखि ने आवे सेठ निलज्ज
मुखचन कहै संतोष नै, पहवी करै अरज्ज। १
मित्र हतो ते माहरे उत्तमकुमर सुजाण;
हिव तेहनै दीठां बिना, छूटे छे मुझ प्राण; २
ते सरिखा वा पामीयै पुण्य तणे संयोग;
विरह सह्यो जाइ नहीं जिम घट व्यापै रोग ३
ते चिन्तामणि सारिखो आय चढ्यो थो हाथ
पिण जाणो को किम रहै दालिद्री घर आथ ४
मन में किण आण्यो हतो इण परि थासी अंत;
दही रात तणा सिरजत ते पणि आये संत ५

ए यौवन ना दिन च्यार छटको छै इण संसार,
काळीवर नि भळीवार; ११ ह०
मिलतां सुं नयण मिलावै, प्रस्तावै विरह बुझावै,
देहनें दुःख दावै आवै, १२ ह०
बहु बात कहीजे केही सुझ मति तुझ चित्त छुवेही
तुं किम थाइ निसनेही; १३ ह०
दूहा —कामातुर न करै किस्युं न करै सु न अज्ञान
कीजे इण वातइ किसौ, विनयचंद्र विज्ञान १
कामातुर नी सुणि वाणी कुमरी मन माहि कहाणी
पहली किम वात कहाणी १४
ढाल आठमी एम बणाई बीजै अधिकार सुणाई
किण विनयचन्द्र चित नाई १५

॥ दूहा ॥

कुमरी मन मां चिंतवै किम रहसी मुझ लाज
ए पापी लागू थयौ करिवो कोय इलाज १
सील रयण नैं कारणें वनवछेरक पास
जिम तिम करी उपचार क्यं ते विघटै व्यापात २
ठीक मील इक रागवों मन करि निज अनुकूल,
मूर्ख वचन पण मानिनें पछ नें मुग ए, मूल ३

ढाल (६)

चाल श्रीर वखाणी राणी चेलणा जी एहनी

वीनती सेठ जी सांभळो जी, सरस पीयूष समान
तुम्ह थकी चित लागो रह्यो जी छोह चमक उपमान १
ताहरे माहरे प्रीतड़ी जी आज थी थई रे प्रमाण
पिण दस दिवस मुझ कंठ नी जी, कांइक राखीये काण, २
निजर नो नेह जिण सुं हुवे जी, वीछड्यां दुख न समाय
तेह संप्रति किम वीसरे जी नेहनो जीवन प्राय ३
किण इक नगर में जाय ने जी सारा घर राखि ने राय
मनगमणी रमणी हुस्युं जी, सेवस्युं ताहरा पाय ४
तेह कारण हुवे मन तणा जी बात मानै नहिं साच
पिण तुमे सगुण सापुरुष छो जी मानज्यो अवचळ वाच ५
इम सुणी सेठ मनि हरखीयो जी परस्त्रीयो स्त्री तणो भाव
माहलो एम जाणे नहीं जी इहां न कोलाहल भाव ६
हिवे रे मनोरथ-मालिका जी पूरसी बालिका एह
सेठ गयो निज थानके जी चित मां चीतवी तेह ७
तिण समै ते वृद्धा कहै जी राणीयो तें मलो सीख
तेह थकी भय मद्रु प्रामवे जी पामिये शिवपुर सीख ८
वात अनुकूल लेई करी जी प्रवहण चीयो रे चलाइ,
मन मनै पंथ ते संचरै जी द्वीप मनमुग्ग नवि जाय ६
पवन रतन नें पूछिने जी अधिक भरी मनमान
वेसकूले मद्रु आविया जी मोटपद्री अभिमान १०

मेदनीपति तिहां जाणिमे जी, व्यसनवारक नरवम
परम जिनधरम नै आदरै जी, अवर जानै सहु भर्म, ११
सात खेत्रे वित्त वावरै जी, छावरै मोस नै मम,
शीतल चन्द्रमा सारिखौ जी निज प्रजा ऊपरि नर्म १२
ध्यान जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवे जे षट कर्म,
ईति उपद्रव दहवटै जी, जेम छाया घन घर्म, १३
ढाल नवमी रमी हीयड़े जी अवस पीजै अभिकार;
न्याय राजा करसो मला जी विनयचन्द्र इकतार, १४

॥ दूहा ॥

दरबारे आवे हिवे सेठ स्त्री छे साथ
पंचअंगी आगलि करी प्रणम्यो अवनीनाथ १
माद महुत पणो दियो राजाय तिणवार
सुण माता पूछी कहै वयण एक सुविचार २
सांभलि सेठ मद्रति सुभ कुण मारी छै एह,
सर्वाभरण विभूषिता सुमगाकार सुदेह ३
सेठ कहै ए म‍ सघरी जिहां छइ चन्द्रदीप
पति सायर मां पड़ि मूआ ए छै दुखी अदीप ४
ए माहरी मदगी हुम्ये अनुमति गो महाराज
कहीये म हुवे अन्यथा राज समर्थ काज ; ५

ढाल (१०)

चाल —मेरे मन्ना

तिण वेळा कुमरी कहै रे हां वयण विचारी बोलि, सील किसी कहुं
मूठो र्युं पहवो महलै रे हां, मूरख निठुर निटोल १ सी०
अगड़ बगड़ मुख भाखतो रे हां, किम न हुवै उपसांत सी०
न्याय करै जो राजवी रे हां, तौ तोई मुख दांत २ सी०
सेठ कहै इम कां कहै रे हां, भीलग जाणि मच म सी०
किहां मारग ना ओळखा रे हां, र्युं मुख बोले वच , ३ सी०
करि सखा वळती कहै रे हां पर मन अधिक उमंग ; सी०
महाराज इण पापीयै रे हां, कीधव मुझ पर मंग ४ सीं०
पति जलधि माहे नांखियौ रे हां परि मन अधिक उमंग सी०
सील रयण खंडण भणी रे हां, मांड्यो घणो रे तरंग , ५ सी०
पिण हुं सीलवती सती रे हां केम विटाळुं देह सी०
जिम जिम करी ए मोळवी र हां, राख्यो शील अमग ६ सी०
तिण तुम सरिखा राजवी रे हां, न करै सुधा न्याय सी०
तो मन्दिरगिर डिगमिगै रे हां धरणि पाताळे जाय , ७ सी०
पावक आगै दरसणै र हां ए पर स्त्री नो चोर सी०
ओ सीरावण यो नहीं रे हां र्युं करिस्यै जगि जोर , ८ सी०
सत्य वचन राजा सुणी रे हां चर्यो घणो फिर कोप सी०
पोत सहित धन संग्रही रे हां मनि राख्यो अवरोप ६ सी०
जे भाखित भवतव्यता रे हां न चले नाम उपाय सी०
जेहवो बाँधे रुगड़ा रे हां तेहवा होज फल थाय १० सी०

ते धन लेई सेठ नो रे हां, भूप भर्यो भंडार सी०
तस्कर माँहि ते ठव्यो रे हां जिहां छै कारागार ; ११ सी०
कुमरी नइ हित पुत्रिका रे हां, कहि बोलावे राय , सी०
रहि तुं माहरा गेह मां रे हां चितनी चित गमाय १२ सी०
माहरे पुत्री त्रिलोचना रे हां जीवन प्राण छै तेह सी०
तिण पासें रहि मानही रे हां दिन दिन वधतइ नेह १३ सी०
पुत्री बीजी माहरे रे हां, तुं हिव थई निरधार ; सी०
मिष्ट अन्न पानादिके रे हां, करि कायानी सार सी० १४
तीन दुखी मैं दान दे रे हां अवर कराविस तेह ,
— — — — — — — सी० १५
सील प्रसादे पामिये रे हां विनयचन्द्र नव निधि ; सी०
म बीजा अधिकारनी रे हां दशमी ढाल प्रसिद्ध सी० १६

॥ दूहा ॥

बहिनी थई त्रिलोचना करे परस्पर वात
सिद्ध थयो कारज सहु, कुमरी मो विण थान ; १
सखियां सुं भेले रमे करे गीत में गान
प्रवर पंच परमेष्टिनो धरे निरन्तर ध्यान ; २
पंच रतन परभाव थी ये दुखीयां ने दान ;
सद्गुरु वाणी सांभले करे पवित्र निज कान ३

ढाल (११)

मारू नै विराजे इणा मारू लोवड़ी चहनी

सीलवती नैं हो पद्दिम जोगता धरम पणे दृढ धाय,
वलि विरावे हो नेह वियोगिनी धरम करइ मन लाय; १ सी०
अभिग्रह लीधा हो कुमरी मदालसा, प्रीतम न मिलइ ताम
सुपनो हो धरती निरतो धूंप सु अपनी रहुं प्रिय नाम; २ सी०
अतिपर्णु राता हो चीर न पहिरिवा, न करू कायें स्नान;
वलि न विहार हो फूलनी सेजड़ी, न छई केह मान ३ सी०
आंखरडीयें न आंजुं काजल प्रियु विना नवि करयौ सिणगार
तिलक न धारू हो मस्तक ऊपरे करि कंकण परिहार, ४ सी०
विलेपन अंगी हा तजिया मयणा वलि तजिवा तंबोल;
स्वादिम खाइ हो तिम हिव पनि वली दूध दही न घोल ५
मादक गुल ने हा खांडनी लापसी, सरव मिठाइ तेम
हास्य वचन ना हो कारण नवि धरु पिय रहे चिर जेम ६ सी
माल न राखु हा फूल फल नवि भर्खु न खाऊं भीमण काज,
सचीय संघाते हा हुं हिव नवि रमुं रागनुं माहरी लाज ७ सी०
गोखड़ै न बेसुं हा वडने ऊपरा चित्रिन मुं नहीं प्यार;
वात न करिवि हा किम पुरुष सु मरम कथा अपहार ८ सी०
जो कथा कहवी हा ता वइरागनी इत्यादिक ज नेम;
कुमरीया लाधा हा त मदू सोमली मम मों धरियो प्रेम ९
कुमरी मदा छै हा पनि मैं ऊपरे पिय तहने ग्याबाम;
ज मन लाडे हो विन कारण करो धम धन करिये मास; १०सी

काळ सरूपी हो पड कुमारमी, कीजे हिव अधिकार,
सार्वकता मी हो जे उपमा बदे विनयचन्द्र गुणधार, ११ सी०

॥ दूहा ॥

सहु चीतर इण अवसरे, कुमरोत्तम ले संग
मोटपणी आव्या मिळी, हृत्य हेतु उछरंग १
मंडावे राजा सिहां, मरवर्मा आवास
निज कुमरी न कारणे अनुपम एक आवास २
धु ति निवेसनी जोवतो, कीजो जाण कैलास
ते महल मिखरे पर्खी आवे तेहने पास, ३
कारीगर कारिज करे, पणि गृह मांह हाणि
लिण मिण मां चूके तिके, अंभ परंपर जाणि ; ४
वास्तुक शास्त्र तणे बळे, बाले कुमर सुजाण
ए गृह मी चातुमता, कुम्म करसी परमाणि ५

ढाल—१२ कवाली

तें चित चोरया माहरा रसीया, तूं छै पुरुष उदार।
मोरो मन रीझ रह्यौ ;
हां रे कुमर हैरी दीदार, मो० घर मा केही न्याइ छै र
ग्म करै सूत्रधार मा० १
कुमर सीखावै मट्टु मणी रे, र० मन सूं तजि अहंकार ; मो०
गोइ हसी जे गेह मंमार रे र० न रही तेह लिगार मो २
अपरिज सहु मै रूपना रे र० मनि चीतइ सूतार मा
विश्वकरमनि आपमा है र० एदिज सह र कुमार ; मो० ३

भगति युगति करि अति घणुं रे, र० कुमर भणी हरखेण ; मो०
दीठा विण विलखा थया रे, र० पूरव हेज वसेण मो० ४
— — — — — — — ; मो०
— — — ; मो० ५

कोई अथाहड़ो माहरो रे, र० रतन थयो छो जेह मो०
ते पिण राख सक्या नहीं रे, र० धिग अमचारो एह, मो० ६

इत्यादिक वचने करी रे, र० निंदे कर्म स्वकीय, मो०
ते पहुंता निज थानके रे र० पिण नवि पायी प्रीय ; मो० ७

तिण पासे रहता थका रे र कुन्नर भरि निज हाथ मो०
कुमर करायौ राय नो रे, र० गृह कारीगर साथ मो० ८

संपूरण जाइमे थयो रे, र० कुमरी तणो रे निवास मो०
राजा निरखण आवियौरे, मन मां धरी विलास, मो० ९
निरखी अति इच्छक थयो रे, र० हीयडको रहीयो हीस मो०
कारीगर नें रंग सुं रे र० करइ सपख बगसीस मो० १०
तिण मांहिज कुमर निहालीया रे र अभिनव बाण अनंग मो०
बैठा इंचे आसणे रे, र० ओपे रवि जिम अंग मो० ११
जिम बालक मृगरायनो र र० वैसे गिरवर शृंग मो०
ए दृष्टान्ते जाणियै रे र कुमर भणी चित चंग मो० १२
बीजे अधिकारे थई रे र० बारमी ढाल अनूप मो०
जिनयचन्द्र कहै एहवुं रे र० मन मां रंज्या भूप ; मो० १३

॥ दूहा ॥

आदर मान दीई करी, कुमर भणी ते राय
इवडा माहि देखसी तु हिव आवे दाय १
सत्य वचन मुझ आगलै, तू कुण छै ते भाखि
एक मनौ मुझ जाणि नै, अंतर मत को राख २
हु तो छुं परदेसीयौ, स्वामि वयण अवधार
जाति म जाणु रायजी रहुं तुम नगर मझार ३
पूरी सी जाणुं नहीं, नाम तणी मम सार
पेट भराई हुं करु कारीगर ने द्वार ४
निज मंदिर मां नृप गयौ, मन धरि एम विचार
दीसे छै निश्चय सही ए कोई राजकुमार ५

ढाल (१३)

चाल :—बस हो विहाड़ा मोनै छोडि रे जोरावर हाडा, एहनी
आव्यौ मास बसंत रे रसीयां रो राजा।

सुण ए साजा, तड होइ ताजा

लेहने रुठा रे मौज महीजीये रे।
अधिक पणे ओपंत रे र मदन तणौ रे मित्र कहीजीये रे १
तास थयो प्रारम्भ रे र थंभ बिसारे तरुवर पाड़ने रे
दुखियां ने दुरलंभ रे र० विरही छोका रे दीपई साकने रे २
वाजे सीतल वाय रे र लहरी आवै रे दुरंम तणी घणी रे।
कहतां न बणे काय रे र० सबली रे शोभा वन माहि बणी रे, ३

मउखा जिहां सहकार रे र० ऊपरि बैठी कुहके कोयली रे
महिला मानी हार रे र० पहवी चतुराई मिलवा दोहिली रे, ४
जिहां किम कमल अपार रे र० चांपा मरुवो रे दमणो माळती रे
विउलसिरी सुखकार रे र० जाई जूई रे दुखवा पाल्ती रे ५
भमर करै गु जार रे र० निशदिन राचै तेहनी वास थी रे
रस आस्वादे सार रे र० संग न छोड़े कहीये पास थी रे ६
रूड़ी रीति कहिवाय रे र० रंग थकी परिपूरण छकी रे,
सहु फळी वनराय रे र० एक न फूली निगुणी केतकी रे, ७
पहवो जे मधु मास रे र० आणी नें राजा रमवा नीसर्यो रे
वनमां आवे उल्लास रे र० नयणे देखा र जसु हीयड़ो ठर्यो रे ८
सघन सुशीतल छायाय रे र० सरिता वहे रे वन पासे छती रे
तिहां खेले ते राय रे र० राणी रमई रंगह रागवती रे ६
ते वन अति श्रीकार रे र० दुरत मिटै रे मन नी सोचना रे
सखीये न परिवार रे र० रावली रमै रे कुमरी त्रिलोचना रे १०
नगरी केरा लोक रे र० फाग गावै रे राग सुहामणे रे।
मेळी सगळा थोक रे र० मन नी रे इच्छा पूरे हित घणे रे ११
वाजे चंग मृदंग रे र० वाजै रे वीणा झीणा तार नी रे
वाजे वळी उपंग रे र० वार नइ विणा हार नी रे १२
करे गुलाल अबीर रे र० नीर छांटे रे मांहो मां सहु रे ;
भीजे नवला चीर रे र० इम वणावे नरनारी बहु रे १३
तेरमी ढाल प्रधान रे र० पहवे रे दीसे अधिकार रे भई रे
जिनचन्द्र विद्राम रे र० एम कहै रे मन मां ऊमही रे १४

॥ दूहा ॥

विहां क्रीड़ा करतां थकां, कुमरी नै तिण वार
डंक दीयो मागे सकल करइ ज हाहाकार
तिण वन थी उपाडि नै, आणी निज आवास
नयण बिहुं मचला थया व्यापो विषनौ पास २
तेड्या सगला गारुडी, मंत्र तंत्र मा जाण;
माड़ौ पे पावे सलिल पणि मिलसे ज्यु प्राण, ३
राजा फेरावे पडह नगर माँहि इण रीति,
मुझ कुमरी साजी करै, यू. तेहनै मुझ प्रीति ४
राज्य अरध मुझ कन्यका, तिण माँहे नहिं भूल
इम साँभलि उत्तमकुमर, पडह छब्यौ पर चूलि ५

ढाल (१४)

आसउ गरवे रमीयै रङ्गा राम तु रे, एहनी
कुमर आवै राय मारगै रे कांइ सार्थे नर नारी माठ रे;
वाल्हो नै रे आये कुमरी देखिवा रे ॥ वा ॥
य परदेशी जाण छे रे कांइ जोइना स्खो स्खो थाट रे १ वा०
सगले लोके कुमर नै रे कांइ, आण्यौ नृपति पास रे
कुमर कहै नृप आगलै रे कांइ इण वरि यचन विकास रे २ वा०
राज्य अरधज ताहरी कन्यका रे कांइ, मुझ देज्यो महाराय रे;
हुं कुमरी जीवाडिसु रे कांइ करस्यु दाय उपाय रे ३ वा०

पाणी मंत्री नइ छांटियउ रे काइ, कुमरी थईय समाधि रे
ऊठै रे आळस मोड़ि नै रे काइ, दूर गई सहु व्याधि रे, ३ चा०

कुमर प्रति नृप ओळख्यौ रे, काइ ए तो तेहिज कुमार रे
जनम दयौ पुत्री भणी रे, कीया इण उपगार रे ४ चा०

बोल कह्यो ते पालिवा रे, काइ भूपति करै विचार रे
पुत्री माहरी त्रिलोचना रे, काइ ए परनै निरधार रे, ६ चा०

राज्य प्रमुख सहु सूंपिनै रे, काइ हिव रहीयै निश्चिंत रे
इम जाणी तेड़ावी नै रे, काइ जोसीयड़ो गुणवंत रे, ७ चा०

आसी नै राजा कहै रे, काइ परणै कुमरी मुझ रे;
दिवस लगन कहि रूवड़ो रे, काइ हुं सतापिस तुझ रे ८ चा०

जावइ जोसी टीपणो रे काइ दिवस लगन करि ठीक रे,
जंपै राजा आगळै रे काइ अमुक दिवस सुध्धीक रे; ६ चा०

अति उच्छव राजा करै रे काइ मंगळ हेतु तिवार रे
परणावै निज कन्यका रे, काइ मन मां हरख अपार रे १० चा०

कर मुकावण अवसरे रे काइ अरधो दीधो राज रे
वलि गृह निज पुत्री तणो रे काइ दीधा सुरवा काज रे ११ चा०

तिण गृह मां सुख भोगवै रे काइ निशदिन स्त्री भरतार रे
श्री परमेसर ध्यान थी रे काइ कुमर सदा जयकार रे, १२ चा०

ढाल चवदमी ए कही रे, काइ पूरण थयौ अधिकार रे
मनसुर मैं परभाव सु रे काइ पद इच्छा पनि पार रे १३ चा०

अनुसख नै अधिकार थी रे, काइ सचा ने अनुकूल रे
विनयचंद्र कहै मैं कीयो रे, काइ एह संबंध समूल रे, १४ चा०

इतिश्री विनयचंद्र विरचिते सरस हास्य कथिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य गांभीर्य्यादि गुणग्रामग्रंथे। श्री मन्महाराजकुमार उत्तम चरित्रे सुर-परीक्षित सत्व-प्रकटित महत्त्व। रत्न प्रभाव प्रोद्भूत भूरिजल प्रकटन तत्पानत' सकल लोक तृप्ति विवरण। दुर्वेवासमुद्रान्तर्मुंडन मत्स्य समुद्रान्तः पतन तन्निक्षण मोटपल्ली वेलाकूल प्रापण। धीवर मत्स्य मध्य विदारणतस्ततो निस्सरण। तत्र स्व विद्या वशः क्यादि विस्तरण दुष्टाहिदृष्ट कष्ट ग्रसित राजपुत्री सज्जीकरणो जीवत चरणो रमणतमाङ्गीकरण तत्पाणिग्रहणादि विविध चरित्र सूत्रणो नाम तृतीया प्रस्तोऽधिकार' ॥ २ ॥

तृतीय अधिकार

॥ दूहा ॥

वर्तमान तीरथ धणी महावीर भगवंत
नमस्कार तेहने करूं, उच्छव धरे अनंत, १
हिवइ तीजे अधिकार में, नेह धइ छे वात
नरनारी मन भाय नै सांभळज्यो सुविख्यात २
जपै एम महात्मा स्वामी नै उच्छाहि
मिळ्यो नाम्यौ तो सही बूडौ सायर मांहि ३
विन भाख्ये हिव दोहिलो किम रहिसे मुझ प्राण
संतावे मुझ मे मदा घट मां पांचे बाण ४
दीपक विण मंदिर किसो जौबन विण सिणगार
नेह विना सी प्रीति जिम तिम कंता विण नार ५
नीरस आहारे किया तप आंबिल मन भाय
साहमी नें संतोषिया पड़िलाभ्या मुनिराय ६
नवा कराव्या देहरा श्री जिनवर ना चंग
प्रतिमा सोवन रत्न नी सकल भरावी अंग, ७
वलि त्रिकाल पूजा करी भावन भावी शुद्ध
उन्नति कीधी अति घणी परम कीयो अविरुद्ध ८
इणपरि करतां नवि मिल्यो जो साहरो भरतार
तो पंच रत्न है वहिन मै लेस्युं संयम भार ९

ढाल (१)

एक बावल दूजा हो नदीयां नीर चल्या ; पदनी

इम वचनइ हो वंपइ कामनी,

माहरी ए वाणी हो सांभलि स्वामिनी , १

परदेशी कोई हो वल्यो त्रिलोचना सुणा,

तेहना वस बोल्यइ हो, नर सहु इक मना; २

गुण मणिनो दरीयो हो भरियो देखि सु

जिण देखे जीतो हो सुरिज तेज सुं ३

सही सेती वाहरत हो मीतम होज खुसी,

विण साजन ये माहरो हो मुझ मन अलसी। ४

जो अनुमति आपइ हो तो तेहनी खबर करू

मुख मटको देखी हो हीयडे हरख धरूँ , ५

तब कुमरी भाखे हो वा स्यावची

आलस छांडी नै हो या मन मी रुची ; ६

तेहनै घरि जाइ हो दासी नेह सुँ

पणि सहु नवि देखै हो मिलयो जेह सु , ७

कहै कुमरी नै हो वाहरो भाग्य पख्यो

मन नो मानीता हो वालम आवी मिल्यो ; ८

मुझ नै देखाड़ो हो प्रीतम तुम तणो

वैराण मन माहरे हो अलजउ अति घणो ९

ते कुमरि वयंपइ हा सांभलि महल में

मुझ प्राण पियारो हो सूतो महल में ; १

ते जोवा चाली हो उमही तिसे
पल्यंक परि सूतो हो कुमर दीठो तिसे ११
देखी नै तन नव हो कीधो पारिखो
रूपइ पणि तिसे हो उत्तम सारिखो १२
फिर पाछी आवी हो कुमरी नै कहै,
तुझ पति मै सारिखो ते तो गहगहै १३
इम सुणि नै कुमरी हो गाढी हरख धरयो
तिण पक तसु रंगइ हो मिळिवा मन करयो १४
वळि चित्त मां विचारे हो ए मै सु किघो,
पर पुरुष न आण्यो हो तेमां मन दीघो १५
माहरो मन पापी हो कहुँ अवगुण किसा
मन पाछो वाळ्यो हो एम कहै मदालसा १६
चतुराई तेहनी हो जे अहिळो भेद कहै
इम पहिले ढाळइ हो विनयचंद्र कवि कहै १७

॥ दूहा ॥

कुमर कहै निज रमणि नै कवन हतो ते नारि
आवी नै पाछी वळी ए स्युँ थयो प्रकार; १
तुझ नै खबर पड़ी नहीं, नहि तो पणी वार
सगळी वातां पूछि मै सही करत निरधार २
अवसर चूकां माणसां अति पछतावो होइ
अवसर चूकै सुंदरि जगमां जसधर कोइ ३

ढाल (२)

नायक किसनपुरी पहनी

प्राणसनेही सुणि मोरी बात, कौतुककारी छै अवदात
मीठी बात करी इण परि भाखै नृप कुंयरी
हे सुन्दरि मुझ नै समझाइ सुणतां हीयड़ो उल्लसित थाय १ मी०
मुझ थी अधिकी रूप विवेक, परदेसण आई छइ एक-
वा न करी मामी मैं वास जिम लिम जीव रहै तिण पास २ मी०
नाह वियोगे दुखणी तेह कुरि कुरि कीधो छै देह,
रहै एकान्ते लेइ आवास परम ध्यान मन मांहि वास ३ मी०
दीन हीननइ आपै दान द्रव्य घणो देई सनमान मी०
करुणा आणी करै उपगार एहवी काइ नहीं संसार मी० ४
एहनो धन नो दीसै नहीं थ्याई भी कोहर छै सही मी०
तेहनै पासे छै काइ सिद्धि, खरचतां खूटै नइ रिद्धि मी० ५
एह अपूरव छै विरतंत मुझ मननी सो सांभलि कंत मी०
तास सखी प कुब्जा नारि, मुझ देखी गई पछ विचारि मी० ६
सांभलि एहवा वचन कुमार रागातुर हुवो तिणवार मी
एहवी छै गुणवंती जेह मदालसा दूसर नहीं तेह मी ७
अपछरा नारी सुंदराकार, एहवी घणी छै घर घर नारमी०
परस्त्री ऊपरि धरीयो पाप धिग मुझ मैं निरखइ इम आप ; मी ८
किहां थी आय मिलै मुझ नारि मधुवरत ले गयो गिरनार मी०
खोटो माद करै स्यु थाय तन मन थी सगलो दुख जाय मी ९

तिण अवसरि मन धरि उछरंग, श्री उत्तमाभिध सगुणनरिंद,मी०
मन्याने जिन पूजा हेव कुसुमचंदन लेइ सुगति संकेत ; मी० १०
निज मंदिर पासे प्रासाद आयौ मन धरतौ आल्हाद , मी०
जातो किण ही न दीठो तेह, फिर पाछौ नायौ वलि गेह मी०११
त्रिलोचना कुमरी तिणवार, दुख संपूरित हृदय मझार मी०
दुखणी दुख भरि करै विलाप प्रीय विरहागनि तनसंताप १२मी०
निज पति तणी करेवा सार, दासी नै मेली तिण वार मी०
पिण नवि पायो परम दयाल नयणे नीर झरै तिण वार; मी०१३
उच्चा छाती वारवार, ऊंचाइ स्वर ते करइ पुकार मी०
मन मैं धारै अधिको सोग, हीयड़ो फाटइ नाह वियोग मी०१४
हिव तिणहीज पुरमांह प्रधान सकल सुजस गुण तणौ निधान मी०
महेसदत्त नामै धनवंत सहु वणिक मांहे सीमंत मी० १५
छप्पन कोड़ि निधान मझार छप्पन कोड़ि वखारि धार मी०
छपन कोड़ि नौ करै व्यापार, इसो सोवन कोड़ि विचार ; मी०१६
परवी जेहमा परमो रिद्धि पुण्य-संयोगे दिन दिन वृद्धि मी०
सुरिजनी परि मालमाहाल विनयचन्द्र कही चौथी ढाल मी०१७

॥ दूहा ॥

वाहण जेहनै पांचसै वलीय पांच सइ हाट
धर गोकुल पिण पांच सै तिणरा सकट सुघाट १
गज तुरंग नर पालखी पांच सयां प्रत्येक,
कोठा जेहनै पांच से वली वणिज सुविवेक २

पापोत्तर वाजित्र पणि सुभट थाट सधीक
पंच पंचसय आणिवे ए सगला तहकीक ३
पांच लाख सेवक पुरी, पहुंची लखमी वास
यौवन वय वोली सहु किण संतति नहिं तास ४

ढाल (२)

फेर सब लाया राजाजी रै माळिये की

इणपरि चिंता करतां सेठने विन केतलाइक वीता ताम हो
मांहरी सुणिज्यो चित देइ चंगी वातड़ी जी
वातड़ीमां मोज अधिक इण ठाम हो मां
वाटड़ी जोवंता थई कन्यका जी,
लावण्यगुण रूप तणौ जाणे धाम हो मां०१
सहसकला तसु नाम सुहामणो जी
चोसट्ठि कलानी ते छै जाण हो मां०
अनुक्रमि अर यौवन थई सुन्दरी जी,
युवती नो मे छंडावै माण हो मां० २
चिंतातुर थयौ तात निहाळि मै जी
केहने ए दीजै कन्या सार हो मां०
ए सरिखौ रूपै गुण विद्या आगळौ जी
पुण्ये लहीये पहवो वर सार हो मां ३
घर घर मां वर जोवै सेठ सुता भणी जी
फिर फिर ने पुर पुर जोवै सुविशेष हो मां०
पणि कन्या सरिखा वर न मिल्यौ जोवतां जी
आरति मन मांहे थई अशेष हो मां ४

को एक निमित्त नै पूछ्यो तेहिनै जी
विनय करी देइ बहुमान हो मां०
माहरी पुत्री में कुण वर परणस्यै जी
तेह कहै सांभलि वचन प्रधान हो मां० ५
राजा नइ दरबार मांहे जे बइसि मै जी
त्रिलोचना भर्त्ता री कहिस्यै सुद्धि हो; मां०
कहस्यै वृतान्त महालसा कुमरी नौ जी,
मूल थी मांडी नै निमल बुद्धि हो ; मां० ६
ताहरी पुत्री ना ते वर आणजे जी,
महीना मै अंतरि मिलस्यै तेह हो मां०
समस्त राजा मा थास्यै राजवी जी
तेहनौ प्रताप अपार अछेह हो मां० ७
सगली सामग्री हिव वीवाहनी जी,
हसुवे हसुवे करे सेठ सुजाण हो ; मां०
इहां मन संदेह म आणिजे जी
साची मानै मांहरी तुं वाणि हो , मां० ८
लगन दीधा निरदोष निहालिनै जी
वचन अंगीकरि महरदत्त हो ; मां०
हरषित मन में थइ अति घणु जी
पुत्री नै परणायवा उत्सुक चित्त हो मां० ९
मंडप करावा माटा सोहवा जी
सज्जन तेडावे कागल मेल्हि हो मां०

तोरण बंधाव्या मंदिर बारणै जी,
चित्राम कीधो घर मोहणवेलि हो, मां १०
धवल गीत गावै नारि सुहामणा जी
श्रवण सांभलतां सहु ने सुहाय हो, मां
कनक थंभ मेली कावै वेदिका जी
मेलि मेलया सकल स्वाय हो, मां० ११
वर मणी राजा मला मेठा मला जी
अम्बर उज्जवल सुन्दर पटकूल हो मां०
सोवन आभरण करावै नव नवा जी
रतन जड़ित भारी मूल हो; मां १२
आदीसा गजराज तुरी तिण संमधा जी
धानादिक हाथ मेलावे देय हो मां
सरल मति धारी दोझी हाल मां जी
इण परि विनयचन्द्र कहेव हो मां १३

॥ दूहा ॥

भार्यां कौतुक कारणो पुरमां बाई तिण बार
घर तिण सेठ धीवाह मो रच्यो सकल विस्तार; १
एह बचन राजा सुणी चिंते इम निज चित्त
धन माहेश्वरध गृहपति अहनी अविरल भति; २
देख्यै धन आभाव ने, कन्या परणावेह
प्रम सेख्यै वयरागिमो मन धरि परम सनेह; ३

सुद जमाई नी थई तो तेहने देई राज
हुं पिण संजम आदरु, सारु उत्तम काज, ४
महेश्वरदत्त सुं राजवी, पहवो करीय विचार,
पडह नगर मा फेरव्या अलूपापणा अपार; ५

ढाल (४)

सुगणलो की बोरी आंगुली, एहनी

राजा पुत्री त्रिलोचना विरहाकुल थई माह वियोग,
पहवो राय मपन कहावे छे सही
तेहनो पति क्यांही गयो तिण कुमरी राखै बहु सोग १
मदालसा परदेसणी मे पुत्री करि मानी तेह । ए०
बहु सम्बन्ध तेहनो करे मांही नै पुर थी मर नेह ।२। ए०
राज्य समापु ते भणी बलि आपु महेश्वरदत्त सेठ । ए०
सहस्रकला निज धीकरी, सुरकन्या जिम जेहने देठ । ३ ए०
एक मास मे अंतरे, सुक पडहा छबीयो तिणवार । ए०
लोक बहु सुणज्यो तुमे सुक पाखी भाणी हितकार । ४ ए०
सुक ने ले आवा दिये महाराज केरी सभा मझार । ए०
क्षितिपति मा जामात भी हुं करिसु मगज्ञा दी विरतंत । ५ ए०
मदालसा भो पति विदा, संभलावीस नृप नें विरतन्त । ए०
राज्य सहीत राजा तणो कन्या परणसु गुणवन्त । ६ ए०
कौतुक धरि ते आदमी लेइ आव्या नृप परपद मांहि । ए०
राय पाठव्यो सूवनो नर माया बोरया त मांहि । ७ ए०

परीमल संघाती हुवो, त्रिलोचना तुम्ह[1] पुत्री गेह। प०
मदालसा पणि तेहीयै, जिम भाखुं आख्यानक एह। ८ प०
राय वचन तेहनौ सुणी, हरषित थई कीधो तिम हीज प०
ज्ञान विना तिरजंच तु किम जाणसि जीवक नो बीज। ९ प०
तीन काल नी वारता, जो भावै मन अचरिज होइ। प
सावधान थई सांभलो चित वातो म करज्यो कोइ। प० १०
रामति जोवा सहु मिल्या, पुर वासी जन मन धरि प्रेम।प
मदालसा नी वातड़ी, कहै सूवटो जिम कही छै तेम। प० ११
वाराणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नाम। प०
तेहनो पुत्र पराक्रमी कुसुमाकर जाणे रूपे काम। प० १२
अचरिज नाना देश मा, जोएवा नीकलिया तेह। प
भाग्य परीक्षा कारणे साहस धरि निज देह अछेह। प० १४
कितले के दिवसे गयो भरुअछपुर नृप सुत कुशलेण। प
चौथी ढाल सुहामणी, इम भाखी कवि विनयचन्द्रेण। प० १५

॥ दूहा ॥

गुणचंद्रीप देखण भणी पोते चाल्यो कुमार
आव्यो कितलेके दिने भर दरीयाव मझार। १
अलकान्तिक पर्वत तिहां ऊ चो घणो महान
तिण माहि कूपक अछै पाणी सुधा समान, २
भ्रमरकेतु राक्षसपति तिणे करायो तेह
जल भरवै मालसपरी गयौ तिहां गुण गेह। ३

ढाल (५)

पच रा मारुणी रे लो एहनी

पर उपगारी कोइ न दीठो मह्वो मीठो
गुणधारी सुविचारी रे लो म्हारा रामेसरजी रे लो
वारी मां जल देवे पडुतो मन गह गहतो,
दीठी तिहां किम नारी रे लो। १
महालसा नामे सुकमाली रूप रसाली
तिहां परणी ते बाली रे लो मां
वाली मा बाई बाहरि आया नारि सुहाया
बे गुण मणि नी आली रे लो २ मां
समुद्रदत्त मै बाहण चढीया त्यां थी तडीया,
पंच रतन परभावे रे लो; मां०
जल इ धण अन्नादिक कोई लोक सकोई,
मन मां शाता पावे र लो। ३ मां०
अवसर देखी पापी सेठे मुंडो गूंठे
रामा बन नो रसीयो रे लो मां०
दरीया माहे नांखी दीयो माठो कीयो,
पडतो मच्छे ग्रसीयो रे लो मां० ४
मगर गलंतो कांठो आयो धीवर पायो
काढयो पेट बिदारी रे लो मां०
सुन्द पुत्रि घर देखि नीपजतो खायो चलतो,
परजाया शिवकारी रे लो। मां ५

सुख भोगवतां देव तणी परि किणीक अवसर,
श्री जिनपूजा करिवा रे छो, मा०
श्री जिनवर नै मंदिर आवै भावन भावै
भवसायर लहु तरवा रे छो मा० ६
फूल भरी चंगेरी नीकी बंस मुळी की,
मदनें सुद्रिव देखी रे छो मा
उपाड़ी ते हाथे साही लघु आदि माहि,
कर करड़यौ सुविशेषी रे छो मा० ७
तन थी नष्ट सकल बल पडीयौ सुर तहि अडीयौ
इवडी में कही पाता रे छो मा०
सत्य मत्यक्षा जो छै ताहरी आस्था माहरी
पूरो तुम्ह गाता रे छो मा० ८
पोतानो मिरचाई कहियौ तिम अस अडीयौ,
उत्तम ते जग मांहे रे छो मा०
विचद्दारी तुम्ह पुत्री स्यावो तुम्ह परणावो,
उच्छव सुं कर साहै रे छो मा० ९
क्यावलि करि सुम्ह नै दीजै डील म कीजै,
जग जस भारी लीजइ रे छो; मा०
चिरजंच को हुं माहुं राजा कहू दिवाजा
रमणी साथि रमीजै र छो मा० १०
पहवो करि सुखि मौन सरागे बैठो आगै
इवडै राय पयंपै रे छो मा०

पोपट अंबर हींय म राजा आगे भाखी,
वात्यइ मन कंपइ रे हो मां० ११
पंडित ते निज बोल्यो पाछे कुल उजवाले,
तुम सरिखा गुणवंता रे हो मां०
जो नवि आपे तो हुं जासु फेर न आसु,
मानु पहुंची कता रे हो मां० १२
स्वादवत फलनो आहारी रहुं वनचारी
इण परि काल गमासु रे हो। मां०
ढाल पांचमी ए थई पूरी वात अधूरी,
विनयचन्द्र इम भासु रे हो मां० १३

॥ दूहा ॥

मैं जाण्यो मर हुवे अधम माया कपट निधान
स्वाथ करी आवे मटी तुम सरिखा राजान १
उवेखा नै सज्ज थयो नप भाख्यो ततकाल;
देइसि राज सु मीर घरि, मर पंडित बाचाल २
उत्तमकुमर किहां अछे आगलि कहि वृतांत
जीवे छे किंवा मूओ मांझि मांझि मन भ्रांत; ३
वली वचन कहै सूवटो जो तिल मां तेल न होय
तो पेखु मैं किहां थकी राय विचारी जोय ४
एतली वात कह्यां थकां जो तुं आपै राज
आगलि कह्यां हुवै किसु कंठ शोप स्यौ काज ५

तोरण बंधाव्या

धवल गीत गावै

कन्या वस मेलई

वर मणी ताखा

सोवन आभरण

भातीका गजराज

सरल मति भा

वार्ता को
वर विण
पद वचन
मन माहे
वेस्यै भ
प्रय केस्यै

राज हुईसि जो तुम्ह भणी, तो आगै कहिसु वात;
कहि कहि देहस तुम्ह भणी कन्या राज संघात, ६

ढाल (६)

इसी तो चाक्यो हाड़ा राज कुमकुमो माहरा वालमा, ए देशी
तो वारू राजा रे अहि वसीयो पाड़ी मांहरा साहिबा
अनंगसेना इण नाम रे, वेश्या बिगताली।
चंचल चरिताली मोहन मतवाली गयवर गति गाली
तिण वार निहाली, मांहरो कहियो मानो,
कहीजो मानो रे राज तुमने हूं कहिसुं मंछित फल लहिसुं।
पुरा राज्य मी वहिसुं
निज आपद दहिसुं सुख सेती रहिसुं गुण अवगुण सहिसु। मां।
किण एक कारण रे दैव संयोग थी। मां।
ते आवी तिण ठाइ रे मणि नीर झकोली
वसु काया ओली ॥ १ ॥ मां० ॥
ते तिण ऊपरि रे रीझयो अति घणो। मां।
वदनकमल निरखंत रे।
थयो परम सरागी मिलिवा मति जागी। मां०।
उठाड़ी ते आपणे मन्दिर लीयो। मां०।
चउमी भूमि ठवन्त रे सुख माहि सवाई,
दई कुमर वधाई ॥ २ ॥ मां ॥

करि ज्ञान विचारी, तूं छै उपगारी । मां० ।
मुणि महाराज रे पोषट भीनवै । मां० ।
वेस्या बयौं अभिलाप रे ए घर मुझ पासै
भोग अमोइ आसै ॥ मां० ॥ ७ ॥
इहां चीयो चासी रे किमही न आवसी । मां० ।
पछ्यो चित्त विचार रे ।
ते मुझ सुक कीयो मित्रावसि चीयो । मां० ।
सोवन केरे पिंजर मां ठव्यो । मां० ।
रंजु गुण गीत गाय रे श्लोक कथा कहीमैं
अवसाण लहीनैं ॥ ८ ॥ मां० ॥
परण्या मी ह्रोडी रे कोरो नर करी । मां० ।
बांध्यो मोहमइ पाक रे ।
विण सु सुख माणु उदयास्त न जाणु । मां०
दुवरक वांची रे बहि सुक सुक करै । मां ।
सुम गयो किवडो काल रे,
मन मांहि विचारइ तिरजंच भव भारइ ॥ ९ ॥ मां० ॥
परउपगारी रे सहुनो हुं हतो । मां० । निष्टाचार न चोर रे ।
केहलै सुल मति चीयो कोई विरुद्ध न कीयो । मां ।
हा हा बांध्यो रे मैं इणदीन भवै । मां० ।
कीयो पातक घोर रे,
न रह्यो हुं सीयो मैं सुकत न कीयो ॥ १० ॥ मां ।
राक्षसकन्या रे कुमरी मयालसा । मां । परणावी न वसु बाप रे ।

परणी में ल्याने छल्या करि काने । मां० ।
राक्षस केरी पुत्री रे मइ हरी ।
सायरमां तिण पाप रे, सागरदत्त भांत्यौ,
निजकृत कम पाम्यौ ॥ ११ ॥ मां० ॥
धिग धिग मुझने रे पोच मरा मणी । मां० ।
राक्षसना अणदीधा रे ।
पापी मुझ मरिगो नहीं कोई र परलो । मां० ।
एतो दुही रे ढाल सुहामणी । मां० ।
जिनवर्धद्रनी कीधरे, भवण मांमळमो
पातक थी टळस्या ॥ १२ ॥ मां० ॥

॥ दूहा ॥

तिम त्रिलोचना नै परे आवी वृद्धा नारि
में पूछ्यौ य पुण अहे मुझ मिया तिण वार १
सभी बनावी तेहनै मुझ मारी में जाणि
राग बुद्धि मन इक बरी हुं थया मूढ अजाण २
माटा पातक मन तणा मुझनै लागो तद।
मन्य टल्या तिण वार थी श्री जिनवर नै गद। ३

ढाल (७)

[illegible]
मर कीर्ही हा मर्यो निर्मय पार्माक
कूम कुसुम गदा गुरु एम मणे

घणी कह्यूं छे हो आगम मांहि
नरक वेदन फल संग्रही, सु० १
महा बलधारी हो रावण जेह,
विश्व जिणे निज वशि कीयौ, सु०
परस्त्रीनी हो वांछा कीध
कुलक्षय मारग पामीयौ सु० २
कोई द्रुपद सुतानो हो रूप,
कीचक मन लाई रह्यौ, सु०
भीम चांप्यौ हो कुंभी हेठि,
अपजस दुर्गति दुख लह्यौ, सु० ३
इम समरे हो निज कृत पाप
आतम निंदा आपस्यौ सु०
दुखइ थोड़ो हो पिण अपराध
उत्तम माने करि घणौ सु ४
दिवस अनंगसेना हो राग
मास रह्यौ घरि तेहने सु०
आज गई नइ हो किण इक काज
मावी न सूझै तेहने, सु० ५
पुण्ययोगे हो मुझ महाराज
मूंक्यौ रूपाड़ो पींजरो सु०
नीसरीयौ हो अवसर पामि
धीरज धरि मन आकरौ सु० ६

त्रिकने हो थाक चपर सर्व्वत्र
मोमठि पटहनी घोषणा सु०
मइ भगन निवार्यो हो तेह
वचन सुणी रलियामणा सु० ७
हुं आव्यौ हो ताहरे पास
वात कही में माहरी सु०
हिव दीजे हो मुझ सुखवास
कपट मन मांहे धरी ; सु० ८
हुं तो ते छुं उत्तमकुमार,
पगथी छोडा दोरडो सु०
दिव्य रूपी थयो ततकाल,
जाणे कंदर्प आगे गडो ; सु० ६
हर्षित हुवा हो सगला लोक
सहस्रकला कन्या परी ; सु०
तिहां मिलीयौ मदालसा नारि,
धृहा पुत्र हरष धरी सु० १०
महाप्पद्य पुर मां हो करि मै भूरि,
त्रिलोचना कुमरी मिली सु०
नारी हा तीन थयो संयोग,
थयौ मन नी आसा फली , सु० ११
पुनवाम हा पुण्य न होइ
तुरत मिले सहु आपदा ; सु०
थई प्रवले हो मातमी ढाल
जिनपपन्द्र कही संपदा सु १०

॥ दूहा ॥

प्रीति परस्पर आणि नै वेरवा थापी नारि ;
तिण पणि कीधी मालती इण गति ए मरतार ; १
हिव तेड़ी वनमालिका, करि नै बहुविध बंध
नलिका माहे व्याल नो पूछयो सहु संबंध २
बोलै मालणि बीहती दोष न को मुझ स्वामि ;
समुद्रदत्त मुझनै दीया परिघ पांचसै दाम ; ३
मोल कीयो जिण पन्नगो भूप जमाई मारि
तिण लोभे ए मैं धरयो नलिका सर्प विचार ४
राजा बिहुं नै मारिवा हुकम कीयो करि क्रोध ;
कुमरै राख्या जीवता देई अति प्रतिबोध ५
बिहु नो मन लखी लियो देश निकालो दीध
उत्तम कुमर भणी, सहु इम राजा कीध ६

ढाल (८)

लटको थारो रे लोकां रे, एहनी

भूप हुवो वैरागीयो रे, जीता विषय कषाय
लटको जेहना रे मनथी टरयो रे। आं
सेठ सहित संयम लीयो रे, सद्गुरु पासै आय ल १
लाभ रहित ते मुनिवरा रे, निमल निरहंकार ल
बाल वृद्ध गीतार्थ ना रे वैयावच करै सार ; ल० २

थोड़े काल मध्या पर्छु रे, परम ध्यान रस लीन स०
केवलज्ञान लही करी रे, पोहता मुगति अदीन। स० ३
तिण अवसर राक्षसपती रे, भ्रमरकेतु गुण ठाम स०
नैमितिक पूछ्यौ वली रे मुझ वैरी किम ठाम। स० ४
ते कहै ताहरी पुत्रिका रे, परणी गयौ जेह स०
पंच रतन ताहरा लीया रे मोटपणी छै तेह, स० ५
वाककूप पाताल मां रे, ते पैठो हसी केम; स०
पुत्री किम परणी हस्ये रे, नहिं संभोवीयै एम स ६
ज्ञान न थाय अन्यथा रे, नैमित्तक कह्यौ शुद्ध, स०
तेहनै बीती नवि सकौ रे, जो था तु अति क्रुद्ध, स० ७
पहिली शून्यद्वीप मां रे एकाकी हतो जाम स०
ता पण गंजी नवि सक्यौ रे, हिव युद्ध सौ स्यें काम स० ८
पंच रतन सुपसाउलै रे, तेह थयौ भूपाल, स०
मिलीयै पासे जाय नै रे, मी करीयइ तसु भाळि; स ९
वलि सगपण मोटो थयो रे, ते माहरौ जामात स०
इम चिंतवि आयौ तिहां रे, मुँकि सकल उत्पात स० १०
उत्तम नृप सेवी मिल्यौ रे, दुविधा टाली दूर स०
पुत्री मीही हीयडै रे, मिलमल आव्यौ नूर स ११
मस्तक धारी आगन्या रे, उत्तम नृप नी जेण स०
चाल्यो निज नगरी भणी रे, राक्षसपति हरपेण स० १२
ढाल भणी ए आठमी रे, सांभलतां सुख थाय स
जिनचन्द्र महाराय नौ रे, जस जग मांहि सुहाय स० १३

॥ दूहा ॥

विहां किण सकल सभा मिली नृप बैठो मन रंग,
छत्र बिराजै मस्तके, चामर ढले सुचंग; १
दूत विहां एक आवीयो वास वचन सुपवित्र
कर जोड़ी नृप आगलै, मेल्हो लेख विचित्र २
राजा खोली वांचियो, मन धरि हरख अपार;
तेमां ज्युं लिखीयो अछै ते सुणज्यो अधिकार; ३

ढाल (६)

चाल—राजा जो मिलै एहनी,

स्वस्ति श्री जिनदेव प्रधान नमीय बणारसी थी बहुमान
राजा वीनवै प्रेमातुर इम संवयवै
श्री मकरध्वज नृप गुणगेह, सपरिवार युं धरीय सनेह १
मोदपद्मी नामे वेलाकूल सकल भिवानी से छे मूल; रा०
उत्तमकुमर कुमार आरोग्य
निज अंगज स्नेहपूर्वक योग्य; २ रा०
आलिंगी निज हृदयसरोज
पणु पणु प्रेमे रोज; रा०
समाचिसति भूपति कल्याण
कुशल अत्र वरता सुविहाण; ३ रा०
सावा सुख तणा समाचार,
पुत्र तुम देज्यो निरधार रा०

कारण कहीयै एह विशेष
हीमइ परीक्ष्यो साची छेक, ४ रा०
तूं अम राज्य तणो आधार,
करिसे माता पितानी सार, रा०
तुम ने दुहवियो कांइ केण
पहुतो तूं परदेशे जेण, ५ रा०
जिण दिन थी नीसरियो पूत
खबर कराबी तुम बहुत रा०
पिण नवि लाधी ताहरी वात,
दुख पाम्या माणे बमूधात रा० ६
हे तो अमने कीया निरास
नाखंता दिन जाय नीसास रा०
सास तणीपरि आवे चीति
साक तणीपरि साले प्रीति रा ७
मायें छोरू न करै सार,
मावीत्रां नी किण ही वार; रा०
पिण मावीत्र तपे दिन-राति,
पांणी वक्र विरहो न समाय, रा ८
दिवस हुदेखा कष्टे जाय
रयणी तो किमही न विहाय रा०
जिम जळधरने समरै मोर,
तिम तुमने समरूं छूं चोर रा० ६

प्राणसनेही चतुर सुजाण,
तुम बिण जास्ये जाये प्राण, रा०
ढील म करिजे गुण-मणि-खाण,
वहिलो आवे मूकी माण। रा० १०
उपजावे सुख सघली सुख विभूति,
माचीजांने देह सपूत रा०
सायर नै जिम चन्द्र-प्रकाश,
हरख वधारे परम उल्लास रा० ११
सुपना ही मा ताहरो ध्यान
वाल्हो लागे प्रेम निधान रा०
जिण दिन देखिसि ताहरो मुख
तिण दिन थासी अगणित सुख रा० १२
वहिवा राज्य धुरामो भार
वृद्ध थया असमर्थ विचार रा०
हवे आवीयौ पोतानो राज
पाळो संभाळो गृह काज रा० १३
मर्ज लिखुं कहीयइ वार वार,
तुं छे चतुर सयल बुद्धि भार; रा०
जा तु अमारो मस्त कदाम
तो पाणी पीजे हवे आप रा० १४
लेख तणो पढ़वा समाचार,
वांचे वारंवार कुमार; रा

पहवा हितवछल मावीत,
हूँ दुखदायक थयौ अविनीत रा० १५
शीघ्र थई मीसाण बसाय,
सुत थ॒ मात पिता ने थाय, रा०
इम वच्छक थयो मिळण कुमार,
मात पिता ने हेणी वार रा० १६
सचिव भणी निज राज्य भळाय
चाल्यो चतुरंग सेन मिळाय, रा०
वाणारसी नगरी भणी माम,
चार प्रिया संयुक्त प्रकाम रा० १७
चलतां चलतां अखंड प्रयाण
आया चित्रोड़ समीपे जाण रा०
ए पूरी थई नवमी ढाळ
विनयचन्द्र कहै परम रसाळ रा० १८

॥ दूहा ॥

महासेन आवी मिल्यो, निज परिवार समाज
राज देई निज सुत भणी आप थयौ मुनिराज १
मेदपाट नै लाट वलि भोट अनै कर्णाट
पोते वसि करि चालीयौ ले निज सेना थाट २
गोपाचल गिरि आवीयौ उत्तम नृप जिण वार;
वीरसेन राजा भणी खबर पड़ी तिण वार; ३

छोई च्यार अक्षोहिणी, सेना तणो समूह
उत्तम नृप सामो चल्यो, मरा मकुडे मूंह। ४
उल्कापात हुवो वली थरके अहिपति ताम
मेरु डिगे सायर चळे, कच्छप थयो विराम ५
इत्यादिक अपशुकन थवी, गयो सनमुख तास
सीमा छेहैं उतरयो वीरसेन च्यास, ६
उत्तम पृथ्वीपति भणी सामहो मेल्यो दूत
को राणी आयौ हुवै, तो आवे रजपूत ७
इम सुणी कोपातुर थयौ उत्तम नाम नरिंद
वीरसेन ऊपरि अधिक, ऊठो जिम असुरिंद ८
संझा वीसे दल तणा, घणा घुरइ नीसाण
सूरा पूरा सहु चली हुवा आगेवाण ६

ढाल—(१०) हो संग्राम राम ने रावण मंडाणो पहुमी

मांड्यो माहि ते जसकर बे मिलिया सनद्ध बद्ध सोळीया
ठंकारव सागै नवि टळीया भड़ सहु कोई मिळीया रे। १ मा०
वाजा रण माहि विहां वाजै गरजारव करि गाजै
इबरि पिण आयण री लाजै वल रे सघन विराजै हो २ मा०
हाथी सहु पहिरी हलकारै हलकेला नवि हारे।
सुंडा दंड सबल विसतारे, मद उनमत्ता मारे हा ३ मा०
शुभति लइम री घोड़ा जाणे दळ मे ते दोड़ाणे
बापूकार्यां बल बहु टामक बरग्रज टाणे हा ४ मा०

ण मोक्यो सूरे रस रावे, घन भर्मी घण घावे,
न थी मंदिर समे मद मावे, विधि विधि आवे वावे हो ५
ड़ गड़ नाल विशाल गड़के धरणी तुरत धड़के,
न्त्र वाण नारसतो न चूके कल कल स्वर करि फूके हो, ६ मा०
केसी न पायक भरतां हाके, छल खेले छिलती छाके
ढाहि चढावै हाके हो, ७ मा०
द ल तणी परि पग आरोपै, अड़वा रिण मबि ओपै
प्रभु तणी फुरकारे थापे, कायर करतां न कोपै हो ८ मा०
चमकि झगावे बदन चपेटा लाता तणा लपेटा,
घरहर नै जिम मड़े पेटा जिम भरी रीस ल्यै भेटा हो ६ मा०
इड़क वाण छूटण रे कड़के, अरीयां सामहा अड़के
मड़ कायर भाजे तिहां भड़के, ग्रेह त्रसे जिम धड़के हो, १० मा०
वलि जिम मां मंदूक विछूटे, जिम आराबा छूटे;
तरवारां झाटकंतां सूटे, मुमटां रो सिर फूटे हो, ११ मा०
अरक छिपाया रज उड़ंती अंबर जिम ओपंती,
रुधिर खाल तिहां मांहि रहंती आकाश वहंती हो १२ मा०
असवारे असवार अटक्के, खल खल खुंभि खटक्के;
संमाहे समसेर सटक्के, तोड़े तुंड तटक्के हो १४ मा०
अंग तणे पोरस बमाड़े अरियण ने अवगाहे
डाला री ओटा दे डाहे, सवल सहस्र साहे। १५ मा०
रण खेती मूआ रथवाला मुवे मही मतवाला
मूँछे वल घाले मतवाला टलि म करे को टाला, १६ मा०

पासे सर आवंता पाछे मक्रकेते निम भाछे,
नयणे निपट निशोक निहाळे, भाव महामद भाळे १७ मा०

इतरे वेढ हुई उपरामती, कबिरो भाव बहंती
युद्ध वस रा विदो बीसे वंती वादळ घटा बईवी हो, १८ मा०

मज्म काळ रिण मेघ प्रगटें, इत उत थक उमडें
मळमळ विजळ खड़ग झमटें, बूढ़ा वाण अखाडूड हो १९ मा०

लूक वहै रुधिराळल ओळा गढ़ा रूप ते गोळा,
इन्द्र धनुष मम्मा भव ओळा, इयवर पवन हिलोळा हो २ मा०

इणपरि युद्ध तणी विधि वाणे, जे सुगवट में जाणे,
परतखि उरामी डाळ प्रमाणे विनयचन्द्र सुवखाणे हो २१ मा०

॥ दूहा ॥

संग्रामसिंह ने विदे जीतो उत्तम राय
वीरसेन ने जीवतो वांधि क्रियो तिणठाय ; १

फेराबी निज आणस्या उत्तम राजा वेगि
गाज्यो गढ़ वैरी तणो, मळा अगाई तेग २

वीरसेन मममां चीतवे माहरी न रही माम
हूं पिण जोरावर हुवो पछ बयो किम काम, ३

निज अपराम खमाइ ने पाय लागो ताम
राजा छोड़ि दीयो तुरत, फिर जगस्यो निज ठाम ; ४

ढाल (११)

ओलगड़ी

चित मां (२) विचारै राजा पहवो रे,
हो अपजस भाखै लोक,
तो हिवे (२) आपुं उत्तम राय नै रे,
राज्य प्रमुख सहु थोक १ चि०
केहना (२) गुमान रहै नहीं सासतो रे
गंजी नइ कुण जाय
परमवि (२) परमेसर पूज्यां विना रे,
जेत करो किम थाय २ चि०
राजनै (२) गजादिक सूंपीया रे,
उत्तम नृप नै ताम
निज मन (२) चाल्यो गृह बंधन थकी रे,
वीरसेन हित काम ३ चि०
इण समै (२) सुविहित मुनि चूड़ामणी रे,
हो आव्या युगन्धर सूरि
नगर नै (२) समीपै वन में समोसर्या रे
हो साधु सहित भरपूर ४ चि०
आवी नै (२) वन पालक दीघ बधामणी रे
गुरु आगमन प्रघोष;
वांदिवा (२) चाल्यो निज परवार सुं रे,
हो नृप तेहनै संतोष ५ चि०

वांदि नै (२) बैठो मुनिवा देसना रे,
सद्गुरु द्ये उपदेश,
धरम (२) करो रे भवियण भावसुं रे,
जेम छुटै कर्म कलेश ६ जि०
नर भव (२) छारिस्यो फिर दोहिलो रे,
करि भव भ्रमण अनेक
भवजल (२) निधि तरिवानै कारणै रे,
जैन धरम छै एक ७ जि०
तेहनो (२) सरणौ हो भवियण आदरो रे
समस तप धरि सार
इक भव (२) अथवा दोइ भव अंतरै रे,
वरिस्यौ शिवगति नार ८ जि०
धमकथा (२) सुणि संयम मह्यो रे,
भण्यो शास्त्र सिद्धांत सुजाण
पाळीने (२) चारित्र निरतिचार सुं रे,
नृप पहुंतो निरवाण ६ जि०
उत्तम (२) कुमर देरा वरी करि,
आवै मिथपुर मांहि।
आवतां (२) अमसी राय वधाविया रे,
थयो आणंद उच्छाह १० जि०
भूपति (२) सह्यो सामेलो प्रेम सुं रे,
सिणगार्या गजराज;
घरि (२) तोरण बांध्या अति भला रे
घुरे नगारा गाज ११ जि०

कोतिक (२) घोड़ा आगलि कर्या रे,
सबल मर्या सिर कुंभ,
इण परि (२) राय मिल्यो निज सुत भणी रे,
चित थी टलीयो दंभ, १२ चि०
एहवे (२) ढाल कही इग्यारमी रे,
कहीयो भूपति मान,
उत्तम (२) कीरति थंभ चढावीयो रे,
विनयचन्द्र बरदान, १३ चि०

॥ दूहा ॥

उत्तम नृप मिलीयो जई बाप भणी धरि नेह
मन विकस्यो तन उल्हस्यो, रमांचित थयो देह। १
मकरध्वज भूपाल पणि सुत ऊपरि करि माह,
अंगइ आलिंगन दीयो सगरी वधारी साह। २
सासू नै पाए पड़ी च्यार बहु मद छोड़ि
दीधी दीध आसीस इम अविचल बरतो जोड़ि ३
प्रमुवा देखी पुत्र नी राजा हुवै खुस्याल
पुण्य बिना किम पामीयै एह सुलक्षण माल ४
निज सुत समरथ जाणि नै पोते थाप्यो पाट
पंच लियो मुनिवर तणो जग मांहे जस थाट ५

ढाल (१२)

तंबोलनि की

च्यार राज्य अधिपति हुवो र उत्तम नृप गुण गेह
जेहनै सुन्दर कामिनी रे, वसु कंचन वरणी देह १

प्यारे त्रिया चित्त हरइ रे, अधिको अधिको नेह,
दिवस प्रति ते धरइ रे।
चित्त चोखो चिहुं नारि नो रे, गुणवंती कहवाय
प्रिय ऊपरि अति रागणी, ते कथन न लोपै काय २
सेवै रंभा सारिखी रे दासी गृह नै काम,
माता नी परै नेहसो पाळै टाळै दुख ठाम ३
सुख आपै निज पति भणी रे, सुकळीणी सिरताज
धरम ध्यान पिणसाचवै अवसर देखि तजि लाज ४ प्यारे०
जेहनै लखमी अति घणी रे, कहता नावै पार।
थापि धनद निज आविनै, भरीयो पूरण भंडार ५ प्या
चाळीस लख हयवर भला रे, गज पणि लख चाळीस
संख्या पणि जेहनै छै तिणसा ढीब बिसवा बीस ६ प्या०
प्यार कोड़ि पायक कह्या रे मामा गर पणि वास।
चाळीस कोड़ि वखाणिये दिन दिनमां अधिक प्रकाश ७ प्या०
धरम करै उच्छव धरै रे, पूजे जिनवर देव
पूजै पातिक नी पणु इण रीति राखै टेव ८ प्या
भला कराव्या देहरा रे, जिनवर तणा असेस।
पात्र करी जिण सुगति सु सघु तीरथ नी सुविशेष ६ प्या०
पोख्या पात्र सुपात्र ना रे, जोडयो सगळो संघ।
साधर्मिकवच्छल कर्या चाढ्यो धर्यो प्यारे अंग १ प्या०
पुस्तक लेख लिखाविया रे, जिन आगम सुविचार
दानशाळा मंडाविने दान देई करै उपगार ११ प्या०
संसारी सुख भोगवे रे प्यार स्त्रियां नै साथि
वार्ता जिन आव्यो नहीं रे, पतो वाणारसी तो माथ १२ प्या०

राज प्रजा सुख चैन मां रे, प्रवर्त्ते दिन राति
इम द्वादशमी ढाल मां कहै विनयचन्द्र अवदात ११ च्या०

॥ दूहा ॥

इण प्रस्तावे समोसर्या, केवलधार मुणिंद
चित मां अति उच्छक थई, वांदण चाल्यो नरिंद १
मुनिवर पासे आविने, वांदे बे कर जोड़
धर्म देशना मुनि दियै, मोह तणा दल मोड़ि २
जगवासी जन सांभलो, ए संसार असार।
जिहां तन धन यौवन निफल, जातां न लहै वार ३
पाम्यो जनम मनुष्य नो आरिज कुल सुनिहाल
रयण राशि कवड़ी सटै, कोई गमावो आलि ४
मत सुमतां अति दोहिलो राखै जिण मां चित्त
सद्दहणा वलि साचवो संयम धरि सुपवित्त ५
धरम च्यार प्रकार नो दान शील तप भाव
ते दुर्म्मति छोडीजो यो कृतान्त सिर पाव ६
जनम मरण दुख छोडि ने जेम लहो शिवराज
सांभलि एहवी देशना हरख्या लोक समाज ; ७
हिव राजा पूछे इसु स्वामी कहो विचार
मैं अलसी पामी घणी राज्य ऋद्धि बली वार ८
हुं वारिधि मांहे पड्यो मीनोदर रह्यो केम ;
गणिका घरि शुक किम थयो भाखो जिम छै तेम ९

ढाल (१३)

होलाई नामनी एहनी

सुणि भूप गुण रसीया पूरव अर्जित संबन्ध जो
जे ते पाम्यौ रे फल इण हीज भवे रे लो। सु०
मनि छूटे निज कृत कर्म बंध जो
वेषधारी मुनि इण परि चवे रे लो। १ सु०
भूमि हिमाळे पासि नजीक जो
सुवस तिहां रे गांम सुहामणो रे लो। सु
तिण मां रहै कौटंबिक गुण गेह जो,
धनवन्त मान अति रळीयामणो रे लो। २ सु०
तेहनै रमणी च्यार सरूप जो
कामनी हा चाले गाले गेह मां रे लो। सु०
किणही दिवसे थयो विरूप जो
कवड़ी लौ वित्त मिळै नहीं जेहमां रे लो। ३ सु०
मूल मरंतां कृश थयो भंग जो
बली करायें ते थयौ आकरो रे लो। सु०
वसु घर आव्या मुनि मन रंग जो
कौटंवी आप्यो घन दिन आज मो रे लो। ४ सु
ते दो च्यारे साधु सुजाण जो
चोरे लूंट्या रे मारग चालतां रे लो। सु०
टाढइ धूजइ तेहना प्राण जो
मंदिर आवी रे तास निहालतां रे लो। ५ सु
बहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो
अनुकंपा कीधी रे च्यारे अंगना रे लो। सु०

मई पूरी तेरमी ढाल जो,
माल्यो रे पूरब भव तिण कुसमती रे जो। सु०
पवो विनयचन्द्र कृपाल जो
नृप परसंसा मोहनी कृत हुती र जो। ११ सु०

॥ दूहा ॥

राम देई निज सुत भणी उत्तम नृप जिन भक्त
गुरु पासे संजम लीयो, च्यारे स्त्री संयुक्त, १
चारित पाले निरमलो तप करि सावे काम
पूरब पाप पखालतां, कर्म्मे निर्जरा थाय २
प्राते अणसण आदरी, पहुता वर सुर लोक;
च्यार पल्योपम आउखो तिहां छे बहु विलोक ३
तिहां थी चवि नै सीमसी महाविदेह मझार;
अविचल शिव सुख पामसी, नहीं जिहां दुख लिगार; ४

ढाल (१४)

गूजरी रागे

चत्र दान नै ऊपरै रे, उत्तम चरित्र कुमार;
सुगन सरव सही हो रे सुगन पाम्या श्रीकार; सु०
इम जाणी नै दान द्या रे मन धरि हरख अपार १ सु०
गुण गाया मुनिराय ना रे धन्य दिवस मुझ आज;
राम कीयो मन रंग सु रे, सीधा वंछित काज २ सु०
चाच्यन्द्र मुनिवर कीयो रे उत्तमकुमर चरित्र। सु०
त संवध निहालनै रे जोड्यो रास विचित्र; ३ सु०
आछो अधिको जे कह्या रे कवि चतुराई हार; सु०
मिच्छादुक्कड़ तसि पहुं रे ते सुणज्यो सहु कार; ४ सु०

वचन प्रमाणे जाणि ने रे, मन थी टाळी रेख सु०
ढाळ भली वेरी भली रे, कहियो चतुर विशेष ५ सु०
श्री खरतर गच्छ जगतमां रे, प्रतपै जाणि दिणंद सु०
सहु गच्छ मांहे सिर तिलौ रे, ग्रह गण मां जिम चंद, ६ सु०
गुण गिरुवौ तिहां गच्छपति रे, श्रीजिणचंद सुरिंद सु०
महिमा मोटी जेहनी रे, माने बड़ा नरिंद ; ७ सु०
ज्ञान पयोधि प्रतिबोधिया रे, अभिनव समिहर प्राय, सु०
श्रुत चन्द्र उपमावही रे समयसुन्दर कविराय ८ सु
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे सार अनेक विचार सु०
कवी कैरविका कमलनी रे उल्लासन दिनकार ६ सु
विद्या निधि वाचक भला रे, मेघविजय तसु सीस सु०
तस सतीर्थ्य वाचकवरू रे, हर्षकुशल सुजगीश, १ सु०
ताषु शिष्य अति शोभता रे, पाठक हर्षनिधान सु०
परम अध्यातम धारका रे, जो योगेन्द्र समान ११ सु०
तीन शिष्य तसु जाणिये रे पंडित चतुर सुजाण सु
साहित्यादिक ग्रंथ ना रे, निर्वाहक गुण खाण १२ सु०
प्रथम हर्षसागर सुधी रे ज्ञानतिलक गुणवंत सु०
पुण्यतिलक सुवखाणतां रे, हियड़ा हेज हरखंत ; १३ सु
तास चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम सु
प्रमुदित चित श्री चूंपसु रे, रास रच्यौ में एम ; १४ सु०
संवत सतरै बावनै रे, श्री पाटण पुर मांहि सु०
फागुण सुदि पांचम दिनै रे, गुरुवारे उच्छाहि १५ सु०

ढाल बयालीस अति भली रे, नव नव राग प्रधान सु०
अठताळीस नै आठसै रे, गाथा नौ छै मान, १६ सु०
एह चरित्र सुणतां सदा रे बाधे सुजियल माम सु०
सुख संपति बहु पामिये रे अनुक्रमि मन विश्राम १७ सु०
ढाल चववमी मन गमी रे, सहु रीझव्या ठाम ठाम सु०
ज्ञानतिलक गुरु सांनिधे रे, विनयचंद कहै आम १८ सु०

इति श्रीविनयचन्द्र कवि विरचिते सरस ढाल रचिते सत्वातुल्य शौर्य्य धैर्य्य गांभीर्य्यादि गुण गणाश्रये। श्री मन्महारास उत्तमकुमार चरित्रे जिन पूजा रचन। श्रेष्ठि दापित मालाकारणी पुष्प नलिकास्थ लघु सर्प दशन गणिका निर्मित विषापहरण। क्रीडा शुक करण। पटहोद्घोषण स्पर्शन सहस्र लोचना परिणयन नरवर्म्म दत्त राज्य प्रापण। अमरकेतु मिलन। महासेन दत्त राज्यांगीकरण। हठात् वीरसेन राज्य ग्रहण पिता दत्त राज्यादि राज्य चतुष्टय निर्वाहण समयामृतसूरि समागमन। पूर्व भव श्रवणात् अवाप्त चारित्र सुग्रहण। निर्वाण पद प्राप्ति समर्थना नाम चातुर्थ्य चस्य तुर्य्यांश्रयोधिकार ॥ ४ ॥

संवत् १८१ वर्षे मिती चैत सुदि ११ शुक्रे। महोपाध्याय श्री ५ पुण्यचन्द्रजी गणि तत्शिष्य पुण्यविलासजी गणि। तत्शिष्य वासी वाचक पुण्यशील गणि लिखिता चतुष्पदिका। वाकरोद ग्राम मध्ये ॥ श्री ॥

[श्री हीराचन्द्रसूरिजी के बनारस ज्ञानभंडार की प्रति पत्र ३१ पंक्ति प्रतिपत्र १७ अक्षर प्रति पंक्तिमें ५१ आदि व अन्त का १ १ पृष्ठ रिक्त]

श्री नेमिनाथ सोहला

राग—समाइली सोहलो

नेमिकुंवर वर वींद विराजे यादव पानी केसरीया ।
असीय सहस सेजवाला साथे मगल मुख गावे गारीया ॥ १ ॥
यदुनाथ चढे गज रथ तुरीयां । आंकणी ।
ऐरापति सम अंग सुभगा सोवन में साकति जरीयां ।
अंग प्रचड महाघल मेंगल गाव चढा सोहे गिरीयां ॥ २ ॥यदु ॥
गत तरंग चपल गति चचल खेल सरा करता सुरीयां ।
अरव अनोपम रूपा सोहे, हीस करे हयवर हरीयां ॥३॥यदु०॥
पवन वेग चालंता साथे चपला भारी ओवरीया ।
अमीय हजार सुखासन आगे जरकस में चाले जरीया ॥४॥यदु०॥
छप्पन कोड़ कुंवर मद माता, सारंग हाथ लेई सरीयां ।
बमा महज अड़तालीस बाजे फरहरता नेजा परीया ।
पायक कोडि पंचाणू आगे नोपति बाजे भूपरीयां ॥५॥ ॥यदु ॥
अपछर सरिसी रासुन रंभा गाति चढी जोवे गारीयां ।
अभिनव इन्द्र विराजे प्रभुजी सरिसी जाड़ी मल मिलीयां॥६॥यदु०॥
राजिमती तन देव विभूपण गयवर पंकज कर भूरीयां ।
तारण ल प्रभु फेरि सिधार जिनपर्चद्र मुगत मिलिया ॥७॥यदु०॥

ढालों में प्रयुक्त देसी सूची

थुइ=थय का रूप, पद
थुणिया=स्तुति की
थुण=स्तुति करता हूँ
थेट=ठेठ
थोभ=स्तम्भ

द

दइगो=जबरदस्त
दमिया=दमन किया
दवरक=डोरी
दसुट्ठण=दशोठन पुत्र जन्म के १० वें दिन का उत्सव
दहिस्सं=नष्ट करूँगा जलाऊँगा
दाऊण=दिखाकर
दाविस्सो=दिखाओगे
दाझे=दग्ध हो रहा है
दाढमझे=मुँह में पानी आवे
दाव=प्रवर
दिवाकर=प्रकाशित
दिदृक्षायें=देखने की इच्छा से
दिहाड़ा=दिवस
दिसा=दिशि तरफ
दीकरी=पुत्री
दीठ=देखा दृष्टि
दीसइ=दिखाई देता है
दीसउ=दीखता हो
दुक्कर=दुष्कर
दुत्तर=दुस्तर
दुक्खा=दुखदाई
दुट्ठ=दुष्ट
दूमो=हटने का आदेश निकालना ललकारना
दुहविओ=दुःखित किया
देणा=देने के लिए
देसण=देशना उपदेश
देसणा=उपदेश
देही=शरीर
देहरा=देवगृह मन्दिर
दोगंदक=इन्द्र के गुरु स्थानीय देव
दोर=डोरी रस्सी
दोरड़ी=डोरी
दोहिला=दुर्लभ

ध

धणीयाणी=स्वामिनी स्त्री
धमियउ=हत
धम्मीय=धर्मात्मा
धवलाई=मधुर
धसिया लागी=प्रविष्ट होने लगी
धीणौ=धेनु आदि दुधार पशु
धीरप=धैर्य
धींगो=जबरदस्त
धुधार=धुकारता है
धुरीण=धुरन्धर प्रधान
धोरी=प्रधान धारक अगुआ
धण=धनवान

पइहो=पटह
पडिवत्ति=प्रतिपत्ति
पडिलाभ्या=प्रतिलाभ्या साधुओं को दान दिया
पउर=प्रचुर
पणमालीस=पैंतालीस
पवि पिव=भी
पत्तयको=प्रतीति प्राप्त
पत्तियावे=विश्वास दिलावै
पतीजै=विश्वास करे
पंचीडा=पथिक
पम्नता=प्रकंपित कम्पित
पयमा=कहता है
पयया=पर्याय
परह=जैसी तरह भांति
परखिसह=परीक्षा करें
परखावे=रखाता है
परणी=विवाहिता
परगडठ=प्रगट
परिघल=प्रचुर बहुत
परिछ्या=जो परखी
परीवह=पन्था
परिछ=प्रछरत
पहनवा=पहनना
पलाश=मांसभोजी राक्षस
पहुंती=पहुंचा
पाउडीए=सीढ़ियें पगमिए
पाउधारज=पधारो
पाऊले=चरणों में
पाखइ=बिना
पाखली=मोर निकट
पाच=हीरा रत्न
पाज=पाजा सेतु
पाठ=पठान
पांतरे=अन्तर
पांति=पंक्ति, बालपांत
पादपोपगमन=एक विशेष प्रकार का अनशन
पाघरो=सीधा
पाने पड्या=पाले पड़े, बसके चढ़े
पामीयइ=प्राप्त करें
पामी करी=पाकर
पारेवो=कबूतर
पारिखो=परीक्षा
पालोवइ=पालन्
पासत्था=शिथिल आचारी
पाहण=पाषाण पत्थर
पिचरकी=पिचकारी
पीठ=पीढ़
पीपी=पान की
पीलवा=पीलना
पूठा=पीछा
पूरवली=पिछली
पूरज=पूछ

रज्जु=रस्सी
रम्म=सरम्य
रमिया=रमण किया
रयण=रत्न
रयणा=रचना
रलियामणा=सुन्दर
रलियावउ=सुन्दर
राखउ=रक्षा करो
राखणा=रखने के लिए
राची=रंजित होकर
राडू=मोटीमोर रंडू
रातो=रक्त, रंगा हुआ
रामति=खेल
रास=राशि समूह
रीझवइ=रिझाते हैं रंजन करते हैं
रीस=चिढ़ाहट
रीस=रोष
रू=रूई
रूंखड़ा=वृक्ष
रूठा=रुष्ट हुए
रूड़ा=अच्छा
रूडी=अच्छी
रुहिर=रुधिर रक्त
रेलि=प्रवाह
रेह=रेखा
— लिखा

ल

लगइ=पर्यन्त
लउकउ=पास
लंछन=चिह्न
ललना=लाल लालन
लच्छि=लक्ष्मी
लब्धि=लब्धि २८ प्रकार
तपस्या से प्राप्त आत्म-शक्ति
लपटाणा=लुब्ध
लजामण=लज्जित होना
लपाय=लिप्त
लवन=छेदन काटना
लबार=चोर
लळि लळि=नमन कर
लाग=अवसर
लाधे=जल पन करे
लाछि=लक्ष्मी
लाड=प्यार
लाडिली=प्रिय प्यारी
लाधी=मिली
लांबी=दीर्घ
लार=साथ पीछे
ल्यावइ=लाता है
लाग
ला
ला
ला

विषहर=विषधर साँप
विहरमान=विचरते हुए
विचरता=विचरते हुवे
विकुरवी=वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न कर के
विरूपो=विरूप विद्रूप
विरचइ=विरक्त होना
विरहण=विरहिनी
विहूणो=विहुत्थ
विहडे=विघटित होना
विह=प्रकार
वेगु=छिद्र
वेगलउ=दूर
वेढ=पुत्र
वेलू=बालूका
वेवाले=वेवक
वेसाला=छ
वोही=पीठी

स

सउमुह=सम्मुख
सउन=सज्जन
सगन=स्वय साथ सज्जन
सहत्थ=अपने हाथ से
सकज=काम का
संघयणो=हड्डिसार
सगला=सभी
संकडि=गंभीर
संकलिया=संकलित हुए
सगवट=रूपक
संघातइ=साथ मे
संघाते=साथ म
सद्दहै=श्रद्धा करता है
सधै=सधवे सम्यास हो
सभावइ=स्वभाव से
समवड=समान समकक्ष
समुद्देशा=अध्याय का एक नाम
समवाय=समूह
समय=सिद्धान्त
समास=प्रकरण
समकित=सम्यक्त्व
समावी=समान समाविष्ट होना
समियउ=शान्त हुआ
समूर्छिम=स्वतः उत्पन्न जन्तु
सयु=सदा
सरधित=कर्म मान्य
सरिसइ=सरीखा सिद्ध होगा
सरिखा=समान
सलहै=सराहना
सलोयण=देखना
सलहिस=सराहना
सलूणा=सलोने, सुन्दर
सवार=सवेरा
ससथउ=शिथिलाचारी
संसरण=संसार सांसारिक

ससिहर=चन्द्र
ससनूर=विशेष सुन्दर
सहगुरू=सद्गुरु
सहीयर=सखि
सहिनाणी=चिन्ह लक्षण
सहेजा=प्रीतिवाले
साकर=मिश्री
सांक=शंका
सामी=सगा
साचवै=रक्षा करता है
साधइ=सिद्ध करता है
सामलो=ध्यानपूर्वक सुनो
सम्भरिया=स्मरण किया
सामहो=स्वागत
साहमी=सधर्मी
साम्हौ=सामने
सामुही=सम्मुख
सायक=बाण
सायर=सागर
सास=श्वास
सारेवो=सुधारना
सारै=भरोसे
सालै=खटके
साव=सब बिलकुल
सासय=शाश्वत
सासता=शाश्वत
साहै=धारण करता

साही=पकड़कर
सिलोक=श्लोक
सिझाय=स्वाध्याय
सिझातर=शय्यातर (साधु जिसके
घर ठहरे हो वह व्यक्ति
सीझइ=सिद्ध हो
सीझसी=सिद्ध होगा
सुरवो=शयन करना
सुकुलीणो=कुलीन
सुकियारथ=सुकृतार्थ
सुजगीस=अच्छी
सुजान=सुज्ञानी
सुतार=सूत्रधार, मिस्त्री
सुंधा=सुगन्धित
सुसरूपे=सुस्वरूप
सूस=त्याग
सुहटा=सुमटी मे
सुहणा=सपना
सुअटो=शुक
सूकइ=सूखता है
सूंपीया=सौंपे
सुविहित=सुव्यवस्थित
सुहकर=शुभकर
सुहामणी=सुहावनी
सुपरे=अच्छी तरह
संपरकाल=चातुर्मास के अतिरिक्त
का समय

सेजड़ी=शय्या
सेजवाला=वाहन विशेष
सेजै=शय्या में
सेवड़ी=नींव
सेहरो=शेखर मुकुट
सोभी=सोभीले, सुन्दरी
सोडो=नर साथी नायक
(राजपूतों की एक जाति)
सोरंभ=सौरभ, सुगन्ध
सोवन=स्वर्ण
सोस=शोष
सोहग=सौभाग्य
सोहन=शोभन
सोहा=शोभा

ह

हलवे हलवे=धीरे-धीरे
हंसत=हंस
हाथ छुड़ावण=हथलेवा छुड़ाना
हाथ मेलावे=हस्त मेलापक
हाम=स्वीकृति हुंकारा
हिलोरण=आन्दोलित
हिंडोल्या=हिंडोला झूला
हित्पण=हितैषी
हिय=मन
हियडा=मन
हीण=हीन
हीयो=हृदय
हींसता=हंसते हुए
हीर=हीरा
हीयड़ा=हृदय
हीसत=हर्षित होता है
हुलस=उमंग
हुवड हलड=मा
हेत=प्रेम स्नेह
हेताळू=प्रेमी
हेठ=नीची
हेला=पुकार